मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

MEITREYI PUSHPA KE UPANYAS'CHAK' KA VISHLESHNATMAK ADHYAYAN

अनुसंधित्सु

सी. ललनुनमोई
C.LALNUNMAWII

DEPARTMENT OF HINDI
हिन्दी विभाग
MIZORAM UNIVERSITY
मिजोरम विश्वविद्यालय
AIZAWL-796004
आइजॉल-796004

2016

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

MAITREYI PUSHPA KE UPANYAS 'CHAK' KA VISHLESHNATMAK ADHYAYAN

शोध निर्देशक

डॉ.प्रीति राय

सहायक आचार्य

अनुसंधित्सु

सी.ललनुनमोई

हिन्दी विभाग

द्वारा

मिज़ोरम विश्वविद्यालय के हिन्दी विषय में मास्टर ऑफ फिलासफी उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रस्तुत।

मि□रम विश्वविद्यालय

आ□□ल

□लाई- 2016

घोषणा

मैं सी.ललनुनमोई एतदद्वारा घोषित करती हूँ कि □स शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए कार्यों का परिणाम है। □स शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे, और □हाँ तक मुझे ज्ञात है, किसी अन्य को उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय/ संस्थान में प्रस्तुत किया गया है।

□से मिज़ोरम विश्वविद्यालय के सम्मुख हिन्दी विषय में मास्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया □ता है।

अध्यक्ष निर्देशक अनुसंधित्सु

प्राक्कथन

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य का विधोंमुखी विकास हुआ है, ि□समें उपन्यास आधुनिक हिन्दी साहित्य की महत्तम उपलब्धि हैं। उपन्यास में उपन्यासकार अपनी विचारों को रखने में सफलता हासिल करता हैं। □सलिए उपन्यास को गद्य का महाकाव्य कहा □ाता है। एम.ए की पढ़ाई करते समय उपन्यास साहित्य में रुचि पैदा हुई ि□सके कारण एम.फिल शोध हेतु मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'चाक' को मैंने चुना। 'चाक' का परिवेश बुंदेलखण्ड है। मैत्रेयी पुष्पा के रचनाओं में कृषक □ीवन का स□ीव और यथार्थ चित्रण हुआ है, ि□सको पढ़कर गाँव की संस्कृति का दर्शन होता है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में ग्रामीण □ीवन महिलाओं की व्याथा पिछड़े वर्ग के सुख-दुख, नैतिकता, धर्म, पितृसत्ता के व्यवस्था एवं स्त्री विरोधी प्रावधानों की चर्चा की गई है। मैत्रेयी पुष्पा अपने लेखन प्रतिभा से हिन्दी साहित्य में एक अलग पहचान बनाई हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामा□िक, धार्मिक, रा□ीतिक एवं आर्थिक समस्याओं को बखूबी उभारा है, ि□समें विवाह एवं सामंती संस्कारों, पारिवारिक संबंधों, आर्थिक स्वालंबन, सामा□िक संबंधों का तथ्यपरक विवेचन किया है। विश्लेषणात्मक दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का शोध परक अध्ययन करने का विनम्र प्रयास किया गया है। 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में विभिन्न बिन्दुओं का परीक्षण करने के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को तीन अध्याय में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'मैत्रेयी पुष्पा का □ीवन परिचय एवं रचना संसार' है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपना अधिकांश बचपन गाँव में बिताया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अब तक ग्यारह उपन्यास, चार कहानी, एक नाटक के अलावा नारी विमर्शों पे तीन किताबें लिख चुकी हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के नाम □ प्रकार हैं- 'स्मृति दंश', 'बेतवा बहती रही', '□न्मम', 'चाक', 'झूला नट', 'अल्मा कबूतरी', 'अगनपाखी', 'वि□', 'कही ईसुरी फाक',

तथा ‘त्रिया हठ’। मैत्रेयी के व्यक्तित्व कृतित्व का ही परिणाम है कि आ□स्त्रियों में विशेष रूप से धर्म, नैतिकता, नियमों पर ही नयी रोशनी एवं न□रिए से सोचने और समझने की शुरुआत हो चुकी है।

द्वितीय अध्याय ‘चाक: अभिव्यक्ति पक्ष’ है। ‘चाक’ उपन्यास में शिक्षा, वैवाहिक संबंध, दहे□ प्रथा, स्त्री- पुरुष संबंध आदि समस्यायों को परखने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण □वन, बेरो□गारी, □ति व्यवस्था, वर्ग- संघर्ष, अंधविश्वास एवं त्यौहारों में आए बदलाव को मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में उतारा है। एक साहित्यकार का सबसे बड़ा दायित्व होता है, अपने युगांतकारी विषमताओं को यथार्थ रूप में उभारना। भ्रष्टाचार, □तिगत रा□ीति, सांप्रदायिकता, रीति- रिवा□एवं रूढ़ियों का खोखलापन समा□ में कितना उग्र रूप ले चुका है। □सका विशद विवेचन □स अध्याय का मुख्य ध्येय है।

तृतीय अध्याय ‘चाक: अभिव्यक्ति पक्ष’ है। साहित्य और भाषा का संबंध अटूट है। दोनों एक दूसरे के बगैर चल नहीं सकते। साहित्य की भाषा में अर्थ भरने के लिए तथा उसमें चमत्कार लाने के लिए मुहावरे लोकोक्तियाँ, प्रतीक आदि होते हैं। कथाकार अपने साहित्य की रोचकता बढ़ाने के लिए भाषा में नयी क्षमता का निर्माण करता है। उपन्यासकार की भाषा पर उसके परिवेश का प्रभाव दिखाई पड़ता है। उन्होंने अपने उपन्यास में बुंदेलखण्ड की आंचलिक शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्याय में तदविषयक पहलुओं का तथ्यपरक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध तैयार करना एक कठिन कार्य था। परन्तु लोगों की सहायक से कठिन से कठिन कार्य भी पूरा हो □ता है। □सी संदर्भ में सर्वप्रथम मैं अपनी शोध-निर्देशिका डॉ. प्रीति राय (सहायक आचार्य) हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आ□□ल की मैं अत्यंत आभारी हूँ। उन्होंने विद्वतापूर्ण सुझावों के द्वारा मेरा मार्ग प्रदर्शन किया। □सी क्रम में लघु शोध कार्य में सदा प्रोत्साहित करने वाले विभागीय गुरुवर श्री. आमिष वर्मा, प्रो. सुशील कुमार शर्मा, प्रो. सं□ कुमार (अध्यक्ष), डॉ. सुषमा कुमारी का मैं आभारी हूँ, □नके स्नेहशील सहायता से यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य के लिए मुझे हमेशा प्रेरित करने वाली माता (ललह्लिमपुई) के आशीर्वाद एवं भा यों का सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा अतः मैं उनका भी ऋणी हूँ। स शोध-कार्य को सम्पन्न कराने में मेरा परम मित्र रवि प्रकाश मिश्र, एं ला, रोबी, सपना एवं कुसुम कुमारी का विशेष रूप से सहयोग रहा है। अतः उनके प्रति धन्यावाद देना अपना कर्तव्य समझती हूँ।

स शोध-कार्य के लिए सामग्री एकत्र करने में केन्द्रीय पुस्तकालय (मिज़ोरम विश्वविद्यालय) का सहयोग रहा है। मैं नके अधिकारियों के प्रति अपना हार्दिक धन्यावाद ज्ञपित करती हूँ। अंत में मैं ज्ञात-अज्ञात लेखकों, समीक्षकों के प्रति कृतज्ञ हूँ। िनसे किसी न किसी रूप में सहायता मिली है।

सी. ललनुनमोई

विषय-अनुक्रमणिका

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

	पृष्ठ सं
प्राक्कथन	**iii - v**
प्रथम अध्याय : मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय और रचना संसार	**1 - 25**
(क) मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय	
(ख) मैत्रेयी पुष्पा का रचना संसार	
द्वितीय अध्याय : ' चाक ': अनुभूति पक्ष	**26 - 80**
(क) चाक में चित्रित स्त्री मुक्ति के स्वर	
(ख) चाक में चित्रित सामाजिक विषमता	
(ग) चाक में चित्रित राजनीतिक एवं धार्मिक विषमता	
तृतीय अध्याय : ' चाक': अभिव्यक्ति पक्ष	**81 - 107**
(क) भाषा	
(ख) शैली	
उपसंहार	**108 - 109**
संदर्भ – ग्रंथ सूची	**110 - 113**
अनुसंधित्सु का विवरण	

प्रथम आधाय : मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय और रचना संसार

(क) मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय:

जन्म: मैत्रीयी पुष्पा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में 30 नवम्बर 1944 ई. को हुआ। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म ग्रामीण परिवेश में हुआ था। उनके माता का नाम कस्तुरी तथा पिता का नाम हीरालाल था। मैत्रेयी पुष्पा का परिवार ब्राह्मण था। पैदा होते ही उनके पिता ने मैत्रीयी कहा और माँ ने पुष्पा कहकर पुकारा। तथा दोनो का नाम मिलाके हिन्दी साहित्य क्षेत्र में मैत्रीयी पुष्पा के नाम से जाना गया। मैत्रेयी पुष्पा जब अठराह महीने की थी तब उनके पिता की मृत्यु हुई। पिता की मृत्यु होने के बाद माँ ने अपनी शिक्षा प्राप्त करके ग्रामसेविका की नौकरी की। माँ एक सक्षम और इरादों की मजबूत महिला थी। माँ की नौकरी और दादा की मृत्यु के कारण वह अनाथ सा जीवन जी रही थी। मैत्रेयी अपने प्रारंभिक जीवन में डरी–डरी, कमजोर तथा अकेलेपन की पीड़ा से त्रस्त थी। परंतु वह हिम्मत न हार कर उन पीड़ियों का सामना करके भारतीय हिन्दी साहित्य के जगत में अपना नाम प्रसिद्ध किया।

परिवार: मैत्रेयी पुष्पा के परिवार में उनके पिता हीरालाल, माता कस्तूरी और दादा थे,जो अपाहिज थे। परिवार मे उनके मामा भी रहते थे जो कि पिता कि मृत्यु होने के बाद मैत्रेयी पुष्पा कि माँ को सताते थे। भाई कि नजर उनकी संपत्ति पर थी और वह उनकी पूरी संपत्ति को हड़पना चाहता था। मैत्रेयी पुष्पा के घर का मुख्य व्यवसाय खेती था। पिता कि मृत्यु के बाद उनके दादा और माँ ने ही उनका पालन पोषण किया है। मैत्रेयी पुष्पा कि शादी सत्रह वर्ष में डॉ.रमेशचंद्र के साथ हुआ। शादी के बाद मैत्रेयी अलीगढ़ में रहने लगी। पति को दिल्ली में नौकरी मिलने के बाद दिल्ली में रहने लगी।मैत्रीयी पुष्पा को तीन बेटियाँ है तथा तीनों बेटियाँ पिता कि तरह डॉक्टर बनी।

शिक्षा: आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य कि लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन में अनेक संघर्षो का सामना किया है। उन्होंने अपने बचपन का जीवन अनेक सुख दुखों तथा बड़ी जटिलताओं से गुजारी है। पढ़ाई के दौरान मैत्रेयी पढ़ाई से नहीं तो रास्ते से डरती थी,शिक्षा के नाम पर उन्हें दर-दर भटकना पड़ा, फिर भी उन्होंने बड़ी हिम्मत और कठिनाई के साथ एम.ए कि शिक्षा प्राप्त की। मैत्रेयी पुष्पा कि प्रारंभिक शिक्षा सिकुर्रा में शुरू हुई तथा उत्तर प्रदेश के झाँसी के बुंदेलखंड कॉलेज से बी.ए की परीक्षा पास की और उसी कॉलेज से एम.ए की परीक्षा भी पास की है।

साहसी तथा अक्खड़ व्यक्तित्य : माँ की नौकरी तथा बाबा की असमय मृत्यु के कारण वह अनाथ सा जीवन जी रही थी परंतु वह हिम्मत न हार के एक साहसी लड़की की तरह हर मुसीबतों का सामना करती थी।वह अपने आत्मकथा में कुछ भी गोपनीय नहीं रखती हैं और वह माँ के साथ-साथ अपने को भी खोलती है।वह पूरे साहस के साथ माँ और गौरा के समलैंगिक होने का दावा करती है–जैसे–"माताजी की खाट से उसे गौरा ही उठाकर दूसरी खाट पर डाल देती थी। नींद टूटने पर दिखता कि उसकी जगह माताश्री के संग सो रही थी।"[1] ब्राह्मण परिवार में पैदा होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व में अक्खड़पन है। वह भले ही शरीर से दुबली–पतली क्यो न हों उनका स्वभाव अक्खड़ है। उनकी इस आत्मकथा मे भी उनके अक्खड़पन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जैसे –"माँ से कौन–सी सीख लूँ यही न कि मर्द कि जगह कोई औरत □□लूँ।"[2] वह ब्राहमणवादी कुलशील परंपरा तथा नैतिक परिवेश से मुक्त अक्खड़ नारी बनी। उनका इरादा मजबूत था तथा नजरे बहादुर थी इसलिए वह हर मुसीबत में साहसी दिखती है।

विवाह: पिता की मृत्यु के बाद उनकी शादी तय करने के लिए उनकी माँ कस्तुरी ही जाती थी। अकेली माँ अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए जाने की बात का रिश्तेदार मजाक उड़ाते थे। कस्तुरी दहेज के सख्त विरोध में थी। वह अपनी बेटी को दहेज माँगने वाले के साथ

विवाह तय नहीं करना चाहती । इस तरह मैत्रेयी पुष्पा का विवाह अलीगढ़ के डॉक्टर रमेशचंद्र के साथ हुआ।विवाह के बाद मैत्रेयी पुष्पा अलीगढ़ में रहने लगी।पति को दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में नौकरी मिलने के बाद दिल्ली मे रहने लगी।शुरू में अधिकतर समय गाँव में बिताने के कारण दिल्ली जैसे महानगर में रहना थोड़ा सा कठिन हुआ था परंतु उनकी साहसी तथा मजबूत इरादों के कारण अपने आप को बहुत जल्द ही उस माहौल में □ल लिया। मैत्रेयी पुष्पा को तीन बेटियाँ हैं- नम्रता,मोहिता और सुजाता। तीनों बेटियाँ पिता की तरह डॉक्टर बनी ।

नौकरी: मैत्रेयी पुष्पा विवाह करके सुखी वैवाहिक जीवन बिताना चाहती थी इसलिए उन्होंने नौकरी को महत्व नहीं दिया और एम.ए तक की पढ़ाई करके भी नौकरी नहीं की। उनको पता था की उन्होंने अपना बचपन अनेक जटिलताओं तथा कठिनाइयो से परिपूर्ण है।उनके जीवन में तीन पड़ाव है। पहला-बचपन,दूसरा-शिक्षा और तीसरा शादी का है। मैत्रेयी पुष्पा हर पल खुद को असुरक्षित महसूस करती थीं। वह अकेली लड़की पुरुष का आधार चाहती थी। वह अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को दबाना नहीं चाहती इसलिए वह नौकरी करने के बजाय विवाह करना चाहती है।उनका बचपन पाँच साल की उम्र में ही खत्म हो गया था।माँ उसे पढ़ने के लिए जहाँ-जहाँ भेजती वहाँ-वहाँ उन्हें शारीरिक और मानसिक तकलीफों को सहना पड़ता हैं। मैत्रीयी पुष्पा पढ़े लिखी औरत होके भी नौकरी करना नहीं चाहती। वह विवाह को अपनी मुक्ति का साधन मानके सुखी वौवाहिक जीवन बिताना चाहती थी ।

अभिव्यक्ति: मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहासिक जीवन तथा हिन्दी के साहित्यिक जगत में अपना नाम कमाया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी साहित्य में अपनी अलग-अलग पहचान तथा स्थान बनाई है। कॉलेज जीवन से ही मैत्रेयी पुष्पा ने लिखना आरंभ किया है परंतु विवाह तथा परिवार के बोझ के कारण लेखन के क्षेत्र में नहीं आ पायी। बाद में उनके पति तथा बेटी के कहने पर उन्होंने अपना लेखन फिर से प्रारंभ किया। हिन्दी के

साहित्यि में उनका स्थान कहानीकार, उपन्यासकार, आत्मकथाकार आदि के रूप में प्रसिद्ध है। मैत्रेयी पुष्पा कहानी, उपन्यास तथा आत्मकथा लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। अब तक मैत्रेयी पुष्पा की कहानी,उपन्यास और आत्मकथाओं को पढ़कर यह समझा जा सकता है कि अब तक मैत्रेयी पुष्पा ने न गाँव का दामन छोड़ा है और न गाँव ने मैत्रेयी पुष्पा का दामन छोड़ा। मैत्रेयी पुष्पा ने चालीस (40) वर्ष कि उम्र में लिखना आरंभ किया और हर साल एक-न-एक रचना प्रकाशित होती रही है।

पुरस्कार: मैत्रेयी पुष्पा को उनके लेखन के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। जिनमें –

1.वीरसिंह जू देव पुरस्कार (मध्य प्रदेश साहित्य परिषद) व कथा सम्मान।

2. साहित्यकार सम्मान हिन्दी अकादमी,दिल्ली।

3.सार्क लिटरेरी अवार्ड।

4. 'द हंगर प्रोजेक्ट'(पंचायतीराज) का सरोजिनी नायडू पुरस्कार।

5.'इदन्नमम' उपन्यास पर नजनगुड्डु तिरुमालंबा पुरस्कार 1996 (शाश्वती संस्था,बैंग्लोर)।

6. 'बेतवा बहती रही' पर प्रेमचंद सम्मान 1995,उत्तर प्रदेश।

7.प्रेमचंद सम्मान (उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान)।

8. कथा पुरस्कार ('फैसला' कहानी पर)।

9.हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान।

10. "सुधा साहित्य सम्मान"2008: हंसाक्षर ट्रस्ट और गालिब इंस्टीट्यूट,दिल्ली।

(ख)मैत्रेयी पुष्पा का रचना संसार

मैत्रेयी पुष्पा ने अब तक 'स्मृति दंश', 'बेतवा बहती रही', 'इदन्मम', 'चाक', 'झूला नट', 'अल्मा कबूतरी', 'अगनपाखी', 'विजन', 'कही ईसुरी फाक', तथा 'त्रिया हठ' उपन्यास लिखी हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

'स्मृति दंश' (1990) - यह एक लघु उपन्यास है। कथा की दृष्टि से बहुत मार्मिक है; किसी भावुक पाठक की आंखो को अश्रुपूरित कर देने में समर्थ है। इस उपन्यास में परंपरागत पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचार का अंकन किया गया है।

'बेतवा बहती रही'(1993) - यह उपन्यास (सं 1993) किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। यह एक अंचल विशेष में पली बड़ी युवती उर्वशी की कहानी है जो प्रेम, घृणा, हिंसा, वासना आदि से परिपूर्ण है। यह एक ग्रामीण परिवेश से जुड़ा हुआ उपन्यास है जिसमें स्त्री को केंद्र में रखा गया है।युवती का दु:ख व्यक्त हुआ है, तथा यह एक ऐसी विधवा की कहानी है जिसे अपने मायकेवालों और ससुरालवालों दोनों तरफ शोषण का सामना करना पड़ता है।

इस उपन्यास में उर्वशी की शादी सिस्सा के वकील सर्वदमन के साथ हुआ है। दहेज लिए बिना वकील सर्वदमन ने उर्वशी के साथ विवाह किया। सर्वदमनका एक पुत्र देवेश होने के पश्चात मोटरसाइकल उपघात में मृत्यु होती है। पति की मृत्यु के बाद विधवा उर्वशी को अपना जीवन अनेक कठिनताओं के साथ गुजारना पड़ा।

'इंदन्नमम' (1994) - यह उपन्यास किताबघर ने सं 1994 मे प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र मंदाकिनी है जो सामाजिक व्यवसाय की कुरितयों के साथ संघर्ष करती है।यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमे मजदूरों की समस्याओं का चित्रण किया गया है तथा मंदाकिनी इन मजदूर किसानों को न्याय देने के लिए अपना पूरा जीवन सौंप देती है। इदन्नमम उपन्यास

में तीन पीढ़ियों की कहानी हैं।बऊ की बहू प्रेम तथा मंदा (मंदाकिनी) जिसमें बऊ और मंदा ही प्रमुख है। इन तीनोंका भले ही एक दूसरे से विरोध हो पर तीनों समय- समय पर एक दूसरे का साथ भी देती हैं।

यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें बुंदेलखंड के जनजीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। पुरुषों के प्रति आक्रोश का भाव उपन्यास में दिखाई देता है। इदन्न्मम के उपन्यास में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार मंदाकिनी ने बिना डर और साहस के साथ विभिन्न कठिनाइयों का सामना किया है। साथ ही साथ यह भी दिखाया गया है कि वह सत्य पक्ष पर चलने वाली एक बालिका है जो असत्य का बड़ी तिब्रता से विरोध करती है। इस उपन्यास में यह भी चित्रित किया गया है कि मंदाकिनी मकरूद से प्रेम करती है। उसके साथ खेलना तथा बातें करना उसको अच्छा लगता है। उपन्यास कि भाषा विद्याचल कि आंचलिक भाषा के साथ-साथ तत्सम, तदभाव शब्दप्रधान भाषा हैं। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग इस उपन्यास कि विशेषता है।

'चाक'(1997) - यह एक कृषि जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवाला एक प्रयोगीवादी उपन्यास है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र सारंग स्त्री स्वतंत्रता की मांग करनेवाली पात्र है,जो हमेशा सत्य पक्ष पर चलना चाहती है। उपन्यास 'चाक' का अर्थ चक्र से भी लगाया जा सकता है। चाक जब घूमता है तो मिट्टी को तराशकर कुछ नया बनाता है, इसी तरह सारंग भी अपने जीवन को एक नवीन रूप देने का प्रयास कर रही हैं।

सारंग ममतामयी माँ होने के साथ-साथ एक साहसी स्त्री भी है। 'चाक' न्याय के लिए संघर्ष करती एक स्त्री की कथा नहीं है, बल्कि वह उस स्त्री की भी कहानी है, जो समाज की व पति की बनायी घिसी पिटी परिपाटी पर नहीं चल पाती और तथा अनेक विरोधों के

बावजूद अपना एक नवीन मुकाम हासिल करती है। पुरुषों के अनेकानेक विरोधों के बावजूद भी सारंग गाँव कि स्त्रियों के लिए आदर्श है और वे उसके संघर्ष से सहानुभूति रखती हैं।

सारंग सत्य का पक्ष लेने वाली स्त्री है। जहाँ रेशम कि हत्या के पश्चात सम्पूर्ण गाँव गवाही देने से मना कर देता है वहाँ सारंग सत्य का वरण कर सब कुछ सच-सच बतला देती है। वह हर हाल में रेशम को व गुलकंदी को न्याय दिलाना चाहती है, और साथ ही सम्पूर्ण स्त्रियों को यह संदेश देना चाहती कि यदि वे आज चुप रही तो सदियों तक उनकी हत्या का अनुष्ठान चलता रहेगा। अनेक कठिनाइयों से गुजरकर भी सारंग अपने कार्य को आगे बढ़ाना चाहती है। ब्रज प्रदेश की हिन्दी भाषा के माध्यम से बहुत ही सुंदर बिंबो का निर्माण हुआ है जो उपन्यास में रोचकता पैदा करता है।

'झूला नट'(1999) - 'झूला नट' उपन्यास सं 1999 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का वैचारिक पक्ष 'स्त्री विमर्श' हैं। झूला नट उपन्यास की नायिका 'शैलो' है तथा नायक 'बालकिशन'। वह एक गाँव की साधारण अनपढ़ औरत है और न उसने मनोविज्ञान पढ़ी हैं और न समाजशास्त्र जानती है। यहा तक कि उसको राजनीति और स्त्री-विमर्श कि भाषा भी नहीं पता है।इस उपन्यास में यह व्यक्त हुआ है कि किस प्रकार अनपढ़ ग्रामीण महिला अपने जीवन में आई समस्याओं तथा कठिनाईयों के साथ संघर्ष करती है।

इस उपन्यास में तीन प्रमुख पात्र है- शीलो, शीलो कि सास सरस्वती और देवर बालकिशन। शीलो का पति सुमिरन पुलिस में काम करता है,पत्नी के रूप में शीलो उसे पसंद नहीं है और वह दूसरा ब्याह करता है। सास सरस्वती ने देवर बालकिशन के साथ शीलो का रिश्ता तपकर दिया है। समाज में खलबली मची है। शीलो की काम लिप्सा पूर्ण होती है। छोटे

भाई बालकिशन का रिश्ता शीलो के साथ देखकर सुमिरण तिलमिला उठता है। सालो साल न आनेवाला सुमिरण घर आने लगता है और पत्नी शीलो को पिटने लगता है।

संदेह इस बात का है कि झूलानट शीलो कि कहानी है या बालकिशन की। दोनो ही पात्र बेहद सशक्त रूप में उभरकर पाठकों के सामने आते है। इस उपन्यास में शीलो का संघर्ष अपने परिवार,पति तथा समाज के साथ है। वह पंचायत तथा बिरादरी के साथ भी संघर्ष करती है। वह अपने जीवन की जटिलताओं को बड़े सामर्थ्य के साथ हटाने की कोशिश करती है।

'अल्मा कबूतरी' (2000)- यह उपन्यास कबूतरा जनजाति पर लिखा हुआ है। उपन्यास की नायिका जहाँ एक ओर कदमबाई है वही दूसरी ओर अल्मा। दोनों ही कबूतरा जाति की स्त्रियाँ है और तमाम कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना पक्ष चुनती हैं। जहाँ अल्मा कम उम्र की अनुभवहीन कन्या के रूप में पाठकों के सामने आती है वहीं कदमबाई जिंदगी के अनुभव गुजार चुकी स्त्री के रूप में। यह उपन्यास हिन्दी कथा साहित्य जगत में मिल का पत्थर माना जाता है। उपन्यास में कबूतरा समाज का संपूर्ण जीवन तथा अनेक संघर्षो से संबन्धित जटिलताओं का चित्रित किया गया है।

उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में मैत्रीयी पुष्पा ने दिखाया है कि स्त्री को अनेक प्रकार के संघर्षों के गुजरना पड़ता है,पीड़ाएँ सहनी पड़ती है, इतना सब होने पर भी वह अपने पुत्र को शिक्षा दिलवाती है। नायिका अल्मा अपने पिता की इच्छा पूरी करते-करते निरंतर शोषित और पीड़ित होती गई। पिता के सपने के कारण वह अपने आपको अपने अस्तित्व को मिटाती- बर्बाद करती चली गई।

इस उपन्यास में दो समाज का चित्रण किया गया है- आदिवासी कबूतरा समाज तथा सभ्य समाज जिसे कबूतरा लोग कज्जा कहते है। कथ्य के साथ भाषा, मुहावरे,आंचलिक

शब्द, लोक संस्कृति आदि पर विलक्षण अधिकार है। पात्र का जीवंत रूप उपन्यास के कथा-रस को नए अर्थ देता है।

'आंगनपाखी'(2001)– मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'स्मृतिदंश' का पूर्णलेखन 'आंगनपाखी' एक उपन्यास है जिसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार समाज में स्त्री शोषण होता है और सामंती समाज व्यवस्था का दर्शन इस उपन्यास में होता है।

इस उपन्यास का मूल पात्र भुवनमोहिनी जैसा साधारण बाला के साहस को केन्द्रित किया गया है। यह बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र शीतलगढ़ी और बरुआसागर को आधार बना कर लिखा गया है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण भुवन कि शादी किसी पागल लड़के के साथ करवाया गया है। ससुराल जाने के बाद उसे पता चल जाता है कि उसने किसी पागल के साथ शादी की है। यही से उसके संघर्ष की स्थिति जन्म लेती है। वह एक हिम्मती, जागरूक लड़की के रूप में उपस्थित है। भुवन किसी बात से घबराती नहीं तथा उसका सामना करती है। वह समझती है कि पागल पति के साथ अपना जीवन बरबाद करने से तो अच्छा है कि उसे छुटकारा पा लेना ज्यादा बेहतर मानती है। भुवन मानती है कि स्त्री को मात्र जरूरत कि वस्तु न मानकर, उसे इंसान समझना ही स्त्री का समर्थन करता है। वह अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए वह जमीन-जायदाद में भी अपनी दावेदारी के लिए अर्जी दे देती है। पागल पति कि मृत्यु होने के बाद भुवन को सती कराकर उसके हिस्से की संपत्ति उसके ससुराल वाले हड़पना चाहते है।

'विजन' (2002)- यह उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का सर्वथा प्रथम उपन्यास है जो सं 2002 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था।इस उपन्यास में स्त्री-विमर्श का नया रूप दो महिला डॉक्टरों के बहाने उभरा है। डॉ. नेहा एक पढ़ी-लिखी और आधुनिक सोच विचार की एक डॉक्टर युवती है और डॉ.आभा के चरित्र ने भी इस उपन्यास को प्रभावित किया है। वैसे

भी दोनों के चरित्र में काफी हद तक समानतायें हैं, किन्तु फिर भी डॉ.नेहा ही इस उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र ठहरती है। डॉ.नेहा एक बड़ी अच्छी और होनहार डॉक्टर होने पर भी उनके ससुराल वाले उनका शोषण करते हैं। परंतु वह एक आदर्श बहू होने की वजह से हरहाल में ससुराल जनों को खुश रखना चाहती थी। इसकी वजह से वह हर संभव प्रयत्न करती है। वह अपने ससुर की हर बात, चाहे वह सही हो या गलत,मान लेती है तथा अपनी सभी समस्या एवं परेशानियों को भी न्यौछावर करके ससुर की बातें मान लेती है। डॉ.नेहा एक सत्यवादी युवती डॉक्टर है। वह हर संभव सत्य बोलती है। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ या किसी के लाभार्थ झूठ का सहारा नहीं लेती। डॉ.नेहा एक सच्ची दोस्त भी है क्योंकि वह अपने साथ-साथ समय-समय पर अपने दोस्तों का भरपूर सहायता करती है।

'कही ईसुरी फाग'(2004)- 'कही ईसुरी फाग' का प्रथम संस्करण राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली से 2004 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास महाकवि ईसुरी फागों और उनके प्रेम मय जीवन को आधार बनाकर लिखा गया है। इस उपन्यास का केंद्र बुंदेली लोक कवि ईसुरी और उसकी प्रेमिका रजऊ की प्रेम कहानी है।ईसुरी फाग गायक है,इसके फाग अश्लीलता के लिए प्रसिद्ध है। बुंदेलखंड में प्रसिद्ध किवंदती के अनुसार लोक कवि ईसुरी और उसकी प्रेमिका रजऊ के प्रेम संबंधों पर इस उपन्यास की रचना हुई है। ईसुरी को लेकर बुंदेलखंड में अनेक प्रकार का अफवाह भी है और उस पर रचे गए मिथक भी है।

'कही ईसुरी फाग' उपन्यास का नायक ऋतु ने रजऊ को अपने अनुसंधान का विषय बनाया है। ऋतु के प्रेमी माधव ने इस काम में सहायता की है। संशोधन में ईसुरी के प्रमाण मिलते है लेकिन रजऊ पर कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। रजऊ को बदचलन औरत मानकर लोग उसके बारे में चर्चा भी नहीं करना चाहते हैं। समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के शोषणों तथा विरोधों का सामना इस उपन्यास की नायिका रजऊ व ऋतु करती हैं, किन्तु बेहद साहसिक व सहज तरीके से वे इन परिस्थितियों व विरोधों का सामने करते हुए अपने जीवन

पथ पर अग्रसर होती हैं। दोनों ही स्त्रियाँ बेहद साहस व हिम्मत का परिचय देते हुए विभिन्न विरोधों के बावजूद, अपने प्रेम की खातिर घर से गंगिया बेड़िनी के साथ भाग आती है और देशभक्त देशपत के दल में शामिल होकर अनेक साहसिक कार्य करती हैं । वही ऋतु भी अनेक परिस्थितियों में साहस का परिचय दिखलाती हुई अपने मुहिम पर आगे बढ़ती है और माधव के बीच में छोड़कर चले जाने पर वह अकेली ही विभिन्न स्थानों पर जाकर शोध ज्ञान इकट्ठा करती है ।

'त्रिया हठ' (2006)-त्रिया हठ मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'बेतवा बहती रही' का विस्तार है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में जो सवाल उभरे थे उसका समाधान इस उपन्यास में मिलता है तथा 'बेतवा बहती रही' उपन्यास के कई सवालों का जवाब इस उपन्यास में मिलता है। उर्वशी का बेटा देवेश अपनी माँ कि मृत्यु के कारणों कि खोज करना चाहाता है। उर्वशी का शोषण उसके ससुराल, उसके दूसरे पति तथा भाई और पति के बड़े भाई सभी ने किया है।

कहानी संग्रह : मैत्रेयी पुष्पा ने केवल उपन्यास ही नहीं बल्कि कहानियाँ भी लिखी हैं। हिन्दी साहित्य जगत मे उनकी कहानियों की तारीफ हुई है तथा उनकी कहानी लेखन ने हिन्दी कहानी को नई दिशा दिया है ।

'चिहनार'(1991) कहानी संग्रह' –

मैत्रेयी पुष्पा के पहले कहानी संग्रह 'चिहनार' में 12 कहानियाँ है । जिसका प्रथम संस्कारण 1991 में, द्वितीय 1997 तथा तृतीय संस्कारण 2004 में निकला है।

'**अपना-अपना आकाश':** इस कहानी में एक परिवार जो अपने बेटों को शहर में नौकरी लगने के कारण गाँव छोड़कर महानगर में रहने लगते हैं। वह अपने जमीन के साथ-साथ तीनों भाइयों अपनी माँ कैलाशो देवी का भी बटवारा किया। साल के तीन-तीन महीने एक-एक बेटा माँ का पालन-पोषण करेगा। परंतु कुछ ही दीनों के बाद तीनों बेटों ने अपनी-अपनी

बीवियों से सलाह लेकर माँ को वृद्धाश्रम भेजने का निर्णय लिया। इस कहानी से यह पता चल सकता है कि किस प्रकार बूढ़ी माँ अपने तीनों बेटों के लिए बोझ बन गयी है, जिसने अपने हाथों से चलना सिखाया, दौड़ना सिखाया तथा जीना सिखाया। अपनी पूरी जिंदगी अपने तीनों बेटों के लिए न्यौछावर किया है, वहीं तीनों बेटों के लिए बोझ बन गयी है।

'बेटी': इस कहानी में यह प्रकाश डाला गया है कि समाज में बेटा और बेटी का भेद अत्यधिक होने के कारण नारी शिक्षा कि समस्या उत्पन्न हो जाती है। यह वह समाज है जिसमें बेटी को पराये घर की अमानत मान कर उसे पढ़ाते नहीं है और बेटे को अपने वंश का वारिश मानकर उसे पढ़ने के लिए भेजते है।इस कहानी में भी इस समस्यायों को चित्रित किया गया है। बसुधा और सुन्नी दोनों सहेलियाँ है। बसुधा को पढ़ाया जाता है और सुन्नी को उसके माता- पिता स्कूल भेजते नहीं। परंतु जब बेटे को पढ़ाया जाता है और वही बेटा माता-पिता का सहारा नहीं बन पाते है तब मुन्नी अपने माता-पिता का सहारा बनती है। तथा इस कहानी का उद्देश्य है कि समाज में स्त्री के प्रति सारे भेद–भावों को हटाकर, उसे शिक्षा तथा समाज में बराबरी का स्थान देना है।

'सहचर': इस कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि परिवार में नारी तथा बहू के साथ किस प्रकार का व्यवहार ससुराल वाले करते हैं। नारी का स्थान स्पष्ट किया गया है। बहू को घर में कामकाज के लिए लायी गयी नौकरानी समझा जाता है। जब वह अपाहिज हो जाती है तो माइके भेजने का प्रयास किया जाता है। इस कहानी में दो पात्र छवीली और बंसी को केंद्र में रखकर उनके चरित्र को उभारा गया है। नारी शोषण इस कहानी का मुख्य केंद्र है।

'बहेलिये': इस कहानी में यह प्रस्तुत किया है कि अनमेल विवाह के कारण स्त्री कि किस तरह उपेक्षा होती है। इस कहानी का मुख्य पात्र गिरजा है। गिरजा के चाचा ने एक दिन गिरजा का विवाह बाप की उमर के पेशकार से तय करता है। न चाहते हुए भी घर में अनेक

समस्याओं के कारण मजबूरी मे गिरजा ने पेशकार से विवाह कर लिया। फिर विवाह के अनेक सालों बाद पेशकार कि मृत्यु हो गयी। पति के गुजर ने के बाद गिरजा समाज सुधार के कार्य में लगती है और गाँव के चुनाव के लिए गिरजा खड़ी हो गई। गाँव की प्रधान बनने के बाद ढोंगी और फरेबी नेता भ्रष्ट पुलिस गिरजा की सहायता नहीं करते है तब बहेलिये रूपी पुरुष उसका साथ नहीं देता है।

'मन नांहि दस बीस': इस कहानी में समाज में व्याप्त विभिन्न रूढ़ियाँ,अंधविश्वास तथा अस्पृश्यता पर प्रकाश डाला गया है। इस कहानी में जातिगत भेद–भाव तथा परिवार में नारी के शोषण का चित्रण किया गया है। इस कहानी का मुख्य पात्र स्वराज नाम का एक चमार लड़का और चंदना नाम की एक सवर्ण लड़की की कथा है। समाज में स्त्री पर उसके सास, देवर तथा नामर्द पति के द्वारा होनेवाले अन्याय का मर्मस्पर्शी चित्रण है।अयोग्य पति के साथ भी जीवन बिताने के लिए नारी को मजबूर किया जाता है।

'हवा बदल चुकी': इस कहानी में राजनीति के कारण समाज में बढ़ती सांप्रदायिकता का वर्णन किया गया है। चुनाव के कारण गाँव के पारंपरिक मूल्य टूट रहे हैं। गांधीजी के विचारों से प्रेरित होकर सुजान ठाकुर ने पुरवा गाँव में अस्पृश्यता तथा अंधविश्वासों को मिटाना चाहता है और हिन्दी-मुस्लिम संघर्ष को दूर किया है। सांप्रदायिक दंगे में मुस्लिम समाज के लोगों को बचाया है। लेकिन चुनाव-केंद्र गाँव से काफी दूर बनाया गया ताकि पेटियों की अदला-बदला सहज रूप से की जा सके। सुजान ठाकुर इसका विरोध करते हैं। रिश्वतखोर अधिकारियों के सामने वे अपनी अर्जी लेकर जाते हैं, हार ही उनके हाथ आती है। यह कहानी समाज के बदलते हुए मूल्यों को दर्शाती है।

'आक्षेप'- 'आक्षेप' कहानी में यह चित्रित किया गया है कि किस तरह एक मात्र स्त्री ने अपने खुद के बारे में न सोचकर तथा लोग क्या कहते है, इसकी परवाह न करते हुए लोगों

की सेवा किस तरह करती है। वह स्त्री जो केवल समाज के बने बनाए विधान का पालन न करके एक पुरुष को मानवीय दृष्टि से देखती है। संदेह समाज का स्वभाव है, उसी के अनुसार रमिया के चरित्र पर शक किया जाता है और उसे लोग बदचलन कहते हैं। इस कहानी में यह घोषित किया है कि समाज में स्त्री-पुरुष की मित्रता या मानवीय संबंध को अनुमति नहीं देता है। वह किसी न किसी रिश्ते में ही संबंध तौलता है।

'कृतज्ञ'– अनुपम और वसुधा दिल्ली से अपने पुराने शहर मथुरा के बैंक में ऋण प्राप्त करने के लिए आते हैं। बैंक के कर्मचारी अनुपम की सहायता करने में असमर्थ है। अनुपम को अपने पुराने पड़ोसी हरिश गुप्ता ऊर्फ मुरली की याद आती है। हरिश गुप्ता उनकी सहायता करता है। वसुधा को हरिश के पिता बिमार होने के बाद हरिश उन्हें लेकर दिल्ली आया था उस समय अनुपम अस्पताल तक नहीं गये थे। वसुधा को भी जाने से रोका था। लेकिन हरिश इस बात को भूलकर बैंक में कर्ज दिलाने के लिए सहायता करता है। यही उसकी कृतज्ञता है। इस कहानी में यह परिचय दिया गया है कि किस तरह आर्थिक स्थिति बदलने के बाद व्यक्ति के स्वार्थ भी बदल जाते है। जब व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाती है तब वह अपने पुराने परिचित तथा गरीब पड़ोसियों और साथियों को भूल जाता है। परन्तु गरीब व्यक्ति अपने पुराने साथियों को नहीं भूलता है।

'भंवर': इस कहानी में नारी समस्या पर प्रकाश डाला गया है। समाज में किस तरह नारियों का शोषण होता है, यह चित्रण किया है। विरमा का शराबी पति केशव शराब पीकर उसकी पत्नी विरमा की पिटाई करता है। विरमा अपने पति को छोड़के अपने मैके चली जाती है। कुछ दिनों के बाद विरमा को पता चलता है कि उसके पति केशव ने दूसरी शादी किया है। दूसरी पत्नी सुमन ने विरमा की गोद में लड़के को डाला तो विरमा का आर्द्र मन अपने पति के अपराध को भूल जाता है। विरमा अपने पति को माफ कर इसी देईली पर अपना जीवन गुजारने का फैसला करती है। जब विरमा को स्कूटर की टक्कर लगाती है तो उसके पति और

भाई पैसे लेकर घटना को दबाते हैं। इस कहानी में यह देख सकते हैं कि समाज में नारी का स्थान कैसा है। क्या नारी को यह माना गया कि वह केवल एक मात्र वस्तु है जब चाहे वहाँ से उठा के कही और रख देने का सामान है।

'सफर के बीच': गिरराज ने अपना पूरा जीवन संघर्षपूर्वक बिताते हुए जिलाधिकारी का पद प्राप्त किया है। जब गिरराज सफल व्यक्ति बन गया है तब गाँव के तथा परिवार के सभी सदस्य रघुभईया आदि उसके पद और ओंहदे का फायदा उठाकर अपने स्वार्थ को पूरा करते हैं। एक ईमानदार व्यक्ति रिश्तेदारी निभाते- निभाते रिश्वतखोर बनता है। इस कहानी में स्पष्ट किया है कि किस तरह एक ईमानदार व्यक्ति को अपने ही स्वार्थी रिश्तेदारों ने भावनात्मक शोषण किया हैं।

'केतकी': यह कहानी एक साहसी नारी की कथा है। यह नैतिकता की आड़ में यौन शोषण का वर्णन है तथा यह भी स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि किस तरह यौन शोषण के खिलाफ एक मात्र साहसी नारी विद्रोह करती है। गंधर्वसिंह केतकी का यौन शोषण करता है। केतकी पुलिस से शिकायत कर गाँव के नामी व्यक्ति गंधर्वसिंह के पाप को समाज के सामने लाती है।

'चिहनार': कहानी में किस प्रकार परिवार के लोग विधवा स्त्री के साथ अत्याचार करते हैं यहाँ तक कि अपनी बेटी से भी दूर करते हैं। परिवार वाले सरजू को उसकी बेटी से मिलने नहीं देते। नि:संतान जिज्जी ने सरजू की बेटी कनक को अस्पताल में जन्म लेते ही अपनाया है। कनक बड़ी होने के बाद जिज्जी उसका ब्याह शहर में करती हैं। होटल में ही दहलीज पूजने के लिए कहा जाता है तब कनक विरोध करती है तथा मजबूरन घर आना पड़ता है। घर आकर कनक सीधे सरजू के पास जाकर माँ कहते हुए उसके गले लगाती है। इस कहानी का

उद्देश्य है कि मात्रत्व पैसा या ऐशोआराम देने से नहीं होता है उसके लिए हृदय में ही वात्सल्य होना चाहिए।

'ललमनियाँ' 1996 –

जिस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा का 'चिहनार कहानी संग्रह' लेखन में काफी प्रसिद्ध हुई है उसी प्रकार ललमनियाँ कहानी संग्रह भी हुआ है। इस संग्रह में कुल मिलकर 10 कहानियाँ है। इस कहानियाँ में अलग विषय तथा समस्याएं हैं। इन कहानियों में अलग-अलग वैशिषट्य है और इस वैशिषट्य को लेकर यह कहानियाँ पाठकों के सामने आती हैं। मैत्रेयी पुष्पा की ललमनियाँ कहानी संग्रह का विश्लेषण इस प्रकार है-

'फैसला': इस कहानी की नायिका बसुमती ग्राम प्रमुख रंजीत की पत्नी है। कहानी पर बसुमती की चिट्ठी नाम से दूरदर्शन पर टेलीफिल्म बनी है। रंजीत पत्नी को प्रधानपद के चुनाव के लिए खड़ा करता है किन्तु उसे करोबार करने नहीं देना चाहता है। आरक्षण के कारण महिलाएँ राजनीति में आई, पुरुष उसे अपने रास्ते की बाधा समझने लगा है। पुरुष अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहता है और नारी इसका विरोध करती है। नारी अपने फैसले खुद लेना चाहती है तथा अपने अधिकार का उपयोग कर अपने अस्तित्व को समझने का प्रयास किया है। यहीं इस कहानी का बड़ा फैसला है।

'सिस्टर': इस कहानी में यह स्पष्ट हुआ है कि किस प्रकार समाज में शिक्षित लोग स्वार्थी रिश्ते बनाते है और एक ईमानदार और मासूम स्त्री की मानसिकता के साथ खिलवाड़ करते हैं।

'सेंघ': कहानी में गाँव की परिवर्तनों पर प्रकाश डाला है। राजनीति ने गाँव में बहुत सा परिवर्तन लाया है परंतु यह परिवर्तन गाँव के लिए समस्या पैदा करनेवाला चीज़ बन जाता है।

इस कहानी से यह स्पष्ट है कि किस तरह शिक्षित समाज,पुलिस तथा सरकारी अधिकारी गाँव पर अन्याय करते हैं। तथा यह परिवर्तन गाँव के लिए बोझ बन गया है।

‘**अब फूल नहीं खिलते’:** कहानी में यह व्यक्त किया है कि किस प्रकार शिक्षा संस्थानों में भी नारी पर अन्याय किया जा रहा है और उसी की वजह से नारी यौन शोषण का शिकार हो रही है।

‘रिज़क’: कहानी में यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार गाँव और शहरी जीवन एक दूसरे से अलग होता है। दोनों के बीच पर अलग परिवर्तन का प्रभाव कैसे पड़ता है, यह व्यक्त हुआ है। शहर का संबंध भौतिकवादी तथा पैसों पर आधारित होते है जबकि गाँव के संबंध सौहर्दता तथा मानवीयता पर होते हैं। ग्रामीण लोग अपनी परंपरा से दूर होना नहीं चाहते है।

‘बोझ’: मॉडर्न माता-पिता नौकरी के कारण अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते जिनके कारण बच्चे परिवार में बोझ बन गये हैं। वह अपने बच्चों का खयाल भी नहीं रख सकते हैं। आधुनिकता के प्रभाव के कारण परिवार का विघटन हो रहा है। यह इस कहानी का प्रमुख विचार है।

‘पगला गयी है भागवती’: कहानी में यह दिखाया है कि किस प्रकार समाज में बेटी और बेटे का भेदभाव किया जाता है। समाज के हर परिवार में जब बेटी गलती करती है तो माता-पिता उसकी गलती पर पर्दा नहीं डालते हैं। जबकि बेटे ने अगर कोई भी गलती की हो, तो भी उसे अनदेखा किया जाता है।

‘छाँह’: इसमें जातीयता की समस्या का चित्रण किया गया है। समाज शिक्षित होने के बाद भी जातिगत भेद-भाव, छुआछूत, अंधविश्वास आदि समाप्त नहीं हो पाया है, यह व्यक्त किया है।

'तुम किसकी हो बिन्नी?': कहानी में यह दिखाया गया है कि एक स्त्री भी स्त्री से कितनी नफरत करती है। परिवार में लड़का- लड़की के प्रति भेद-भाव माता-पिता करते हैं। लड़के को वंश चलनेवाला माना जाता है जबकि बेटी को गर्भ में ही मारने का प्रयास होता है। सोनोग्राफी करवायी जाती है। माँ अपने गर्भ में ही बच्चे को मारने का प्रयास करती है।

'ललमनियाँ': इस कहानी में यह स्पष्ट किया है कि लुप्त होती लोककथा के साथ जुड़े लोगों को किस प्रकार शारीरिक शोषण तथा आर्थिक विडम्बना होती है। ललमनियाँ कहानी के माध्यम से ही मैत्रेयी पुष्पा ने भारत कि लुप्त होती ब्रज लोकनृत्य कला को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

'गोमा हँसती है ' - 1998

गोमा हँसती है कहानी संग्रह में मुख्यत: स्त्री विषय पर आधारित कहानियाँ है। इसमें भारतीय ग्रामीण स्त्री जीवन का दुख: दर्द व्यक्त हुआ है।'चिहनार' कहानी संग्रह तथा 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह की तरह 'गोमा हँसती है' कहानी संग्रह में भी 10 कहानियाँ संकलित है।

'शतरंज के खिलाड़ी': राजनीति में महिला का चुनाव करते समय पुरुष की मानसिकता का दर्शन इस कहानी में हुआ है। चाहे जितना भी प्रधान पद में महिलाएं हस्ताक्षर या अंगूठा लगाए अंत में पुरुष ही राज करते हैं। यह एक ऐसा समाज है जहाँ नारी पुरुष का खिलौना बन गयी है। भले ही महिला प्रधान बनी तो भी उसका पति ही कारोबार करता है।

'राय प्रवीण': इस कहानी में यह आया है कि नारी किस तरह यौन शोषण का शिकार होती है और यहाँ तक कि पति स्वंय दुर्बल नोट हुए भी यौनशुचिता के नाम पर अपनी पत्नी को त्यागता है। समाज में कहीं भी एक परित्यक्ता को स्थान नहीं मिलता है। जब माता- पिता का द्वार भी बंद होता है तब उसे मौत के अलावा गले लगाने के लिए कुछ भी नहीं बचता।

'बिछुड़े हुए': कहानी में सुग्रीव अपनी पत्नी चंदा और बेटी को छोड़कर घर से दूर भाग जाता है। परिवार की जिम्मेदारी से दूर भागकर संन्यासी बना है। मात्र नारी अपनी बेटी का पालन-पोषण करती है। सुग्रीव घूमते-घूमते वह अपने गाँव आता है। गाँव के सभी लोग उसे पहचानते है परंतु जो अपने जिम्मेदारी से बिछड़ गया है पत्नी उसे पहचानते हुए भी पहचानने से इंकार करती है।

'प्रेम भाई एंड पार्टी': कहानी यह प्रस्तुत किया है कि समाज में किस प्रकार शादी के सिलसिले में अपने परिवार कि शान बढ़ाने के लिए परिस्थिति न होते हुए भी खर्च किया जाता है। परिवार वाले रिश्ता तय करते समय बड़े लोगों से संबंध जोड़ने का प्रयास करते है तथा शादी में किस प्रकार फिजूल में पैसा खर्च किया जाता है, इसका चित्रण हुआ है।

'ताला खुला है पापा': कहानी जातिगत भेद-भाव सामाजिक बंधनों के कारण परिवार वाले शादी तय नहीं करते। समाज में लड़की और लड़के के भेदभाव का चित्रण किया है। जगदीश चौबे की बेटी बिंदो आरविंद से प्यार करती है परन्तु जातिगत भेद-भाव के कारण बिंदो और आरविंद के प्यार में बाधा है। आरविंद नाई है और बिंदो ब्राह्मण। जगदीश चौबे अपनी बेटी को कमरे में बंद कर रखा है। एक दिन चौबे के घर का दरवाजा खुला देख चौक में जाते है, जगदीश को लगता है कि बिंदो भाग गयी है परन्तु जब वह अंदर गए तो अंधेरे में बिंदो सोई है। पिता अपने बेटी को ताले में बंद करता है।

'साँप-सिढ़ी': इस कहानी में एक शिशित युवक नौकरी करने के लिए अपने परिवार की जमीन जायदाद किस प्रकार बेचने का प्रयास करता है। राजन नागपुर से रेलवे स्टेशन मास्टर का टेस्ट देकर आया है और अपने पिता सुरजन सिंह को जमीन बेचने के लिए कहता है। सुरजन सिंह ने बेटी रज्जों की शादी में दहेज में अपने पूरे धन-संपत्ति दे दिया था। अब तो बस उनके लिए केवल खेत ही बचे थे। इसलिए सुरजन सिंह खेत बेचने से इंकार कर देते है। पैसों

का इंतजाम होने के कारण राजन नेता सूरजभार के चक्कर में आया। इस तरह एक शिक्षित युवक गलत रास्ते पर जाता है।

'उज्रदारी': इस कहानी में एक औरत किस प्रकार अपनी जमीन जायदाद तथा अपने हक को बचाने के लिए संघर्ष करती है, यह चित्रण किया है। कहानी में शांति अपने पति की मृत्यु के बाद परिवार वाले पति की जमीन जायदाद को हड़पने का प्रयास करते हैं। शांति हिम्मत न हार कर एक साहसी नारी की तरह जमीन तथा घर का हक पाने के लिए प्रयास करती है।जेठ उसे मरवाने का प्रयास करते है। शांति वहाँ से भाग जाती है। भागकर जाने के बाद जेठ उसे जमीन तथा घर परिवार से निष्काषित करने के लिए अदालत में अर्जी देते हैं। शांति इसके खिलाफ उज्रदारी करती हैं।

'रास': रस लीला मंड़ली का मनसुखा आधा पुरुष और आधा स्त्री हैं। इसके साथ जैमन्ती का विवाह हुआ। अयोग्य पति से विवाह कराकर जैमन्ती अकेली रह पड़ी। वह अपनी वैवाहिक जीवन में खुश नहीं थी। ससुर उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसपर बलात्कार करने का प्रयास किया। जैमन्ती ने इसका विरोध करते हुए घर छोड़कर चली गई। वह अपने मैके आकार रहने लगी।इस कहानी में यह प्रस्तुत हुआ है कि एक स्त्री का समाज में किस प्रकार शोषण होता है।

'बारहवीं रात': में सुरेन्द्र कि पत्नी सीता ने आत्महत्या की है। सुरेन्द्र को दारोगा गिरफ्तार कर ले गया है। सुरेन्द्र कि माँ और पिता छिपे हुए है। सीता गर्भ से थी तब उसकी सास ने उनपर बहुत ही अत्याचार किया। सीता कि मृत्यु के बाद सुरेन्द्र कि शादी फिरसे उसके परिवार वाले तय कर देते है। सुरेन्द्र के माता- पिता पुलिस को पैसा देकर सुरेन्द्र को छुड़ाने का प्रयास किया जाता है। सीता की मृत्यु के बारहवी रात में रिश्तेदारी की बाते होने लगती है। यह कहानी पत्नी की मृत्यु के बाद पुरुष के पुनर्विवाह की कथा है।

'गोमा हँसती है': कहानी का मूल पात्र किड्□सिंह है। चेचक के कारण उसकी एक आँख गई है। आँख तथा उसके पंगु व्यक्तित्त्व के कारण उसका ब्याह नहीं हो रहा है। बलिसिंह और गोमा के संबंधों को लेकर हमेशा शक करता है परन्तु गोमा अपनी चतुराई और प्यार से विकलांग पति को प्रसन्न रखती हैं। और साथ में बलिसिंह से अनैतिक संबंध भी रखती है। गोमा की एक हंसी पर ही किड्□कुरबान होता है।

'दस प्रतिनिधि कहानियाँ ' (2006)-

'छुटकारा': दस प्रतिनिधि कहानियाँ मे एक मात्र नवीन कहानी है। इस कहानी में यह चित्रण किया है कि सवर्ण लोगों का अस्पृश्य जाति के साथ किस प्रकार भेद-भाव पूर्ण व्यवहार करते हैं। कहानी का प्रमुख पात्र छन्नो मेहतर जाति की है। मेहतर जाति सवर्ण लोगों का मैला उठाने का काम करती है। सवर्ण लोगों का काम करने के कारण छन्नो उनके साथ रहना चाहती है परन्तु सवर्ण लोग विरोध करते हैं तथा उससे छुटकारा पाना चाहते है। छन्नो पर मैला डालते है तथा घर की खिड़की पर आग लगाई जाती है। छन्नो मैला उठाना बंद करती है। अंत में छन्नो को पुलिस द्वारा धमकाया जाता है। बाद में सवर्ण लोगों की बस्ती में मैले से गंदगी बढ़ने के कारण लोग छन्नो के पास जाकर क्षमा मांगते है और उसे मैला □□ का काम करने के लिए कहते है।छन्नो मेहतरानी के लिए मैला रोजी रोटी का प्रमुख साधन है। सवर्ण लोग अपने सीता गली में शोफ्टी टँक के शौचालय बनाते हैं और छन्नो मेहतरानी को मैले धोने से छुटकारा मिलता है। प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने समाज में व्याप्त निचली जाती तथा दलित लोगों के साथ सवर्ण लोगों का स्वार्थपूर्ण व्यवहार का चित्रण किया है।

आत्मकथा-

'कस्तुरी कुण्डल बसै' (2002): 'कस्तुरी कुण्डल बसै' इस रचना को मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा कहा जाता है। इस में आरंभ के 21 वर्षो का जीवन बड़े संघर्ष, बड़े साहस और

सच्चाई के साथ रखा है। मैत्रेयी पुष्पा ने आत्मकथात्मक शैली का उपयोग इस रचना में किया है। उन्होंने अपने जीवन की सच्चाई को कल्पना की रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है।

'गुड़िया भीतर गुड़िया' (2008): यह रचना मैत्रेयी पुष्पा की दूसरी आत्मकथा है। इस आत्मकथा में अपने साहित्य लेखन का प्रारंभ और उसके विविध पड़ाव का उल्लेख किया है। यह आत्मकथा हिन्दी साहित्य जगत में काफी चर्चित तथा प्रसिद्ध आत्मकथा है।

स्त्री विमर्श -

'खुली खिड़कीयां' (स्त्री विमर्श) (2005): 'खुली खिड़कियाँ' नारी विमर्श का प्रकाशन सामयिक प्रकाशन द्वारा हुआ है। इसमें मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री विमर्श पर अपने विचारों प्रस्तुत किये हैं। सदियों से लेकर समाज में नारियों की स्थिति बड़ी कमजोर तथा दबी हुई रही है। समाज ने धर्म, संस्कृति के नाम पर अन्याय किया है और इस अन्याय के कारणों की मीमांसा की है। यह ग्रंथ छह खंडों में विभाजित है।इन छह खंडों के विभाजित ग्रंथ में अतीत और वर्तमान नारी की स्थिति की तुलना किया गया है।

खंड -1. धर्म

खंड -2. संस्कृति

खंड-3. समाज

खंड-4. साहित्य

खंड-5.राजनीति

खंड-6. फिल्म और टेलिविजन

'सुनो मालिक सुनो' (2006): 'सुनो मालिक सुनो' का प्रकाशन वाणी प्राशन ने 2006 में किया है। यह रचना मैत्रेयी पुष्पा के नारीवादी विचारों का संकलन है। इसमें नारिवाद, ग्रामीण जीवन तथा आधुनिक नारी त्रासदी आदि की रचना करके हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

'फाइटर की डायरी' (2009): इस रचना का प्रकाशन हरियाणा पुलिस अकादमी ने 2009 में किया है। लेखिका यहाँ एक सूत्रधार के रूप में आई है। पुलिस में आई लड़कियों की आत्मकथाओं के आधार पर रचा गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन के यथार्थ रूप का चित्रण करके पाठकों के सामने प्रस्तुत की है। इस रचना में साधारण लड़कियाँ अपने जीवन संघर्षों के कारण असाधारण बनी है।

'मंद्राकान्ता' (नाटक) (2006): 'मंद्राकांता' मैत्रेयी पुष्पा का एक मात्र नाटक है। यह नाटक 'इदन्नमम' उपन्यास पर आधारित है। 'इदन्नमम' उपन्यास की मन्दाकिनीऔर मकरंद के नाम के योग से मंद्राकांता शिर्षकहुआ है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास के ही कथानक को नाटकीय □ाँचे में बिठाया है।

निष्कर्ष

हिन्दी जगत की एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा बचपन से ही साहसी तथा अखड़पन व्यक्तित्त्व की धनी है। उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा से हिन्दी साहित्य जगत में अपना नाम कमाया है। मैत्रेयी पुष्पा ने कहानी, उपन्यास वैचारिक साहित्य तथा आत्मकथा आदि लिखा है। उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा से भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं का चित्रण किया है। मैत्रेयी पुष्पा की अधिकांश कहानियों और उपन्यासों में नारी को केंद्र में रखकर उसपर पुरुष द्वारा किए गए विभिन्न प्रकार के अत्याचारों और शोषणों पर प्रकाश डाला है। गाँव से संबन्धित विविध समाज का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी तथा उपन्यास के माध्यम से किया है।

उन्होंने समय को ध्यान में रखते हुए कहानी और उपन्यासों में उस काल में उत्पन्न संघर्षों तथा द्वंद्वों पर प्रकाश डालकर उनका भरपूर विरोध करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास और कहानियों में लोक संस्कृती, लोक व्यवहार आदि का पुट दिया है जिसमें उपदेश तथा अनुभव छुपा है। मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यास में स्त्रियों की समस्या को आधार बनाया है जो समाज की मुख्य समस्या हैं। उनके उपन्यास और कहानियों की स्त्री को न तो समाज उसे स्थान देता हैं और न ही सम्मान। समाज उसे दोयम दर्जे पर रखता है। उनके कथा साहित्य में भारतीय नारियों विभिन्न संघर्षों और द्वंद्व से जूझती नजर आती है। नारी के वर्चस्व ही नहीं अपितु उनके कथा साहित्यों में नवीन सोच, विचार-विनिमय, विद्रोह, संघर्ष तथा द्वंद्व को भी बड़ी सजकता से चित्रित किया गया है।

संदर्भ

1. मैत्रेयी पुष्पा: कस्तूरी कुंडल बसै, पृ – 105
2. वही, पृ - 105

द्वितीय अध्याय : 'चाक': अनुभूति पक्ष

(क)चाक में चित्रित स्त्री मुक्ति के स्वर: मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय महिलाओं की स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी सामाजिक स्थिति तथा वास्तविक जीवन को सामने लाकर समाज के बंधन भी तोड़ दिये हैं। ज़्यादातर मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण नारियों के वास्तविक जीवन को चित्रण किया है। राजेन्द्र राव के शब्दों में "स्त्री अस्मिता और चेतना की तेजस्वी ध्वजवाहक लेखिका हैं मैत्रेयी पुष्पा। उनके क्रांतिधर्म और उद्देश्यपूर्ण लेखन का वैचारिक पक्ष प्रखर और विवादस्पद रहा है।...आज की पढ़ी-लिखी युवा लड़कियों के बीच वह अत्यंत लोकप्रिय हैं। एक ओर उनकी रचनाओं में अंतर्निहित जीवट के प्रशंसकों की बड़ी फौज है तो कटु से कटु उक्तियों को उचारने वाले भी कम नहीं है ।"[1] हम जानते हैं कि सदियों से लेके आज तक नारी शोषण हमारे समाज में एक समस्या बन चुकी है। समाज में कई तरीके से नारियों का शोषण हुआ है। मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक रूप से नारी का शोषण हो रहा हैं। यह कहा जा सकता है कि नारी का शोषण विभिन्न रूपों में होता है। ज़्यादातर ग्रामीण नारी अशिक्षित है जिसका फयदा उठाके शिक्षित युवक उनका शोषण करते हैं। न चाहते हुए भी ग्रामीण स्त्रियों को उनके शोषणों को सहना तथा उसको झेलना पड़ता है। 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने इस विषय को जोर देकर वर्णन किया है।'चाक' उपन्यास का विश्लेषण करते हुए डॉ.दया दीक्षित कहते है, "चाक आधी आबादी के व्यक्तित्व के अंत:एवं वाह्य रूप रंग के साक्ष्य ही उपस्थित नहीं करता, वरन परम्पराओं के चाक पर नए और सामयिक मूल्यबोध को भी रखता है ।"[2]

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'चाक' में नारी समस्याओं का चित्रण किया है। 'चाक' उपन्यास मे सारंग अपनी बहन के कातिलों को हरहाल में सलाखों के पीछे डालने का प्रयास करती है। वह हिम्मत न हार कर रेशम को इन्साफ दिलाना चाहती है। परंतु गाँव के लोग सब जानते हुए भी अनदेखा करके गवाही देने से इंकार करते है।रेशम के मौत को लेकर

सब मौन रहते हैं। सत्य को जानते हुए भी गाँव के लोग अंजान बने है। यह सब देखकर सारंग कहती है-"इस गाँव के इतिहास में दर्ज दस्ताने बोलती हैं-रस्सी के फंदे पर झूलती रुक्मणी, कुएँ में कूदनेवाली रामदेई,करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी...ये बेबस औरतें सीता मइया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर अपने शील-सतीत्व की खातिर कुरबान हो गई। ये ही नही; और न जाने कितनी..."[3] स्त्री अपने पति की मृत्यु होने पर समाज की कुव्यवस्था के कारण जहाँ स्त्री अकेले रहते हुए अपने आप को असुरक्षित पाती है तथा तमाम तरह के शोषण अकेली स्त्री पर समाज द्वारा किया जाता है। ऐसी स्थिति में न चाहते हुए भी स्त्री मृत्यु का वरण आत्महत्या के द्वारा करती है, क्योंकि अकेली स्त्री को न तो समाज सम्मान देता है और ना ही वह सुरक्षित है। ऐसी स्थिति में उसके सामने आत्महत्या के अलावा कोई विकल्प नहीं होता, अगर वह समाज से संघर्ष करने का प्रयास करती है तो उसे समाज जीने नहीं देता। मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम में डॉ. दया दीक्षित कहते है, "रेशम और उसके गर्भ के माध्यम से कथाकार ने यह प्रश्न उठाया है कि विधवा नारी को गर्भ धारण करने/ संतान पैदा करने का अधिकार क्यों नहीं? यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि 'विधवाब्याह' पर नहीं बल्कि विधवा द्वारा संतनोपत्ति से जुड़ा यह प्रश्न नारी स्वतंत्र्य से जुड़ा प्रश्न है।"[4]

'चाक' उपन्यास में चित्रित केवल रेशम की ही नहीं बल्कि वह प्रत्येक स्त्री की कहानी है। हर समाज में स्त्री का अधिकार उतनी ही होता है जितनी पुरुष का है। कानूनी तौर पर ऐसा न्याय किसी ने नहीं बनाया है कि स्त्री का अधिकार कम है क्योंकि, वह स्त्री है।प्रत्येक स्त्री भी उतना काम कर सकती है जितना पुरुष करता है। यह एक ऐसा समाज है जहाँ नारी को हमेशा हीनतर समझा गया है। दिनभर नारी अपने पति तथा परिवारों के लिए चाहे जितना भी काम करे सारा बोझ उस नारी के ऊपर सौप देते हैं। यह एक ऐसा समाज है जहाँ नारी को केवल एक भोग की वस्तु समझते हैं पुरुष जैसे चाहता है वैसे उसका शोषण करता है।यहाँ तक कि वैदिक काल में ही नहीं बल्कि आज के वर्तमान समय में भी नारी का शोषण हो रहा

है। भले ही नारी शिक्षा भारत में आरंभ क्यों न हो, नारी शिक्षित हुई, नौकरी करने लगी परंतु नारी शोषण आज भी कम नहीं हुआ है। उसे पिता, पति, पुत्र के अधीन रहने कि व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं आया। नारियों का शोषण प्रमुखत: सामाजिक शोषण में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विजातीय विवाह, विधवा स्त्री का शोषण, बालविधवाओं का शोषण, चरित्र के नाम पर शारीरिक शोषण, बलात्कार, अविवाहित मातृत्व,कामकाजी महिलाओं का शोषण आदि वर्तमान समय में हो रहा है।

ग्रामीण समाज में औरतें आज भी परिवार और समाज के घोर शोषण का शिकार हैं। शोषण होना स्त्री की नियति है यह पुरानी पीढ़ियों की सोच है।उनकी सोच प्रथा एक झटके में बदलना एक कठिन कार्य है। गाँवों में लड़कियों का जन्म पाप माना जाता है। यहाँ तक कि पैदा होते ही लड़कियों को मार दिया जाता है। लड़की और लड़कों के पालन में अनेक भेदभाव होने के कारण लड़की को कम पौष्टिक भोजन मिलता है ताकि वे बचपन में ही उनकी मृत्यु हो जाय।

भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जहाँ पुत्र जन्म होते ही परिवार वाले मिठाइयाँ बाँटते हैं जबकि स्त्री पैदा होती है तो अभिशाप माना जाता है। ये हादसा केवल आदिकाल में ही नहीं बल्कि इस वर्तमान काल मे जहाँ अनेक प□लिखे लोग हैं फिर भी स्त्री शोषण कम नहीं हुआ है। विज्ञान के सहारे से सोनोग्राफी करवाकर लड़की को जन्म होने से पहले ही मार देते है। इसी बात को लेके मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी "ललमनियाँ: तुम किसकी हो बिन्नी?" मे लिखा है "अरी ये बात नाँय, का करें बेचारे! सहारे में तो तीन बच्चों का हुकुम है,अब इसे यहाँ न भेजते तो कैसे करेंगे।" "के बेर तो इसकी माँ ने गरभ गिराये हैं, दुरबीन से दिखवाय लिये! छोरी निकरी सो गिरवाय दई! कसाइन है निरी!"[5] इस कथन को यदि पढ़े या समझा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि बिन्नी की माता को उनके परिवार वाले के कहने से टेस्ट करवाके पता चलता है कि फिर से लड़की हुई है। तब उनके परिवार वाले उसे गर्भपात

करवाने के लिये कहते हैं। यह मान सकते है कि अशिक्षित होने के कारण उनकी सोच और मान्यता गलत है परंतु ऐसे काम पढ़े लिखे लोग के द्वारा भी किया जाता है।

किसी भी समाज में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाज,शिक्षा, संस्कार, धर्म तथा परम्पराएँ परिवार से ही प्रारंभहोता है। समाज में व्याप्त समस्यों और विपत्तियों को सुधारने से पहले हर एक व्यक्ति का फर्ज है कि वह पहले अपने परिवार को सुधारे। तब समाज अपने आप सुधार जाएगा। फिर भी भारतीय परिवार में जहाँ पितृसत्तात्मक पद्धति हैं, वही नारी को दोयम दर्जे पर रखा गया है।

भारतीय समाज में स्त्री को केवल एक भोग कि वस्तु माना गया है जब चाहे उसे उठाके गले लगा लेते है और जब मन नहीं करता तब उसे फेक देतें हैं। आदमी स्त्री को अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है। रिश्तों में आए तनाव के कारण नारी पर समाज में अत्याचार हो रहा है।समाज में स्त्री की हत्या यह साधारण बात बनी है। 'चाक' उपन्यास में रेशम अपनी बहन सारंग से कहती है "सारंग बीबी,बिरादरी भी अजब चीज़ है! मेरे बच्चे की हत्या करवाकर ही इन्हें अपने में शामिल रखेगी! हद है कि नहीं?हत्यारों को माफी है, जनम देनेवाली औरत को नहीं ? मैंने कह तो दिया है, पंचायत जोड़ लो, मैं कह दूँगी, मुझे छेक दो।बच्चा मेरे पेट से पैदा होगा। घरवाले इसमें शामिल ही कहाँ हैं?"[6] ससुराल वाले रेशम से गर्भपात करने को कहते हैं परंतु वह अपने पेट तक भी छूने नही देती। रेशम अपने ससुराल वालों से विरोध करती है। वह कहती है परिवार वाले बस उसे दोषी मानते है और असली अपराधी को माफ कर देते हैं।

यह एक अजीब बात है जिस समाज में नारी की पूजा होती है उसी समाज में स्त्री शोषण रुकने का नाम नहीं ले रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। विश्व में नारी को सबसे पवित्र रूप माँ के रूप में देखा जाता है तथा माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है परंतु

बदलते समय के साथ–साथ संतानों ने अपनी माँ को कम महत्व देना प्रारम्भ कर दिया है तो किसी के लिए उनकी माँ है तो किसी के लिए उनकी बहन, किसी के लिए उनकी दादी है तो किसी के लिए उनकी चाची परंतु सब धन-लिप्सा तथा अपने स्वार्थ में डूबने के कारण नारी की पहचान कम होता जा रहा है। एक स्त्री जो अपना सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलकर चलने की बात करती है उसी स्त्री को समाज के इस पितृसत्तात्मक के कारण पुरुष के साथ कंधा नहीं मिला पाती। पहले पिता कि छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है साथ ही पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है और साथ ही पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसके लिए विवाह के बाद और भी भारी ज़िम्मेदारी आ जाती है। पति, सास–ससूर, देवर और बच्चे कि सेवा तथा देखभाल करना होता है उनके लिए अपने पास समय ही नहीं बचता है ।

प्रत्येक माँ-बाप चाहता है कि उनकी बेटी अपने ससुराल जाके खुश रहे, उनको दुख–दर्द न हो यह कामना देते है परंतु जब स्त्री ससुराल जाती है तो माहौल कुछ अलग हो जाता है। "चाक" उपन्यास में यह चित्रण हुआ है शादी के बाद जब दुल्हन ससुराल जाती है तो वह अपने माता-पिता का घर खुशहाल रहे यह कामना करती हैं। चंदना जब ससुराल जाती है तब नाइन यह कहलवाती है "मेरे माँ- बाप कि दहरी हरी रहे, मेरा गाँव फले-फुले– नाइन ने चंदना से ये दो बोल कहलवाए ।"[7]

स्त्री जब ससुराल जाती है तो सारा काम उनपर सौप दिया जाता है चाहे जितना भी काम हो उसी को ही करना पड़ता है। जितना भी वह कमाए अपनी खुद की जरूरते पूरी करने के लिए भी खर्च नहीं कर पाती। "औरत कल, आज और कल" में आशारानी व्होरा ने नारी गृहस्थ के बारे में इस प्रकार चित्रण किया है "श्रमिक वर्ग की ये महिलाएं घर और बाहर दोनों जगह काम की चक्की में दिन- रात पिसती हैं, उस पर भी जो वे कमाती हैं, अपने ऊपर उसका दसवां भाग भी खर्च नहीं कर सकती क्योंकि पुरुष अपनी कमाई प्राय: अपने पर ही

फूंक देते हैं। घर–खर्च का जिम्मा वे कम ही लेते हैं। घर का और बच्चों का खर्च अधिकतर स्त्री को ही चलाना पड़ता है।"[8]

भारतीय महिलाएँ जितना भी सुखी वैवाहिक जीने की कोशिश क्यों न करे, किसी न किसी प्रकार उनका शोषण किया जाता है जबकि वह घर का सारा काम तथा बच्चों का पालन करने की जिम्मेदारी पुरुष से ज्यादा उनके हाथ मे है। प्रचलित कानून तोड़ना अपराध है। आज अपराध भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बढ़ रहे है। हर एक समाज में सामाजिक नियंत्रण के लिए कानून बनाए जाते है। परन्तु अपराधी खुले आम फिर भी घूम रहे है क्योंकि उसको सजा इसलिए नहीं मिल सकती कि वह किसी अमीर वर्ग से है या फिर वह किसी नेता के रिश्तेदार है। ज़्यादातर ग्रामीण जीवन में कानून लचीले होते है। इसमें नैतिकता का अधिकांश महत्व होता है। अपराधियों को सजा देने का काम ग्रामीण तथा पिछड़े समाज में पंचायत या जात पंचायत करती हैं। 'चाक' उपन्यास में सारंग की बहन जो गर्भवती थी ससुराल वाले उनकी हत्या कर देते हैं। सारंग अपनी बहन के कातिलों को हर हाल में सजा दिलवाना चाहती है। वह अपने पति रंजीत को कहकर उन कातिलों को सजा देना चाहती है परन्तु रेशम के ससुराल अतरपुर गाँव में गुंडागर्दी के लिए प्रसिद्ध थे। उनके खिलाफ गवाही देने के लिए कोई तैयार नहीं होता है। गाँव के लोग सब जानते हुए भी अनदेखा कर लेते है इसलिए पुलिस आत्महत्या का केस बनाती है। यह सब देखकर सारंग कहती है "मेरे ससुर गजाधरसिंह, चचिया सुसर खुबाराम, ग्रांमप्रधान फत्तेसिंह, पुराने जमींदार नंबरदार, ग्रामसेठ भवानीदास, पंडित चरनसिंह से लेकर ऊँची–नीची कौमों के तमाम बूढ़े–बड़े गुमसुम क्यों रह गए? इनकी लाज–लिहाज कम क्यों करते हैं ? हम सारी अवस्था शीश झुकाकर काट देते हैं इनके सम्मान में,क्यों? आज मुझसे भी कोई उत्तर नहीं बन पा रहा,तो ये भी क्या बनाएँगे कि ये लोग हमारी हत्याओं के गवाह नहीं, तमाशबीन बनकर क्यों रह जाते हैं? अन्याय के नाम पर ये गूँगे हो जाने वाले हमारे संरक्षक... उसकी घृणा दर्दनाक हो आई।"[9] सारंग कितना भी

उनसे विनती करके गवाही देने के लिए क्यों न कहे गाँव वाले गवाही देने से इन्कार कर देते हैं। यहाँ तक कि उनका पति रंजीत भी उसे मदद करने के लिए तैयार नहीं था।

शिक्षा : भारतीय लेखकों ने अपने विभिन्न पुस्तकों में शिक्षा के बारे में अपना मत व्यक्त किया है। ज़्यादातर उस पुस्तकों में नारी शिक्षा को लेके जबरदस्त समर्थन किया है। भारत में पुरुष की तुलना में स्त्री शिक्षा का प्रतिशत कम है। कह सकते है की अधिकतर ग्रामीण स्त्री अनपढ़ है जब कि ग्रामीण जीवन में परिवर्तन लाने तथा महिलाओं और पिछड़ो का जीवन स्तर सुधारने के लिए शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता होती हैं। सामाजिक रीति-रिवाजों तथा मान्यताओं के कारण भी भारत में स्त्री शिक्षा कम हो रही है। जन्म होते ही लड़की और लड़के में भेद–भाव होने के बावजूद लड़की को बोझ तथा अभिशाप माना जाता है और लड़के को भगवान की देन मानते है। शहर की तरह गावों में शिक्षा का प्रबंध नहीं है। ग्रामीण माता-पिता अपने बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर भेजना पड़ता है। गरीबी तथा आर्थिक स्थिति बुरा होने के कारण कई ग्रामीण परिवार अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने शहर नहीं भेज पाते। 'चाक' उपन्यास में सारंग भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके पिता कन्या गुरुकुल में रखते है। लोग उससे पूछते हैं कि सारंग कहा जा रही है तो उसने कहा "कन्या गोकुल; उसने ऊँची आवाज में कहा, पिता ने पीछे मुड़कर देखा तो वह हँसने लगी। साथिनों की आवाज उसे पिछियाती रही-कहाँ sss! कहाँ sss! और वह उन्हें बुद्धु समझकर हंस पड़ी।माँ की डांट–फटकार और दुत्कार से बचे रहना बड़ा सुखद लग रहा था।"[10] गावों में स्त्री शिक्षा को महत्वपूर्ण न समझकर जो लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते है तो उसे मूर्ख समझा जाता है। यही हाल सारंग के साथ भी हुआ था जब सारंग कन्या गुरुकुल के लिए तैयारी कर रही थी तब लोग उसे मूर्ख समझकर उस पर हँसने लगते है। परंतु वह हिम्मत न हार कर अपने पिता के कहने पर वह चली जाती है। शिक्षा का उचित प्रबंध गावों में न होने

के कारण लड़कियों को छात्रावास में रखना पड़ता है तथा सारंग को भी कन्या गुरुकुल के छात्रावास में रहना पड़ा।

भारतीय समाज में ज़्यादातर गावों की लड़कियाँ अनपढ़ है। उसी कारण समाज में व्याप्त विभिन्न रूढ़ियों और पुरानी मान्यताओं को छोडने की हिम्मत नहीं कर पाती। जबकि वह उनके सामान्य विकास तथा स्वतंत्र बनने में बाधक है। गाँव के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बच्चे पढ़ने के लिए शहर नहीं भेज पाते।

कई गावों में स्कूल का प्रबंध तो है परन्तु निजी स्कूलों की तूलना में उनकी गुणवत्ता एक प्रमुख मुद्दा है। पैसों की कमी होने के कारण वे लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में नही भेज पाते और शिक्षा के लिए सरकारी स्कूलों पर निर्भर रहते हैं। 'चाक' उपन्यास में भी यह चित्रण किया है "स्कूल, जो तेरे-मेरे ओसारे–बैठक में चलता था, कई वर्ष से सरकारी इमारत में आ गया है। मास्टर आते हैं,नहीं आते हैं, पढ़ते है, यह बहकाते है; लेकिन हर साल लगभग तीस–पैंतीस बच्चे पाँचवीं जमात पास करते हैं।"[11] स्पष्ट है कि गाँव में स्कूल तो है परन्तु मास्टर आने और न आने तथा पढ़ने और पढ़ाने से उनका कोई लेना देना नहीं है।

यह मानते है कि शिक्षा मानव–विकास का एक आधारभूत कारक है। इसीकी सहयता से ही मानव न केवल अपने बारे में ही नहीं बल्कि वह अपने परिवेश, समाज तथा देश के बारे में भी सोचने लगता है। समाज तथा देश में व्याप्त विभिन्न रूढ़ियों और समस्याओं का सामना करने के लिए क्षमता देता है और यहाँ तक कि मानव का जीवन स्तर ऊँचा उठाने में सहायता करता है। शिक्षा एक नकारने वाला कार्य नहीं है बल्कि उसे और ज्यादा लोकसुलभ बनाने का कारक है। महिलाओं के लिए शिक्षा और भी ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज के विभिन्न भेद–भावों का प्रतिरोध कर सकती है तथा समाज सुधार में सहायतक बन सकती है। 'स्त्री अस्मिता के प्रश्न' में सुभाष सोतिया कहते हैं "शिक्षा से ही

महिलाएँ गरीबी, बीमारी, प्रदूषण तथा बढ़ती आबादी जैसी समस्याओं से भी लड़ सकती हैं। अशिक्षा के कारण औरतें उन रूढ़ियों और पुरानी मान्यताओं को छोड़ने कि हिम्मत नहीं कर पाती जो उनके सामान्य विकास और स्वतंत्र बनने में बाधक हैं। मातृत्व को स्त्री के लिए सबसे बड़ा बरदान माना गया है, किन्तु अशिक्षित औरतों का माँ बनने कि अपनी इच्छा पर ही कोई हक नहीं होता। पुरुष ही अपनी इच्छा उन पर थोपते चलते हैं और बेबस स्त्रियाँ यह फैसला तक नहीं कर सकती कि उन्हे माँ बनना है या नहीं बनना है। इसी स्थिति के चलते भारत में जनसंख्या बढ़ती जा रही है और आबादी में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का अनुपात घटता जा रहा है,जबकि विकसित देशों में हालत उल्टी है।"[12]

'चाक' उपन्यास में सारंग शिक्षित होते हुए भी उसे जब भी चिट्ठिया या कुछ लिखने के लिए दिया जाता है तो उसके हाथ-पाँव कांपने लगते है। ऐसा इसलिए होता है कि उसने शिक्षा तो गृहण कर लिया लेकिन उसकी उपयोगिता न के बराबर रही।आत्मविश्वास की कमी के कारण ही जब सारंग को पढ़ने लिखने की बात आती है, वह घबरा जाती है। "गाँव की ज़्यादातर औरतें अनपढ़ हैं। सारंग को कन्या गुरुकुल से ग्यारह कक्षा पढ़ी बताया जाता है, मगर कोई उससे चिट्ठी लिखने के लिए कहे तो उसकी उँगलियाँ और दिल की भीतरी तहें साथ–साथ कांपने लगती हैं।"[13] आज भी भारत की बहुसंख्यक स्त्रियाँ कागजी तौर पर शिक्षित है लेकिन व्यावहारिक स्तर पर वह अशिक्षित ही माना जाएंगी क्योंकि शिक्षा गृहण करने के बाद उनका सम्पूर्ण जीवन घर के काम काज तक ही सीमित रह जाता है। घर की चार दिवारी में उनका संपूर्ण जीवन समाप्त हो जाता है। ऐसे में किसी स्त्री के अन्दर शिक्षा को लेकर डर अगर पैदा हो जाता है तो स्वाभाविक हैं क्योंकि जिस शिक्षा को उसने अपने जीवन में गृहण किया है उसका उपयोग करने का उसे मौका ही नहीं ही मिला। यह सच समाज की बहुसंख्यक स्त्रियों का सच है।

'मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन' में डॉ.व्यंकट किशनरव पाटील कहते हैं, "ग्रामीण समाज में स्त्री शिक्षा का अभाव पाया जाता है। यदि कोई स्त्री पढ़ना चाहती हैं तो उसे समाज की संकुचित मानसिकता का शिकार होना पड़ता है ।"[14] भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा एक चिंताजनक कारक बना है। गावों के माता–पिता स्त्री से ज्यादा पुरुष को पढ़ने भेजते है। पैदा होते ही स्त्री और पुरुष में भेद–भाव करने लगते है । चाहे उनके माता–पिता कितना भी शिक्षित क्यों न हो परंपरा से चली आई इन रूढ़ियों और अंधविश्वास के कारण लड़की को बोझ तथा लड़के को कुलदीपक माना जाता है। ऐसे समाज में लड़कियों का महत्व बिलकुल भी नहीं होती। औरतों को लड़की जन्म देने पर कम महत्व और सम्मान मिलती है। यह भेद–भाव जन्म से लेके लालन–पालन, रोजगार, विवाह तथा मृत्यु तक जारी रहती है ।

विवाह: विवाह समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है। हर एक मनुष्य की जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति विवाह से होती है तथा संतान की ज़िम्मेदारी केवल माँ की नहीं बल्कि पिता पर भी निर्भर होती है। समाज की हर लड़की शादी करके सुखी वैवाहिक जीवन जीना चाहती है। सुखी वैवाहिक जीवन जी के अपनी प्रत्येक अभिलाषाओं को पूरी करना चाहती है। परन्तु यह कह सकता है कि इस संदर्भ में अत्यधिक महिलाओं के लिए विवाह एक कारागार स्थान बन जाता है। जबकि शारीरिक और मानसिक सुख का कार्य विवाह से होता है। 'चाक' उपन्यास में सारंग अपनी बहन के कातिलों को हर हाल में सजा दिलवाना चाहती है। यहाँ तक कि चाहे जितना भी रेशम के ससुरालवाले धमकी क्यों न दे वह पीछे हटने का नाम नहीं लेती। परन्तु उसके पति रंजीत उसे मदद करने को तैयार नहीं थे वह कहते है- "अपनी बिरादरी का रिवाज क्या वे जानते नहीं कि औरत और जमीन बिना मालिक की नहीं रहती ।"[15] स्पष्ट है कि भारतीय समाज में स्त्री अकेले नहीं रह सकती। न चाहते हुए भी उनके पति कि मृत्यु हो वह फिर से विवाह कराया जाता है परन्तु रेशम उनके परिवार के

खिलाफ जाकर विरोध करती है। यह एक ऐसा समाज है जहाँ मानवता से भी अधिक जरूरी नकली प्रतिष्ठा है। जहाँ अपने पति कि मृत्यु होने के बाद स्त्री को अपनी इच्छा से जीने का अधिकार नहीं है। रेशम अपने पति की मृत्यु होने के बाद वह किसी पुरुष के साथ संबंध रखती है और वह गर्भवती हो जाती है। यह सब देखकर उसके परिवार वाले उसे मार डालते है। चाहे जितना भी अपने परिवारों को समझाने का प्रयास करे वह समझने से इंकार कर देते हैं। पति–पत्नी संबंध तथा प्रेम संबंधों में भी चाहे जितना भी पुरुष गलती क्यों न करे सारा इल्ज़ाम स्त्री को ही भुगतना पड़ता हैं। समाज में विधवा का जीना बहुत ही कठिन कार्य होता है। विधवा औरत को शुभ कार्य में सम्मिलित होना तथा साज शृंगार करना मना है। यहाँ तक कि उसे शापित या चुड़ैल कहकर उसे पति कि मृत्यु का जिम्मेदार समझकर उसे यातना भी दी जाती हैं। विधवा औरत इन सब भयंकार यातनाओं को सहने के कारण अपने जीवन को ही समाप्त कर देना चाहती है। यहाँ तक कि वह आत्महत्या भी कर लेती है। उनके लिए चूड़ी, बिछिया तथा रंग- बिरंगे कपड़ों को पाप बताते है। तभी तो उसे सफेद साड़ी मजबूरी में पहनना पड़ता है। इतना ही नहीं उसे रंगीन सपने तथा दिल मोहने वाली बातें सुनना भी प्रतिबंधित है। यह एक ऐसा समाज है जहाँ विधवा औरतों को शारीरिक तथा मानसिक तौर पर पुरुष अपना राज करना चाहता है।

'चाक' उपन्यास में यह दिखाया गया है कि थानसिंह मास्टर अपने बड़े भाई का विवाह उसकी बेटी की उम्र की लड़की के साथ कराता है। भाई की मृत्यु के बाद उससे संबंध रखता है। "अपने सहकर्मी की चिन्ता में धुलनेवाला। मसीहा है थानसिंह मास्टर। घर से लेकार बाहर तक मसीहा...लोग कहते हैं, अपने बड़े भाई के लिए कमसिन लड़की खरीदी थी–चालीस हजार में। भाई मर गया तो उस विधवा को अपनी सेज पर शरण दे दी।"[16] थानसिंह मास्टर उसका शोषण करने लगता है। वह पत्नी की तरह नहीं बल्कि दास की तरह रखते है। 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में मैत्रेयी पुष्पा कहती है "पुरुष अपने से दस वर्ष तो क्या

बीस-तीस वर्ष छोटी लड़की से प्रेम ही नहीं करता, शारीरिक संबंध बनाता है और किसी को कोई ताज्जुब नहीं होता। कोहराम नहीं मचता।वह उस लड़की से शादी कर लेता है तो मामला किसी दफा में नहीं आता, सामान्य माना जाता है।"[17]

भारतीय समाज में विवाह करते समय सबसे बड़ी समस्या दहेज बना है। दहेज प्रथा इसलिए बनाया कि जिससे नये दंपत्ति को नया जीवन बसाने में हर प्रकार का सामान पहले ही दहेज के रूप में मिलता था परन्तु समय के साथ–साथ यह प्रथा कुछ उलट गयी है। वही दहेज जो वरदान था अब स्त्रियों के लिए अभिशाप बन गया है। आज चाहे दहेज के लिए जितना भी ससुराल वाले देने को कहते है, जुटाना ही पड़ता है। यह प्रथा माता–पिता के लिए बोझ बन गया है। दहेज की रकम जितनी बड़ी, उस परिवार का सम्मान भी उतना ही बड़ा,यह संकल्पना रूढ़ होती जा रही है। लड़की की शिक्षा या उसके गुण को प्राथमिकता देने के पश्चात दहेज निश्चित किया जाता है।डॉ.कंचन गोयल कहते है "दहेज प्रथा जब चली होगी तब किसी वत्सल भाव के अन्तर्गत चली होगी। परन्तु आज इस प्रथा ने समाज और इसलिए साहित्य को प्रभावित किया है। पढ़ते सुनते हमारे कान पक जाते हैं कि बेटी के लिए कोई बड़ी चिंता नहीं बल्कि उसके लिए जोड़े दिए जाने वाले दहेज की चिंता है,दुश्चिंता।"[18] दहेज प्रथा आज भी भारतीय समाज में प्रचलित है। कानून जितना चाहे दहेज लेना और देना प्रतिबंधित क्यों न करे, लेकिन यह प्रथा पढ़े–लिखे वर्ग में भी विवाह तय करते समय इसे चर्चा का आवश्यक अंग बना है। परिवारों के बीच कई बार दहेज को लेकर सहमति न होने के कारण रिश्ते भी टूट जाते है और यहाँ तक कि विभिन्न प्रकार से बहूँ का शोषण किया जाता है।

'चाक' उपन्यास के हरप्यारी नाईन विधवा है और वह अपनी बेटी गुलकंदी की शादी की बात करने खुद चली जाती है। लड़के वाले दहेज के लिए बीस हज़ार माँगते है और गुलकंदी दहेज प्रथा के विरुद्ध विद्रोह करती है,वह कहती है"गुलकंदी ने साहस किया, गाल

का दर्द भूलकर बोली,'अम्मा,धूल डाल उस रतनलाल पर।मैं कुँआरी भली।अपनी घर-मड़इया नहीं बेचनी ।"[19] वह इतना की कहकर विसुदेवा से प्रेम विवाह करने अपने घर का त्याग कर देती है तथा वे दोनो अंतरजातीय विवाह करते है ।

दहेज प्रथा समाज के लिए अभिशाप बनता जा रहा है। शिक्षित, अशिक्षित, अमीर–गरीब, उंच्च वर्ग, निम्न वर्ग हर जगह यह अपना मूँह सुरसा की भाँति फैलाते जा रहा है,कोई भी इससे अछूता नहीं है। यहाँ तक कि कई लोग अपने लालच के कारण दहेज लेते- देते हैं। इसी कारण माता-पिता लड़की के पैदा होने से पहले या होने के बाद भी मार डालते है। उनके लिए स्त्री एक अभिशाप मनुष्य बन जाती है जबकि पुत्र जन्म को सुखकर चीज मानते है। दहेज समस्या के कारण आज लड़कियों का जन्म लेने का मतलब है जीवन की कमाई के एक बड़े हिस्से का जाना।विवाह तय करते समय लड़की चाहे कितना भी पढ़ी लिखी समझदार क्यों न हो उसके पिता अपनी औकात के मुताबिक दामाद दूँढ़ते है। जितना उनके दामाद की स्थिति अच्छा हो उतनी रकम दहेज के लिए ससुराल वाले माँगते है। यह कह सकते है कि 'चाक' उपन्यास में हरपरसाद की माँ कहती है। "कहते है डोरिया ने बीस हजार माँगे हैं अपने ब्याह के लिए। थानसिंह को भी पन्हा (जूती) मारी हैं कि 'तुम्हें मेरा हिस्सा खाने की चाट पड़ गई है। पाप में कमाऊँ, मोज तुम मारो ।"[20] स्पष्ट है कि दहेज लेना और देना पाप है। उपन्यास में डोरिया अपनी शादी में दहेज के लिए बीस हजार माँगे है और दहेज का रकम केवल डोरिया ही नहीं बल्कि थानसिंह भी उसका फायदा उठाना चाहता है ।

'मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण' में डॉ.कंचन गोयल कहते हैं, "दहेज समाज में एक कुरीति के रूप में भयानक रूप लेता जा रहा है। आर्थिक तंगी से जूझते माँ-बाप या दहेज हैं अथवा दहेज न देने पाने की स्थिति में स्वयं आत्महत्या कर लेते हैं या उनकी लड़की खुदखुशी कर लेती है या फिर मजबूरन गलत राह में भटक जाती है। जिसका दोष लड़कियों को दिया जाता है।परन्तु असली समस्या दहेज है ।"[21] दहेज एक ऐसी कुप्रथा है जिसके कारण

कई विवाह नहीं हो पाते है। विवाह में दहेज प्रमुख होने के कारण कई परिवार में अत्यंत समस्या पैदा हो जाता है। ज़्यादातर गरीब बेटी के लिए विवाह एक नरक संस्था बन जाता है। प्रत्येक माता–पिता चाहते है कि उनकी बेटी एक अच्छे–खासे खानदान में उनका विवाह हो जाए परन्तु उसके लिए जितना ससुराल वाले माँगते है उतना दहेज के लिए देना पड़ता है ताकि वह बेटी सुखी वैवाहिक जीवन जी सके। इसलिए माता – पिता को अपनी बेटी का विवाह करने के लिए दहेज जुटाने की चिन्ता रहती हैं। यह मान सकता है कि नारी शोषण का आरंभ ही दहेज है। ससुराल वाले इज्ज़त के नाम पर दहेज माँगते है।वर्तमान समय मे विवाह एक धन कमाने का प्रक्रिया बन गया है। चाहे जितना भी कानून दहेज प्रथा रोकने का प्रयास क्यों न करे परंपरा से चली आयी, यह प्रथा परिवर्तित नहीं हो सकती।

स्त्री-स्त्री संबंध : स्त्री शोषण के संदर्भ में स्त्री–स्त्री संबंध भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। स्त्री –स्त्री संबंध में सबसे बड़ा संबंध सास–बहू और माँ-बेटी का संबंध पाया जाता है।जब बेटी दूसरे परिवार में अपना घर बसाने जाती है तो विभिन्न प्रकारों से उसका शोषण किया जाता है। सास-बहू का संबंध ठीक न होने के कारण बहू को सास परेशान करती है। 'चाक' उपन्यास में रेशम के पति की मृत्यु होने के बाद सास रेशम को डोरिया के साथ फिर से विवाह करने को कहती है परन्तु रेशम सास की बातों को टाल देती है। रेशम कहती है "माइयों! तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो! मेरे चालचलन की झंडी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो। आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था? अब उसकी बाँह गह ले। मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होती कि पूत की उजड़ी जिन्दगी बस गई। पर मेरा फजीता करने पर तुली हो।"[22] रेशम चाहती है कि उसके पति के अलावा किसी और पुरुष के साथ विवाह नहीं करनी है। भले ही वह गर्भवती क्यों न हो। वह अपने बच्चे को जन्म देना चाहती है। लेकिन रेशम का

परिवार अपनी बदनामी के डर से कि एक विधवा स्त्री कैसे बच्चे को जन्म देगी ? तथा बच्चे के जन्म लेने पर समाज क्या कहेगा ? इस सोच के कारण रेशम कि हत्या कर देती है।

भारतीय समाज में स्त्री शोषण की परंपरा बहुत पहले से चली आ रही है। एक स्त्री ही अगर स्त्री का शोषण सदियाँ से करती रही है तो इसके पीछे जो मानसिकता काम करती है वह है पितृसत्तात्मक सोच जिससे प्रभावित होकर सास या कोई भी स्त्री एक स्त्री का शोषण करने के लिए बाध्य है।

'स्त्री अस्मिता के प्रश्न 'में सुभाष सेतिया कहते है, "रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसी मिसालों की कमी नहीं है जो यह आभास देती हैं कि एक औरत दूसरी औरत को सुखी नहीं देख सकती। जन्म से लेकर मृत्यु तक के विभिन्न पड़ावों में औरतों द्वारा ही औरतों की रह में कांटे बिछाए जाने के अनेक उदाहरण गिनवाए जा सकते है।"[23] स्पष्ट है कि जन्म से लेके मृत्वु भले ही एक स्त्री होते हुए भी वह किसी न किसी दूसरी औरत का शोषण करती है। माँ जब बेटी जन्म देती है तो सबसे ज्यादा सुख:दुख का अनुभव करने वाली स्त्री ही है।बेटी जन्म होने को अभिशाप मानकर उसकी हत्या करनेवाली उसकी माँ,ताई,दादी आदि स्त्री ही है।स्वयं स्त्री होते हुए भी दूसरी स्त्री का शोषण क्यों करती है? यह ठोस प्रश्न सुभाष सेतिया ने अपने पुस्तक 'स्त्री अस्मिता के प्रश्न' में पूछता है "औरत ही औरत की दुश्मन?"।[24]

स्त्री- पुरुष संबंध : परिवार में स्त्री का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पुरुष का है। परन्तु पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण समाज में स्त्रियों को कम महत्व दिया जाता है। गाँव में यह कहावत प्रचलन में है 'मांस खाओं, हाड़ गले में मत लटकाओं' कहा जा सकता है कि यह कहावत पुरुष की अपनी सुरक्षा का सूत्र है। परन्तु यह नियम वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि सदियों पहले से जारी है। भारतीय समाज में लड़कियों का जन्म अभिशाप माना जाता है और पुरुष के जन्म में मिठाइयाँ एक दूसरे को बाँटते है। कई हद तक यह समझ सकता है कि यह

सोच अज्ञानता के कारण है परन्तु आज के समाज में अज्ञानी ही नहीं बल्कि पढ़े–लिखे लोग भी इसमे शामिल है। 'चाक' उपन्यास में रेशम की हत्या उनके ससुराल वाले करते है परन्तु सारंग हर हाल में उनकी बहन रेशम के कातिलों को सजा दिलवाने की कोशिश करती है। लेकिन गाँव वाले उसका साथ नहीं देते यहाँ तक कि उसके पति से न सुरक्षा मिली है न सहारा और न ही साधन। औरत कितना भी अपनी सुरक्षा के लिए विरोध क्यों न करे पुरुष वर्ग की व्यवस्था के कारण वंचित रह जाती हैं। 'चाक' उपन्यास की सारंग अपने पति से कहती है "मैं यह जानती हूँ कि औरत के मरने का गम ज्यादा देर भी नहीं मानते। उम्र भर तो कौन मनाए ?"[25] स्पष्ट है कि भारतीय समाज में स्त्री को पुरुष से कम महत्व देते है।

यह कहते हैं कि हम इक्किसवी सदी में पहुँच गए हैं और महिला सशक्तिकरण चरम सीमा पर है तथा भारतीय समाज में महिलाओं का अधिकारी बढ़ने लगा है। ऐसा लगता है जैसे सब कुछ निर्धारित प्रारूप के आधार पर हो रहा हैं। परन्तु एक चीज सदियों से नहीं बदल रहीं है वह है स्त्रियों के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण। इस बिन्दु पर चाहे जो भी तर्क-वितर्क क्यों न हो परन्तु यह अंतिम सत्य वही है जो हमेशा से चला आ रहा हैं। समाज में स्त्रियों के लिए विकास लाने के बजाय विभिन्न प्रकार से उनका शोषण करते है। वैवाहिक विधान में अधिकारों की पूरी फेहरिस्त पति के हिस्से में आती है तथा कर्तव्यों की नैतिकता पत्नी के कंधों पर लाद दी जाती है। परन्तु यह व्यवस्था आज भी हमारे समाज में पाई जाती है कि पुरुष राजा कि तरह राज-काज करे और स्त्री घर में दासी बनके पुरुषों कि जरूरतें पूर्ति करे। स्त्री–पुरुष का संबंध प्रेमी-प्रेमिका नहीं बल्कि मालिक और दास कि तरह बन जाता है। 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में मैत्रीयी पुष्पा कहती है "हमारे समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों की नैतिकता विवाह संस्था तय करती है और पारिवारिक बड़ेबंदी उसे पुष्ट करती है। मालिक और नौकर जैसा चलन वैधता पाता है।"[26]

भारतीय समाज में नारियों का शोषण ज़्यादातर तब शुरू होती है जब स्त्री अपने ससुराल जाती है। समाज में स्त्री–पुरुष संबंध के विविध प्रकारों में पति–पत्नी, भाई-बहन, बाँप–बेटी,आते है। इनमे से सबसे प्रमुख पति-पत्नी का संबंध कह सकते हैं क्योंकि पति-पत्नी के संबंधों से ही परिवार बनता है। प्रत्येक समाज में स्त्री–पुरुष के संबंध में अनेक प्रकार की सीमाएँ पायी जाती है। 'चाक' उपन्यास की रेशम के पति की मृत्यु के बाद वह गर्भवती हो जाती है। ससुराल वाले केवल रेशम को ही दोषी मानकर उसकी हत्या कर देती है। यह एक ऐसा समाज है जहाँ केवल स्त्री को ही दोष दिया जाता है जबकि उसमें पुरुष भी शामिल है। रेशम सारंग से कहती है " बीबी, वे लोग मुझे देबी बनाते हैं तो कभी राच्छासी , देबी तो पत्थर की होती है,मैंने कह दिया। उसका ठौर मंदिर में होता है और राच्छसी लोगों का सत्यानाश करती है।मैं दोनों की तरह की नहीं। हाड़-मांस की बनी लुगाई,जिसके पेट में बालक है,उस पर यह जो जल-दूध दारेंगे या फिर...मैं कहती हूँ तुम मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मेरी छतियों का दूध मत सुखाओं। अपनी नांद पर चरती गाय–भैंसों से भी गई–बीती करके मान रहे हो मुझे। रंडी सास अपने पूत को तो रोटी है,और मेरे बालक की हत्या पर उतारू है।"[27] ससुराल वाले रेशम को बच्चे गिराने का दवा देने का प्रयास करते है परन्तु वह मानने को तैयार नहीं थी। ससुराल वाले रेशम पर क्रोधित होकर उसे मार देते है। 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में मैत्रीयी पुष्पा कहती है "गृहस्थी धर्म की नैतिकता ऐसी बेरहमी अख़्तियार करती है कि स्त्री पत्नी के कुछ नहीं रह जाती। माँ बनती है तो तभी तक मान्यता पाती है, जब तक कि किसी पुरुष की पत्नी होकर माँ बने। बिना पति के उसका माँ होना भी अवैध और अनैतिक है।"[28]

समाज में स्त्री चाहे जितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो फिर भी आज तक उनका शोषण कम नहीं हो रहा। पुरुष प्रधानता उन पर अधिक हावी है। भले ही देश के संविधान में तथा कानून में और आदर्श कथाओं में स्त्री-पुरुष समानता क्यों न दिखाई दे। किसी न किसी

हद तक तो इसका प्रभाव मिलता है परन्तु यह मानसिकता आज भी कहीं न कहीं जीवित हैं। स्त्री–पुरुष समानता तब होगा जब पुरुष स्त्री को अपने बराबर मानने को तैयार होग।

(ख)चाक में चित्रित सामाजिक विषमता:

ग्रामीण जीवन : मैत्रेयी पुष्पा ने अधिकतर उपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन को चित्रित किया है। जहाँ ग्रामीण परिवार खेती पर निर्भर करके अपने तथा परिवार वालों का पेट पालते है। प्रकृति की गोद में जीनेवाला ग्रामीण परिवार सादा और सरल जीवन जीता है। ग्रामीण जीवन में अज्ञान, अशिक्षा, कर्ज का बोझ, स्वस्थ्य सुविधाओं की कमी, अंधविश्वास, रूढ़ि–परंपरा तथा महिलाओं का शोषण अधिक देखा जाता है। गावों में स्त्री शिक्षा कम होने के कारण स्त्री को कम महत्व देते है। संयुक्त परिवार ग्रामीण जीवन का एक शक्तिशाली आधार है। क्योंकी ज़्यादातर ग्रामीण परिवार संयुक्त में रहते है। 'चाक' उपन्यास में रंजीत,फत्तेसिंह प्रधान, साधजी,नंबरदार, लाला भवानीदास आदि के संयुक्त परिवारों का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। डॉ.दया दीक्षित 'चाक' उपन्यास पर प्रकाश डालते हुए कहते है "चाक में विकास के नाम पर भी कथाकार की पूरी नजर है।... रंजीत चूँकि पढ़ा-लिखा प्रगतिशील खेतिघर है। अत: वह इस घालमेल से चिंतित है।"[29]

अधिकांश ग्रामवासी किसान होते हैं। गाँव के परिवार कृषि पर ही निर्भर करते है। 'चाक' उपन्यास में खेती का वर्णन इस प्रकार प्रकार किया है, "खेतों में अच्छी पैदावार होती है। कभी हरी रंगत से नहाए पसार के पसार, कभी सुनहरी वालों से भरे चक। सरसों, अलसी, मटर, चना और अरहर के पीले, गुलाबी, बैंगनी और चितकबरे फूलों के अलावा गेंदे का फूल हो लोगों ने उगते देखा है यहाँ।"[30] स्पष्ट है अतरपुर गाँव के अधिकतर परिवार कृषि पर ही निर्भर रहते है।

यदि यह देखा जाए तो भारतीय समाज के प्रत्येक परिवार अपने पूर्वज से प्राप्त कृषि पर निर्भर करते हैं। गावों में शहर की तरह व्यवस्था उपलब्ध न होने के कारण किसान माता-पिता अपनी तथा परिवार की जरूरते पूरी करने के लिए खेती–बारी का काम करते है। गरीबी और आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद गाँव के लोग अनपढ़ होते है। भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक के कारण नारी आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर रहती है। ग्रामीण परिवार को घर चलने के लिए माता–पिता के साथ काम करना पड़ता है। जितना पुरुष खेती में काम करता है उतना नारी को भी काम करना पड़ता है। ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न प्रकार के बंधनों से बांध दिया जाता है। ताकि वह घर से बाहर न निकल सके, वह किसी से न मिल सके बस उसे घर का और परिवार का काम करने के लिए रखते है। उसे नैतिकता तथा पतिव्रता आदि में जकड़ दिया जाता है। 'चाक' उपन्यास में चरनसिंह बौहरे कहता है "लोग मानें न मानें, स्त्री आदमी से दोगुना खाती है, चार गुनी लज्जाशील,छ: गुनी हिम्मती और आठ गुनी कामिन। तभी तो इसे गहनों से बाँध–छेदकर रखा जाता है। पर यह रंजीत की लुगाई आदमी से कितनी गुनी बलवान है कि बाँधने–छेदने पर भी इतनी खोफनाक!"[31] स्पष्ट है कि कई औरतें पुरुष के बने हुए नियमों को तोड़कर उस पिंजड़े से आजाद होने कि कोशिश करती है तो पुरुष वर्ग उसे प्रताड़ित करता है। गावों में लड़कियों का स्वतंत्र होना असंभव है। उसे किसी न किसी प्रकार के बंधनों से बाँध दिया जाता है। समाज में उनके लिए जगह नहीं छोड़ते बल्कि उसे दबके रहना पड़ता है।

यह मान सकते है कि ग्रामीण महिलाएँ चौका–बर्तन और बच्चों को पालने के साथ–साथ पशु का पालन और ईंधन बटोरने तथा पानी लाने और खेत खलिहान में काम करने लगती हैं। ग्रामीण समाज में आर्थिक स्थिति अच्छी न होने की वजह से महिलाएँ अपने पति पर निर्भर रहती है घर का सारा काम करने के साथ-साथ खेती–बारी का काम भी संभालती है। ग्रामीण महिलाएँ प्रेम के बदले शोषण का शिकार बनती हैं। उन्हें तमाम शोषणों

को झेलना पड़ता है जैसी कि उनकी यही नियति हो। बिना कुछ न कहके चुप–चाप उन शोषणों को हजम कर लेती है चाहे समाज का हो या परिवार का।वह जितना भी अपनी परिवार के लिए दिन–रात करके काम क्यों न करे पुरुष वर्ग ने बुरी तरह से उनका शोषण किया है तथा हर कार्यों में उसे दबके रहना पड़ता है। स्त्री के लिए घर चलाना उनका मुख्य कर्तव्य मानते हैं परन्तु वह घर के साथ-साथ खेती का काम भी कर लेती है। आशारानी व्होरा ने अपनी पुस्तक 'औरत कल, आज और कल' में इस प्रकार का वर्णन किया है "इस तरह सुबह तड़के से रात तक,बिना विश्राम,निरंतर काम के साथ कुपोषण और अधिक संतानोपत्ती के कारण वे असमय ही बूढ़ी होने लगी हैं। अधिक संतान व कुरीतियों के कारण उनका स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है और कार्यक्षमता धीरे–धीरे घटती जाती है। इसलिए भी खेतिहर मजदूर स्त्रियों को पूरी मजदूरी नहीं मिल पाती।"[32] ग्रामीण स्त्रियों को अन्य कामकाजी स्त्रियों की तरह छुट्टी या आराम करने का मौका भी नहीं मिलता। मजदूरी कटने के भय से गर्भवस्था के अंतिम दिनों तक भी मजदूर स्त्री काम करती हैं। चाहे मौसम गर्मी हो या सर्दी, वर्षा के दिन में भी बधुआ मजदूरों की तरह काम करना पड़ता है।

गावों में कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, दहेज प्रथा, नशाखोरी तथा बंधुआ मजदूरी अधिक प्राप्त होने के बावजूद ग्रामीण महिलाएँ पारिवारिक और सामाजिक स्तर से दबी–दबी रहती है। गावों की महिलाएँ अनपढ़ होने के कारण अत्याचार और शोषणों से बचने के लिए सरकार ने जो कानून बनाए हैं वह उन्हें चेतना के आभाव में भी समझ नहीं पाती, इसी कारण उन्हे जागरूक बनाना अत्यंत आवश्यक्त है। 'स्त्री अस्मिता के प्रश्न' में सुभाष सेतिया कहते हैं "ग्रामीण महिलाओं को जागरूक तथा साहसी बनाने में दो तत्व सबसे अधिक सार्थक भूमिका निभा सकते हैं। ये हैं–शिक्षा और स्वालंबन।"[33] शिक्षा और स्वालंबन ये दोनों तत्व महिलाओं में न केवल स्वाभिमान और आत्मविश्वास पैदा करते हैं अपितु उन्हें हर दृष्टि से सशक्त और अधिकार सम्पन्न बनाने में भी सहायक हैं।

बेरोजगारी : भारतीय समाज में व्याप्त सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी भी हैं। मनुष्य जितना भी पढ़े–लिखे क्यों न हो सरकारी व्यवस्था सही न होने के कारण वह सरकारी नौकरी में प्रवेश नहीं कर पाते। ग्रामीण समाज में यह अधिक पाया जाता है। गावों में सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियाँ ऐसी है कि वहाँ उत्पादन के साधन का काफी अभाव है। रोजगार नही के बराबर है और जो पढ़े–लिखे भी है, उन्हें नौकरी नहीं मिलते। उनके लिए बेरोजगारी अभिशाप बन गया है। इसके बावजूद आर्थिक विपन्नता बढ़ी है। समाज में औद्योगीकरण ने गावों की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डाला है और शहर के विकास के लिए गावों का शोषण बढ़ गया है। डॉ.दया दीक्षित ने 'चाक' उपन्यास पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं "दरअसल रंजीत के चरित्र में आम भारतीय सामंती पुरुष के संस्कार हैं। एक तरफ उस पर प्रगतिशीलता और आधुनिकता का रंग चढ़ा है, तो दूसरी तरफ उस कहीं-न-कहीं ग्राम प्रधान बनकर अपनी बेरोजगारी कुंठित मानसिकता से मुक्ति की कामना भी ।"[34]

आर्थिक विप्पन्नता का एक और दूसरा कारण है धर्मांधता। भारतीय समाज में यह अधिक समस्या पैदा करने वाला कार्य है। 'चाक' उपन्यास में भी यह चित्रण किया है, गाँव में नए व्यवसाय स्वीकार न करने के कारण आर्थिक विप्पन्नता दिखाई देती है। रंजीत अतरपूर गाँव में मुर्गीपालन का व्यवसाय करना चाहता है। परंतु गाँव के लोग ताने मारकर उनका मजाक उड़ाते है- "लोग हँसी उड़ाने लगे–क्यों रंजीत, मुर्गी पंद्रह बच्चा देती है, और सुअरिया? सूअर पालने में और ज्यादा फायदा। भाई, तू तो भवानीदास से लोगों का फंद छुड़ानेवाला कुबेर हो जाएगा। च च च ऐसी धरमभीरिष्टि बातें करते तेरी जीभ नहीं लड़खड़ाती? संस्कार घोलकर पी गया! पढ़ाई का यह मतलब?"[35] रंजीत पढ़े–लिखे होने पर भी गाँव में सरकारी नौकरी नहीं मिल पा रहा था। वह खुद से व्यापार करना चाहा परंतु गाँव के लोग उनपर हँसकर उनका मजाक उड़ाने लगते है। धार्मिक अंधविश्वास के कारण एक शिक्षित युवक को गाँव में मुर्गीपालन करने की अनुमती नहीं मिली ।

ग्रामीण समाज में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। किसान को आर्थिक विपन्नता के कारण अपने बर्तन बेचने पड़ते है- "सबकुछ छोड़कर खोए का व्यापार किया था- इस गाँव की बदौलत अंत में कढ़इया–कलछी भी बेचनी पड़ी। लोगबाग ठहरे फालतू। दिन भर बट्टी पर बैठे रहते, गप्पें मारते। चखते–चखते दो □ई किलो खोया साफ कर जाते।"[36] रंजीत के लिए गाँव में व्यापार करने का कोई माहौल ही नहीं बचा।

'औरत कल, आज और कल' में आशारानी व्योरा कहती है "ग्रामीण धंधो मे ह्रास और कमाई के लिए पुरुषों के शहर चले जाने से ये स्त्रियाँ एक ओर तो रोजगार में अकेली छुट जाने से ससुरालियों के दबावों को झेलने के लिए विवश भी।"[37] आर्थिक समस्या के बढ़ने कारण भारतीय ग्रामीण समाज में अधिकांश परिवार गरीबी का शिकार बने है। महिला शिक्षित होकर नौकरी के सपने तो देखती हैं परंतु पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में उसे उसे नौकरी नहीं करने दी जाती है। आर्थिक दृष्टि से महिलाएँ पुरुष पर निर्भर करती हैं। ग्रामीण महिलाएँ खेती से जुड़ी रहने के बावजूद उनके पास पर्याप्त धन नहीं होता।

डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील ने 'मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन'में कहते हैं, "स्त्री आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं है। परिवार में उसे पति पर निर्भर रहना पड़ता है। परिवार को चलने के लिए उसके कष्ट तो होते हैं लेकिन पुरुष की निगाह में कोई महत्व नहीं रखते हैं। नौकरी करने वाली स्त्री भी आर्थिक परावलंबन में ही रहती हैं,पति के पास सभी पैसे लाकर देती है। और जीवन की छोटी–छोटी जरूरतें पूरी करने के लिए पति के पास अपना हाथ फैलाती है।"[38] परिवार में स्त्रियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है परन्तु घर चलना तथा बच्चों को संभालने के लिए धन चाहिए। नौकरी करने वाली स्त्री भी अपना वेतन पति के पास लाकर देती है। धन के अभाव में एक पुरुष अपराध करने के विवश है तो कुछ मजबूर स्त्रियाँ अपना तन बेचकर धन प्राप्त करती हैं।

जातिगत व्यवस्था : भारतीय हिन्दू समाज में जाति व्यवस्था बहुत ही जटिल रूप में विद्यमान है। 'चाक' उपन्यास में जातिगत व्यवस्था का चित्रण हुआ है, "गाँव में आजादी के दस के दस वर्ष बाद तक जातिविधान अपने–अपने कर्मविधान से जुड़ा रहा। मसलन चमारों ने मारे पशु डाले, जूते बनाए, तेलियों ने कोल्हू चलाया, गड़रियों ने भेंड़े पालकर ऊन और दूध दिया, कुम्हारों ने घड़े, दोहनी, शाकोरे देकर किसानों की पूर्ति की, नाइयों ने सेवा टहल, हजामत, दौना, पत्तल और बुलावे का काम संभाला। सक्का लोग द्वारों पर मशक से छिड़काव करते थे और छोटी जोतवाले किसान साग-सब्जी उगाकर गाँव की जरूरत पूरी कर देते थे। बदले में बड़े किसान इन लोगों, गेहूँ,जौ, चना,मटर, सरसौ, दालें और भैसों का दूध–घी देते थे ।"[39] इस प्रकार अतरपुर गाँव के अलग–अलग जातियों ने अपना विशिष्ट धर्म निरूपित किया है ।

जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता पायी जाती है। जो समाज के लिए अभिशाप है। अस्पृश्यता का उदाहरण 'चाक' उपन्यास में आया है। "अंगरेज लोग क्या जाने पत्रा–पंचायत की बातें ? उनके तो छूने से अपवित्र हो जाती हैं, हमारे धर्म की किताबें। ज़ुलम तो अपने गाँव में हो रहा है। आदमी संस्कार घोलकर पी गया। धरती रसातल को चली जाय, इनकी बला से। मुझे अपनी तौहीन बर्दाश्त है, अपने पत्रा की नहीं ।"[40] चरणसिंह बौहरे ब्राह्मण है उसे अपना अपमान बर्दाश्त है किन्तु उसके पोथी पत्रा को स्पर्श मान्य नहीं है ।

जाति व्यवस्था में छुआछूत सबसे बड़ा अभिशाप है। धर्म और संस्कार के नाम पर जातियता के बंधन समाज में कठोर हुए है 'चाक' उपन्यास में कुंवरपाल चमार जाति का है और वह बड़ी जोरदार से छुआछूत का विरोध करता है।जब कुंवरपाल स्कूल में था तब वह अपनी रोटी ऊँची जाति के बालकों को खिलता था।जब वह बड़ा होने पर चुनाव के लिए खड़ा हुआ है, प्रधान फत्तेसिंह को उसके घर जाना पड़ता है। गाँव के लोग इसे देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं और कहते है अब फत्तेसिंह उसके घर चाय पानी पिएगा। ग्रामीण क्षेत्र में

छुआछूत का जहर कितना भरा हुआ है, कितनी कट्टरता से इसका पालन किया जाता है यह चित्रण उपन्यास में किया जाता है। उपन्यास 'चाक' की सारंग जो जाट जाति की महिला है वह चट्टा पर्व के दिन पर कुम्हार जाति के शिक्षक श्रीधर का पाँव छूती है, "श्रीधर के पास बढ़ती हुई वह घूँघट में मुस्कुराई। फिर पर्दा तनिक ऊँचा किया। थरथराती उँगलियों से हल्दी का टीका लगाया। दो चावल चिपका दिए हल्दी के उपर। हाथ में नोट थमाने लगी। वे 'अरे अरे' करके खड़े हो गए।लेकिन उसने हाथ में जबरदस्ती नोट ठूँस दिया।फिर न जाने कौन सी लहर आई, कौन सी हिलोर उठी कि किनारे टूट गए।सारंग श्रीधर के पाँवों पर झुक गई और चरण छू लिए अपना पल्ला डालकर!"[41] उपन्यास की सारंग सवर्ण जाति की है और श्रीधर निम्न वर्ग की। परंतु सारंग समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का विरोध करके,कुम्हार जाति का श्रीधर मास्टर का पाँव छूती है। डॉ.कंचन गोयल ने मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास पर प्रकाश डालते हुए कहते है, "समाज में जाति प्रथा और छूआछूत दूर करने में नारी की मुख्य भूमिका है।मैत्रेयी की नारी छूआछूत का विरोध ही नहीं करती अपितु वह समाज से भी टकराने की हिम्मत करती है ।"[42]

जाति व्यवस्था भारतीय समाज में आज भी पायी जाती है। यह व्यवस्था कितना भी मिटाने की कोशिश क्यों न करे जन्म से ही प्राप्त होने के कारण पूरी तरह से मिटाना एक कठिन कार्य बन गया है। सरकार तथा समाज सुधारकों ने इसे मिटाने का प्रयास तो किया है और थोड़ी बहुत सफलता भी मिली हैं। परंतु यह व्यवस्था आज भी पायी जाती है। जातीय व्यवस्था केवल ग्रामीण में ही नहीं बल्कि शहर के पढ़े–लिखे लोगों के बीच में भी पायी जाती है। धर्म व्यवस्था के कारण जाति व्यवस्था का निर्माण हुआ है ।

हमारे समाज में जाति गुण या कर्म से न होकर जन्म से ही पहचानी जाती है। उनके पास कितना भी प्रतिभा क्यों न हो जाति का अभिशाप व्यक्ति को ही सहना पड़ता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में कई जगह में जाति व्यवस्था के बारे में चित्रित किया है। उनके

अनुसार समाज में सिर्फ दो ही जातियाँ है वह है 'स्त्री और पुरुष'। जातियता के तौर पर स्त्री की अपनी जाति नहीं होती बल्कि वह एक प्रकार की जाति है। जिसके साथ ब्याही जाती है उसकी जाति भी प्राप्त होती है।

भारतीय समाज के जाति व्यवस्था में नारी का स्थान अत्यंत पिछड़ा है। कहते है नारी की कोई जात नहीं होती। अंधविश्वास तथा छुआछूत जैसी कुरीतियाँ समाज में प्राप्त होने के बावजूद अस्पृश्य समझी जानेवाली जातियों को मंदिर में भी प्रवेश नहीं होता। डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील ने 'मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन' में कहते है "जाति व्यवस्था के कारण छुआछुत की परंपरा शुरू हुई है। हमारे देश में अस्पृश्य समजी जानेवाली जतियों को मंदिर में प्रवेश नहीं था। अछूत अपने आपकों पूर्व जन्म का पापी मानकर मंदिर में जाने का प्रयान्त भी नहीं करते थे। अगले जन्म में सुख की कामना करते हुए सवर्ण (ब्राह्मणों) की सेवा किया करते थे। निम्मवर्ण की स्त्रियों को मंदिर में प्रवेश नहीं था।"[43] स्पष्ट है कि भारतीय समाज में जाति व्यवस्था के तौर पर भी नारियों का शोषण होता है।

वर्ग संघर्ष: वर्ग व्यवस्था पूरे विश्व में आज भी पायी जाति है। वर्ग व्यवस्था जन्म से निश्चित नहीं होती बल्कि आर्थिक स्थिति तथा सम्मान से तय होता है। भारतीय समाज में निम्म, मध्यम तथा उच्च वर्ग ये तीन प्रकार के व्यवस्था पाये जाते हैं। धन को आधार मानकर गरीब और अमीर,तथा शिक्षा के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित वर्ग होते हैं। व्यवसाय जाति और व्यवसाय प्रतिष्ठा पर ऊँच–नीच वर्ग की भावना होती है। समाज में निर्धन लोग धनी वर्ग के लोगों को देखकर हीन भाव का अनुभव करते हैं। इससे वर्ग चेतना जाग्रत होती है। सामाजिक संबंधों में सीमाएँ आती है। "वास्तव में पूँजी के प्रभुत्व के कारण जब लोगों की स्थिती और हितों में समानता हो जाती है,तो वे 'अपने आप में वर्ग हो जाते हैं।लेकिन जब इनमें राजनीतिक चेतना और पारस्परिक एकता का संचार होता है,तभी ये 'अपनी दृष्टि में वर्ग' बनते हैं।"[44] जाति व्यवस्था की तरह विभिन्न वर्ग उठने–बैठने में भी दूरी रखते हैं।

जाति व्यवस्था कर्म या गुण के आधार पर परिवर्तित नहीं होती क्योंकि यह जन्म से ही प्राप्त होती है परंतु वर्ग व्यवस्था व्यक्ति की परिस्थिति पर निर्भर करता है। यह कर्म और गुण के आधार पर वर्ग में परिवर्तन होता है। यह कह सकते है कि जाति व्यवस्था स्थिर है जबकि वर्ग व्यवस्था अस्थिर है।

'चाक' उपन्यास में भी वर्ग व्यवस्था का चित्रण हुआ है।आर्थिक परिवर्तन के साथ ऊँच-नीच में कमी आ रही है। गाँव के गरीब व्यक्ति धन बहुत कुछ इकट्ठा होने के कारण ऊँचे वर्ग में बदल गए हैं। यहाँ तक कि ग्रामीण लोगों का शहर से संपर्क होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होने लगी है। निम्म वर्ग के लोग भी अपने आपको ऊँचा मानने लगे हैं। 'चाक' उपन्यास में नाई का बेटा हरपरसाद कहता है "अब हम वे नहीं रहे कि जिसके बाप को घुड़चढ़ी के बखत बड़ी कौम ने घोड़ी के ऊपर से खींच लिया था-नाऊ होकर हमारे सामने घोड़े पर चढ़कर जाएगा? बागा पकड़कर धूल में रगड़ दिया था। अब तो हम दिखा देंगे कि नानुआँ के बेटा का जल्वा देखो।"[45] हरपरसाद वर्ग भेद का विरोध करने लगता है।

अंधविश्वास: भारतीय समाज में अंधविश्वास यह देखा जाए तो अधिकांश लोग कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह अंधविश्वास के शिकार है। आज के सभ्य समाज में भी यह अंधविश्वास विभिन्न जगहों पर पाई जाती है। ग्रामीण समाज में अनेक प्रकार के रीति-रिवाजों पर विश्वास करने के बावजूद अन्य प्रकार का अंधविश्वास पाई जाती है। व्यक्तिगत और पारिवारिक तथा सामूहिक और सामाजिक रीति रिवाज समाज में प्राप्त होने के बावजूद असभ्य तथा सभ्य समझी जानेवाली जातियाँ भी अंधविश्वास का पालन करती है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को यदि देखा जाए तो अधिकांश लोग किसी न किसी प्रकार का अंधविश्वास का शिकार बने है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में समाज में प्राप्त अनेक प्रकार के अंधविश्वासों पर प्रकाश डाला है। "अगर किसी को भूत या प्रेत लग जाये तो वट वृक्ष के नये पत्ते (टूसे) को उसके कान में रख देने से भूत भाग जाता है। आग में मिर्च

डालकर उसे सुंघाने से भी भूत पलायन कर जाता है। कभी-कभी कोई डायन (जादूगरनी) किसी नये बर्तन में योग-टोन करके उसे चौराहे पर रख देती है। जो कोई उसका स्पर्श कर लेता है,उसका या तो बड़ा अनिष्ट हो जाता है,या उसका प्राणांत भी हो जाता है।"[46] ऐसे कई तमाम अंधविश्वास भारतीय समाज में पाई जाती है। अंधविश्वास जैसे मंत्र-तंत्र, जादू-टोना, दुआ–ताबीज, झाड़-फूंक, भूत-प्रेत, देवी-देवता तथा शुभ-अशुभ, अपशकुन आदि विभिन्न प्रकारों ने मानव मन में जगह तैयार की है। अशिक्षित वर्ग इसके डर से पुजा करते हैं और उसे मिटाने के लिए किसी तांत्रिक को बुलाते हैं। यह कार्य तांत्रिक के लिए एक प्रकार का धन कमाने का मात्र है। इसका पूरा फायदा पाखंडी लोग उठाते है। ज़्यादातर ग्रामीण महिलाएँ अनपढ़ हैं जिसके कारण वह इसका शिकार बनती है। 'चाक' उपन्यास में भी मैत्रेयी पुष्पा ने इसका वर्णन किया है "कड़ीखाये, ला मैं देखूँ।"बिजली नहीं थी। लालटेन आई, तब तक कोई नहीं था। कोई नहीं है। कहाँ है कोई? अंधेरे में डर गई है। हाथ पर नील पड़ गया। कैसे? भूत-प्रेत भी नील डाल देते हैं। मनोहर की बहू भूत ने पकड़ ली थी।पूरी देह नीली...।"[47] उपन्यास में मनोहर की बहू रात में चीखने लगी तब राममूर्ति उसे देखती है और बहू के हाथ नीले पड़ गए। सच यह है कि मनोहर की बहू भूरा से डर रही थी और ऐसा होने पर तांत्रिक को बुलाया जाता है। पूरे गाँव में यह खबर फैल गयी कि मनोहर कि बहू को भूत-प्रेत की छाया पड़ गयी है और वह अपने कपड़े उतार कर छत पर नंगा नाच रही है। ऐसा होने पर लोगों में डर फैल गया और गाँव के लोग भूत-प्रेत में विश्वास करने लगते है।

ऐसी कई तमाम चीजें भारतीय समाज में पाई जाती है। अंधविश्वास भारतीय जन मानस के रग-रग में बसा हैं। शुभ–अशुभ कार्य में इसका महत्व है। शादी जैसे अवसर पर अशुभ कार्य नही किया जाता है। जैसे किसी की मृत्यु आदि में बैठकर रोना अपशकुन मानते हैं। 'चाक' उपन्यास की सारंग अपने बेटे चन्दन की सुरक्षा के लिए उसके गले में ताबीज बांधने को कहती हैं। "जाही पीर पर शीश नवा देना चंदन का। लो यह, मंगो दादी ने सलामती

का ताबीज दिया था। धागा नहीं मिल रहा। वहीं डोरा लेकर इसके गले में बाँध आना। भूलना नहीं। यही □ल है, यही तलवार।'''[48] सारंग उस ताबीज पर विश्वास करने लगती है और अपने बेटे की सुरक्षा के लिए उसके गले में बांधती है। बच्चों की सुरक्षा के लिए उनके हाथ तथा गले में धागा बांधना,ये सब समाज में प्रचलित अंधविश्वास के कारण भारतीय समाज इसका प्रचलन करते है। "छोटे-छोटे बच्चों को तो उनके नाम श्रवण से भी भय होने लगता है। क्रुक महोदय ने पुरुष भूतों में ब्रह्मण को सर्वाधिक अनिष्टकारक बतलाया है।"[49]

अंधविश्वास का पालन वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि सदियों से चली आई यह पाखण्ड आज भी मौजूद है। भक्तिकाल के कवि कबीर ने भी इसका भरपूर विरोध करके कहते है, "'हिरदै कठोर मरयो बनारसी नरक न बंच्या जाई। हरि को दास मरै जो मगहर सेन्या सकत तिहाई।'"[50] कहा जाता है कि मृत्यु के समय काशी जाने से उनका पाप धुल जाता है और उन्हें मुक्ति की प्राप्ति होती है। परंतु कबीर इसका विरोध करते हैं। उनका मानना है कि मुक्ति काशी में नहीं बल्कि मगहर में मरने से भी मिल सकती है।

त्यौहार और उत्सव: त्यौहार और उत्सव मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना प्रत्येक समाज अधूरा है। पूरे विश्व में यदि देखा जाए तो प्रत्येक समाज किसी न किसी तरह अपनी संस्कृति या धर्म से संबन्धित त्यौहार मानता है। भारतीय समाज भी उत्सव और त्यौहारों के प्रति आकर्षित होता हुआ दिखाई देता है। हर समाज में अपने धर्म तथा संस्कृति से संबंधित त्यौहार मनाया जाता है। ज्यादातर यह उत्सव किसी न किसी देवता के साथ संबंधित है। यह कोई नया कार्य नहीं है बल्कि यह अनंत काल से ही हमारे समाज में प्राप्त होने के बावजूद यह नीति आज भी पायी जाती है। भारतीय अनेक धर्म, पंथ तथा संप्रदायों का देश होने के कारण त्यौहारों और उत्सवों की कोई कमी नहीं है। 'चाक' उपन्यास में भी रक्षाबंधन के त्यौहार का वर्णन मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। "सारंग घर आ गई। चूल्हे पर बड़ी सी कढ़इया रख ली, ज्यादा सा तेल डाल दिया, जल्दी–जल्दी निकाल दूँगी पूरी– कचौरी। रंजीत

मूँग की दाल के बड़े बनाने की कह रहे थे, पर नहीं करता मन। चंदन होता तो चार चीजें ज्यादा बना लेती। अब तो बस नेग के लिए करना- खाना रह गया है।"[51] हर उत्सव में खाने के लिए किसी न किसी प्रकार की विशिष्ट चीज बनाया जाता है। इसके लिए घर की महिलाएँ दिन भर व्यस्त रहती है। उसी प्रकार सारंग भी रक्षाबंधन के त्यौहार के लिए तथा घर वालों के लिए कचौरी बनाती है।

भारतीय समाज में त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। आज के सभ्य समाज में यह त्यौहार और उत्सव आपस में एकता लाने का एक महत्वपूर्ण साधन बना है। ऐसी त्यौहारों में नृत्य महत्वपूर्ण है।माना जाता है कि इसके बिना त्यौहार अधूरा लगता हैं।इस संदर्भ में डॉ.नगेंद्र कहते है, "आदिकाल में मानव जब वन्य और सामूहिक जीवन व्यतीत करते होंगे, तो प्राय:लहरों के नर्तन को देखकर उनमें भी नृत्य करने की भावना जागी होगी और उल्लास की घड़ियों में अनायास ही उनके अंग-प्रत्यंग थिरकने लगे होंगे। संभव है कि ऋतु परिवर्तन,धार्मिक समारोह अथवा कृषि के विशेष उत्सवों की पृष्ठभूमि में नृत्य का प्रादुर्भाव हुआ हो।"[52] प्रत्येक समाज में विभिन्न प्रकार के नृत्य जो अपने-अपने सांस्कृति से संबंधित पायी जाती है जैसे दक्षिण भारत में 'कथकली' और 'भरतनाट्यम' नृत्य प्रसिद्ध है और उड़ीसा में 'ओंडिसी' नृत्य। इस प्रकार हर भारत राज्य में विभिन्न प्रकार के नृत्य पाये जाते है। आशारानी व्होरा ने 'औरत कल,आज और कल' में लिखी है "इन शास्त्रीय व अर्द्धशास्त्रीय नृत्यों (कत्थक, कथकली, भरतनाट्यम, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, कुचीपुडी, ओडिसी) को देश में और विदेशों में भी मान्यता दिलाने और लोगप्रिय बनाने में आधुनिक युग की अनेक जानी–मानी नृत्यनाएं सक्रिय रहीं हैं।"[53] स्पष्ट है कि हमारी संस्कृति तथा परंपराए जो समय बदलने के साथ-साथ से बहुत कुछ दबे हुए है उसे जागृत तथा दुनिया को मान्यता दिलाने के लिए नृत्य अधिक महत्वपूर्ण है।

'चाक' उपन्यास में होली का वर्णन आया है।गुलकंदी सारंग को बुलाने चंदन को भेजती है परंतु चंदन होली खेलने में पगला रहा है। गुलकंदी खुद सारंग को बुलाने घर चली जाति है और वह पूंछने लगी चंदन कहा है? तब सारंग कहती है, "यह लड़का तो होली में पगला रहा है। कल से होश नहीं। रंग, पिचकारी, पानी से काम है बस। टेसू के फूल दाल दिए थे, तो आधी तामड़ी इस अकेले ने ही खाली कर दी।" [54]

लोक कथा: लोक कथा लोक में प्रचलित और परंपरा से चली आनेवाली कथा है। लोक कथा लिखित रूप में न होने के बावजूद इसका प्रचलन अस्थायी होता है। मौखिक रूप में इसका प्रचलन पीढ़ी दर पीढ़ी किया जाता है। लोक कथाओं में केवल तथ्य ही नहीं अपितु उसमें अर्थ,बोध, भाव तथा उपदेश भी निहित होते हैं। ये कथाएँ अलग-अलग अवसरों पर सुनाई जाती हैं। 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बड़ी सजगता के साथ लोक कथा का चित्रण किया है। डॉ. जोगेन्द्र सिंह बिसेन ने 'चाक' उपन्यास पर प्रकाश डालते हुए कहते है, "इस विराट उपन्यास में कितनी ही समस्याएँ है, जिनका निर्णय पुरुष पक्ष में हो गया उन पर लोक कथाएँ और लोगगीत बने हैं। ये सिर्फ किस्से कहानियाँ नहीं है मौत के अनमिट दास्तावेज हैं।...जिन्दगी शूली पर टंगी रहती है। ऐसी कई बेटियों की अलग-अलग समस्याओं को लेखिका ने अपने उपन्यास में उठाया है।"[55]

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोककथाओं का उपयोग किया गया है, जो उपन्यासों को ग्रमांचलिकता के साथ जोड़ देता है।'चाक' उपन्यास के खेरापतिन दादी करुण कथाएँ सुनती है। "बूढ़ी खेरापतिन,जिनका जीवन गाँव की पुरोहिताई करते बिता है,इसी तरह की करुण कथाएँ सुनाती हैं, भले वे आधी-अधूरी हों। ख्यालीराम, □लावाले 'दादू', तन्मय होकर ऐसी अनेक गीतकथाएँ सुनाते है गाँव-समाज को, जिनमें अकाल मौत को 'विपता' के सिर मढ़कर, कभी भाग्य के गले डालकर असल कातिल को बेदाग बचा लिया जाता

है।...मगर दादू और खेरापतिन सजल नेत्र; रुँधे कंठ गाते जाते हैं निरंतर, धीराज क्षीण होता जाता है आहिस्ता-आहिस्ता ... हिल्की भर आती है।"[56]

लोककथाओं में मनोरंजन के साथ-साथ अतीत का परिचय भी देता है। यह लिखित रूप में न होने के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप में जीवित रहता है। ऐसी कथाओं में उस समय की संस्कृति, परम्पराएँ तथा रहन-सहन का वास्तविक चित्रण रहता है। "युग- युग की पीड़ा वेदना, युग-युग की हर्षश्री, रीति-नीति,प्रथा-गाथा,अचूक सहज रूढ़ि वार्ता भौगोलिक एवं वातावरण निर्मित संस्कृति,परम्पराएं सभी इन स्वरों में अपने नाम,धाम अथवा वंश आदि का परिचय देती प्रतीत होती है।"[57]

'चाक' उपन्यास में लोक कथा का वर्णन आया है जो खेरापतिन दादी गाँव की स्त्रियों को गीत के माध्याम से सुनाती है। खेरापतिन दादी चंदना की कथा सुनाती है जिसमें उपदेश छुपा है। ताकि उसे सुनकर गाँव की कुआँरी लड़कियाँ चंदना की तरह किसी अन्य से प्रेम करने की भूल न करे। लोक कथा इस प्रकार है-

"तीजन चरचा चंदना की चल रही जी,

ए जी कोई मच्यौ है सहर में सोर-

सिर बदनामी चंदना बेटी लै रहीं जी sss…"[58]

चंदना सुनार के बेटे सकल से प्रेम करती है परन्तु उनका विवाह सकल से नहीं हो सका। पिता के चाहने पर चंदना का विवाह कुँवरजी से होता है। जब कुँवरजी को चंदना और सुनार के बेटे सकल के प्रेम संबंध का पता चलता है तो तब कुँवरजी ने चंदना की कटार मारकर उसकी हत्या की।

"पहली कटारी कुँवरजी मारियौ जी,

ए जी कोई दूजी लैलाई बाँहन ओट-

तीजी कटारी चंदना के हीयरा जीं sss..

माइल जाने चंदना बेटी सासुरे जी,

ए जी कोई सासुल जाने प्यौसार

चंदना की चीनी बनखण्ड में जी sss…"[59]

चंदना के माता-पिता को यह लगता है कि चंदना अपने ससुराल में सुखी वैवाहिक जीवन जी रही है और चंदना के ससुराल वालों को यह लगता है कि उनकी बहू पीहर में है। दोनों बुढ़िया चंदना के इंतजार में क्षीण होती रही। प्रेम के इस बलिदान का वर्णन मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में किया है। उपन्यास में चन्दना की तरह रेशम भी प्रेम को स्वीकार करने के कारण समाज द्वारा उपेक्षित कर दी गयी क्योकि जिस समाज में एक स्त्री को प्रेम करने की कोई जगह नहीं है वहाँ एक विधवा स्त्री कैसे प्रेम सकती है यह किसी भी प्रकार समाज को स्वीकार्य नहीं होगा इसलिए रेहम की हत्या उसके ससुराल वाले कर देते है। यह केवल रेशम की हत्या नहीं होती बल्कि सम्पूर्ण स्त्री समाज की हत्या होती है जो विधवा होते हुए प्रेम करने का जिखिम उठाती हैं। यह पितृसत्तात्मक समाज का घिनौना रूप है जिसको लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से दिखाया है।

(ग)चाक में चित्रित राजनीतिक एवं धार्मिक विषमता:

जातिगत राजनीति : भारतीय समाज के राजनीति में जाति आज भी अपना स्थान कायम किया है। भारत के चुनावों में विकास और प्रगति की बातें जरूर हुई और लोगों ने बेहतर सरकारी सेवा की चाह भी दिखाई है। परन्तु जातिवाद का मुद्दा अत्यंत अहम रहा है। राजनीति में जाति को महत्व प्राप्त हुआ है। देश में कोई भी चुनाव हो जाति के आधार पर वोटों की बात की जाती है और जातियता कम होने के बजाय उसे बढ़ावा दिया जाता है। 'चाक' उपन्यास में जातिय राजनीति का चित्रण होता है। अतरपुर गाँव में पंचायत चुनाव आया है और उस पंचायत चुनाव में कुंवरपाल खड़ा है। अलग-अलग जाति के वोटरों को लुभाने के लिए कलेंडर निकाला है। "कलेंडर! कुंवरपाल के नाम के साथ रामचंद्र, सीताजी और लछमनजी का कलेंडर। दूसरे में कृष्ण भगवान की फोटू। तीसरे में अम्बेडकरजी और चौथे में मस्जिद के पास कुंवरपाल की तस्वीर। घर-घर बँटवा रहा है फत्तेसिंह। कुंवरपाल के जैकारों के संग एकाध जैकारा पन्नासिंह के नाम का भी।"[60] इस प्रकार सभी जतियों के वोट लेने का प्रयास किया जा रहा है। सब लोग जाति के पीछे पड़े रहे है। व्यक्ति का आचरण कोई नहीं देखता बल्कि मात्र जाति देखते हैं। किसी के पास गाँव के लिए विकास का विचार नहीं है।

'मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम' में डॉ.दया दीक्षित ने 'चाक' उपन्यास पर प्रकाश डालते हुए कहते है," उपन्यास का एक पाठ विशुद्ध राजनीतिक भी है। प्रधान का सरकारी फंड हड़पने के लिए तरह-तरह की युक्तियाँ भिड़ाना,नामक रहने धाध कुटिल राजनीतिज्ञ की तरह धूर्ततापूर्ण पाला बादल देना! रंजीत को उसका कर एक ओर जातिवादी राजनीति करना/ फैलाना तो दूसरी और श्रीधर को पिटवाने के रूप में शत्रु को धूल चटाना और तीसरी तरफ प्रधानी की लालच दे रंजीत को अपना लठैत या बिना पैसे का गुलाम बना लेना...ऐसे ही कुचक्र हैं, जिनकी जड़ में फंसी गाँव-देश की राजनीति खून के आँसू रोती इन धूर्तों से अपनी मुक्ति के लिए छटपटा रही है!"।[61]

'चाक' उपन्यास में सरकारी फंड हड़पने के लिए प्रधानजी श्रीधर को दस्तखत कराने की कोशिश करता है। प्रधानजी कहते है, "हिस्सा तुम्हारा भी होगा। मुफ्त में नहीं लेना चाहते तुम्हारे दस्कत।...'ऐसे क्या देख रहे हो मास्टरजी? साले चुनाव ने हमें भी पागल बना दिया कि नब्बे हजार मिलेंगे, काट-पीटकर जो बचेंगे, चुनाव में काम आ जाएँगे ।"[62] परन्तु श्रीधर मास्टर दस्तखत करने से इंकार करता है। फत्तेसिंह श्रीधर मास्टर पर गुस्सा होकर उसे रात के अंधेरे में पिटवाता है ।

भारतीय समाज में राजनीति एक बड़ी समस्या बनी है। सत्ता कि चाह में लोग अंधे हो गए है। समाज में जातियों ने चुनाव तथा दलगत राजनीति से खुद को जोड़ दिया है। "वास्तव में, लोकतांत्रिक राजनीति और आधुनिक औद्धोगिक विकास ने सत्ता पर अपना कब्जा कर अपनी स्थिति सुधारने के लिए जाति-समूहों को प्रेरित किया। जातियों ने चुनावों-राजनीति और दलगत राजनीति से खुद को जोड़ दिया है ।"[63]

भ्रष्टाचार : विविध समस्यों की तरह भारतीय समाज में भ्रष्टाचार एक समस्या बनी है। जिसकी वजह से समाज में विभिन्न प्रकारों की समस्या पैदा हुआ है। भ्रष्टाचार के कई कारण है असंतोष के कारण तथा स्वार्थ और असमानता के कारण। डॉ. कंचन गोयाल कहते है," आजादी के पश्चात राष्ट्र निर्माण को ध्वस्त होता हुआ सपना युवा वर्ग के लिए अत्यंत आक्रांत कर देने वाला था।लोगों को ऐसे प्रशाशन और राजनीतिक अवस्था से कोई मोह नहीं जो उनके लिए चीर प्रतीक्षित सुख-सुविधाएं भी बाधाएं उत्पन्न करने वाली हैं।ऐसी भ्रष्ट्र राजनीति और प्रशासन ने लोगों में असंतोष,आक्रोश अराजकता और विद्रोह को जन्म दिया है ।"[64] भ्रष्टाचार यदि देखा जाए तो वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या बनी है। सरकारी कार्यालय में चपरासी से लेकर अधिकारी तक भ्रष्टाचार का शिकार है।राजनीति, पुलिस, तथा अन्य लोग भ्रष्टाचार करते हैं। भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह भारत में तेजी से बढ़ रहा है। इसकी जड़े तेजी से फैल रही हैं। तथा इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक है। भ्रष्टाचार का सबसे

बड़ा जड़ रिश्वत कह सकते है भारत में यदि पूरे विश्व में देखा जाए तो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए और ऊँचे स्थान प्राप्त करने के लिए रिश्वत देते है और रिश्वत लेने वाले न ही रिश्वत लेने से इन्कार करते हैं। मैत्रीयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में भी इसका चित्रण किया गया है। "प्रधानजी श्रीघर के करीब खिसक आए। फुसफुसाकर बोले-अगले दिन...'हम समझ रहे हैं,तुम क्यों रूठे हो?हमारे बालक की उमर के तुम मास्टरजी,मझमते हो कि हम तुम्हारे दिल की बात न समझेंगे? हिस्सा तुम्हारा भी होगा। मुफ्त में नहीं लेना चाहते तुम्हारे दस्कत। जब सबके दस्कत की कीमत है,तो तुम्हारे दस्कतों की क्यों न होगी? दो कोठरा भी खड़े नही करने। इसी स्कूल की रँगाई- पुताई करवानी है, बस। इंजीनियर बिल्डिंग पास कर देगा। अहलकार दस्कत करके मंजूरी दे देंगे। बोलो, तुम कितना माँगते हो? दस हजार? बारह? चलो पंद्रह हजार तक।"[65]

श्रीधर मास्टर एक निर्धन जाति का कुम्हार पढ़ा- लिखा और समझदार व्यक्ति है। वह सारा काम गाँव और स्कूल की भलाई के लिए करते हैं। वे हर हाल में नहीं चाहता जिसके गाँव और स्कूल का अहित हो। जब फ़ंड के नाम पर प्रधान सरकारी धन हड़पना चाहता है तो वे विरोध करते हैं। "असल में इससे भी अच्छी बात यह होगा कि आप इस फ़ंड को ऐसे स्कूलों के लिए जाने दें, जहाँ इमारत के नाम पर पेड़ों के नीचे बैठकर बच्चे पढ़ते है। प्रधानजी, मैं ऐसे ही स्कूल से यहाँ तबादला होकर आया हूँ, जहाँ धूप की तीखी चिलचिलाहट,किटकिटाती ठंड और आँधी–पानी के मौसमों को बालक अपनी छोटी-छोटी देहों पर झेलते थे। आपके थानसिंह जहाँ गए हैं, वहाँ भी ऐसा ही खुला स्कूल है उनका हक मारकर हम बेईमानी ही करेंगे न?"[66] श्रीधर जानता है है कि उनकी इस बात पर प्रधान खुश नहीं होंगे चाहे जितना भी प्रधान उनको जबर्दस्ती क्यों न करे दस्तखत देने के लिए। परन्तु श्रीधर दस्तखत देने से इंकार करता है तथा उनका विरोध भी करते है "वे जानते हैं प्रधान माफ नहीं करेगा।कुछ न कुछ सजा देकर रहेगा। करा दे तबादला।"[67] श्रीधर मास्टर जानता है

कि प्रधान उनपर कुछ न कुछ तो कर ही देगा परन्तु वह हार न मानकर तबादला करने को भी तैयार है।

पंचायत चुनाव : वर्तमान समय में चुनाव एक बड़ी समस्या बनी है। शक्तिशाली वर्ग सत्ता के स्वार्थ में भ्रष्टाचार, आतंक, खूनखराबा आदि अन्य घिनौनी कार्य करते हैं। वह दूसरों पर नियंत्रण पाने के लिए तथा जनता पर अपनी इच्छाओं या निर्देशों पर चलाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों का निर्माण करते हैं। सत्ता प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने को तैयार होते है। जनता के वोट खरीदना, पार्टियाँ खरीदना तथा प्रतिनिधी बिकते है। ग्रामीण समाज में भी इसका असर बहुत ही तेजी से हो रहा है।'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीतिक विषमताओं का वर्णन किया है।

भारतीय समाज में आर्थिक व सामाजिक माहौल में बदलाव लाने के लिए चुनाव अत्यंत आवश्यक है। गवों में महिलाएँ ज़्यादातर अनपढ़ होने के बावजूद पुरुषों से बहुत पीछे है। वे हर सामाजिक मुद्दे पर चुप रहती हैं। वे चुनाव में अपने को सदस्य के रूप में कभी नहीं आती यहाँ तक कि अपनी पसंद के उम्मीदवारों के पक्ष में अपना वोट तक नहीं डाल पातीं। ग्रामीण महिलाएँ इस विषय में वंचित है और उन्हें किसी भी राजनीतिक कार्यों में हिस्सेदारी न के बराबर है। 'चाक' उपन्यास में श्रीधर सारंग को चुनाव में खड़े होने को कहता है।परन्तु सारंग समाज तथा अपने परिवारों से डरती है और वह अपने पति के विरुद्ध खड़ा होकर उसे दुख देना नहीं चाहती। सारंग कहती है "मैं अपने घर इसी हैसियत से रह सकती हूँ,बस। ज्यादा कुछ करूँगी तो घर की बहू होने का हक भी छिन लिया जाएगा।"[68]

राजनीतिक चुनाव में महिलाओं के लिए स्थान प्रकट करना एक कठिन कार्य है। अगर स्थान मिल भी जाय तो उन्हें बहुत कम महत्व दिया जाता है। पुरुष ने नारी को राजनीति में हमेशा हाशिए पर रखा है। राजनीति में महिलाओं के लिए स्थान बढ़ाने की बात तो आरंभ

से हुई है परन्तु इस पुरुष वर्चस्व समाज में किसी भी राजनीतिक पार्टी में स्त्री का स्थान बहुत निम्म है। जहाँ स्त्री समाज सुधारक के लिए तथा गाँव के विकास के लिए काम करना चाहती है वही स्त्री को पितृसत्तात्मक वर्ग कोई भी काम करने से रोक देते हैं।वे नहीं जानते हैं कि हर सफल पुरुष के पीछे एक औरत का ही हाथ होता है। इसका मतलब यह नहीं कि पुरुष ही समाज सुधारने का काम करे बल्कि नारी का भी उतना ही महत्व है जितना पुरुष का।परन्तु इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं को सम्मान नहीं देना चाहता जितना उन्हें मिलना चाहिए। यह समाज में एक प्रकार का स्त्री शोषण है जहाँ स्त्री अपनी सुरक्षा के लिए भी आवाज नहीं उठा पाती। यह कार्य आज के समय में ही नहीं बल्कि सदियों से चली आ रही है। 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में मैत्रेयी पुष्पा कहती है, "मर्यादा! वही न, जो मुझे □क-तोपकर, छेद बांधकर, जाग्रत इंद्रियों को सुन्न करके कारगर साबित होती है और उससे समाज सक्रिय है, सदियों से, हजारों वर्षों से आज तक... यही संस्कृति का रूप होता है।"[69]

भारतीय समाज में यदि देखा जाए तो लड़की जितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो समाज उसे दोयम दर्जे पर ही रखता है। समाज उसे हमेशा हीनतर समझता है। पितृसत्तात्मक सोच के कारण हमेशा स्त्री अपना अधिकार नहीं पा सकती। 'चाक' उपन्यास में पंचायत के चुनाव का वर्णन आया है। सारंग गाँव के विकास के लिए खड़ा होना चाहती है परन्तु वह पढ़ी-लिखी होने पर भी डरती है। श्रीधर सारंग से कहती है "जब घर–परिवार में औरत का दाखल हो सकता है, तो राजकाज में क्यों नहीं? तुम पढ़ी-लिखी हो, खूब जानती हो, हमारे संविधान में औरत को बराबरीका दर्जा मिला है। तुम कब तक औरत के पत्नी की दुहाई देती रहोगी?"[70] सारंग भले ही पढ़ी- लिखी क्यों न हो वह समाज से डरती है। वह सब जानते है कि समाज उसे जीने नहीं देगा यहाँ तक कि उसका पति भी उसका साथ नहीं देगा।

'चाक' उपन्यास की सारंग श्रीघर के कहने पर उसके मन में विभिन्न प्रकार के विचार आने लगती है। वह पुरुष के समान अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए अतरपुर गाँव

के पंचायत चुनाव में प्रधान पद का पर्चा दाखिल करने लगती है।सारंग के पति रंजीत उसे मना कर देता है परंतु सारंग रंजीत का बात न मान कर चुनाव में प्रधान पद का पर्चा दाखिल करती है। सारंग गाँव की सभी औरतों को संगठित करके उनके अधिकारों के प्रति प्रेरित करने की कोशिश करती है। सारंग प्रधान पद का पर्चा दाखिल करने जाती है तो उसके मन में तरह-तरह के सवाल उठते हैं। उसके अवचेतन में विभिन्न प्रकार के विचार आने लगते है।वह अपने ख्यालों में खोने लगती है और मन ही मन कहती है, "मैं अकेली नहीं। अकेली मैं इतनी...मेरे संग रेशम और गुलकंदी आजूबाजू चलती हुई! कमर कसकर भागती चली आ रही है हरिप्यारी। बिसुनदेवा खरताले बजाता हुआ,पद गाता हुआ...बड़ी बहू,लौंगसिरी बीबी ने सुना होगा कि सारंग...इस बदलाव को किस निगाह से देखेंगी बड़ी-बूढ़ी क्या कहा होगा कलावती चाची ने?"[71] उस वक्त सारंग कि वैयक्तिक चेतना जाग्रत हो जाती है ।सारंग ने चुनाव में लड़ने का फैसला बना देती है और गाँव की कुछ औरतें सारंग का समर्थन भी करती हैं।

समाज में स्त्रियों का अधिकार बहुत ही सीमित है उन्हें केवल घर में ही रहने का अधिकार मिलता है। बाहरी दुनिया के साथ संबंध रखना उनके लिए अभिशाप है। सदियों से लेके आज तक यह मानसिकता समाप्त नहीं हुई है बल्कि ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में और ज्यादा बढ़ रहा है। यह सोच आज तक किसी न किसी हद तक जीवित है।मैत्रेयी पुष्पा ने 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में लिखती है "समझ में यही आया कि बाहरी दुनिया मर्द की है और घर का किला (भले वह झोपड़ी हो) 'घर की रानी' के लिए है। समाज की शान्त व्यवस्था अपने आदिम संबंधों को इसी नैतिक रूप में परिभाषित करती है"।[72]

जब भी स्त्री अपने कदम उठाके आगे बढ़ने को सोचती है तो उनके मन में कई प्रकार के सवाल उठते हैं। समाज में दबी- दबी रहने के बावजूद चाहे जितनी भी पढ़ी- लिखी क्यों न हो वह आगे बढ़ने से डरती है। समाज के खिलाफ लड़ने का अधिकार उसे नहीं है।

उनके लिए पुरुषों की बराबरी में जगह पाना असंभव है। 'चाक' उपन्यास में श्रीधर सारंग से कहता है "'लोग क्या कहेंगे, क्या नहीं कहेंगे, इसकी चिंता है तो बंद करो रेशम, गुलकंदी और गुरुकुलवाली शकुंतला, शारदा के बारे में सोचना! विलाप करके क्या दिखाना चाहती हो? यही कि तुम हाय- हाय करके मरी जा रही हो उनके दर्द में? तरस के टोकरे भर-भरकर आँगन में गाड़ लो, क्या मिलनेवाला हैं? सतियों के सिंहासन पर देवी की तरह पधराई जा सकती हो, लेकिन पुरुषों की बराबरी में जगह पाना... असंभव ! 'बराबरी' शब्द खतरों की ईटों से बना है; इसे हासिल करना...मेरे ख्याल में साहस दुनिया की अमूल्य चीज है।'"[73]

भारतीय समाज भले ही औद्योगीकरण क्षेत्र में बढ़ रहे देशों में से एक हो लेकिन लैंगिक समानता का स्तर अभी भी दयनीय है। 'बराबरी' शब्द महिलाओं के लिए वास्तव में खतरों की ईटों से बना है और उसके साथ टकराने तथा हासिल करने के लिए एक साहसी व्यक्ति की जरूरत है जो बाहरी दुनियाँ की परवाह न करके लड़ सके। परन्तु एक मात्र स्त्री के लिए यह कार्य असंभव है। जो स्त्री अपने परिवारों तथा बच्चों के लिए प्रतिदिन सेवा में लगी रहती है उस स्त्री को बराबरी का हक क्यों नहीं ? अपने परिवार और पति के लिए हद से गुजर जाती है और यहाँ तक कि अपनी जान निछावर करके सती हो जाती हैं वह स्त्री समाज के लिए बोझ बन जाती है। कहते है बच्चे का अपनी माँ के साथ गहरा लगाव है। बच्चों का पहला प्यार उसकी माँ होती है, वह अपने माँ को किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहता परन्तु पिता के भय से वह आतंकित होकर माँ को छोड़ने पर बाध्य है। यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था की विडम्बना हैं। उसकी ताकत, जो स्त्री पर इतर लिंगी व्यवस्था को आरोपित करती है, इसी व्यवस्था के माध्यम से पुरुष अपना शारीरिक,आर्थिक और भावनात्मक वर्चस्व को स्त्री पर आरोपित करता है ताकि वह प्रकृति और स्त्री पर विजय प्राप्त कर सके।

पैदा होते ही स्त्री और पुरुष में भिन्नता है, यह हम सभी स्वीकारते है। स्त्री- पुरुष में भेद-भाव अत्यंत होने के बावजूद भारतीय समाज में स्त्री का प्रतिशत पुरुष की तुलना में कम

हो रहा है। भारतीय समाज में ज़्यादातर माँ-बाप लड़के की चाहत रखते हैं क्योंकि वह कुल का वारिस होता है। परन्तु स्त्री पैदा होते ही पितृसत्तात्मक समाज उसे बोझ समझ लेता हैं।उसे पढ़ाना-लिखाना भी नहीं चाहता। स्त्री शोषण अधिक गावों में पायी जाती है। चाहे समाज जितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो आज भी यह समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा । 'चाक' उपन्यास में सारंग पंचायत चुनाव में खड़ा होना चाहती है परन्तु वह समाज के डर से वंचित रह जाती है। वह उनके पति के विरूद्ध भी नहीं रहना चाहती तथा उसे दुख नहीं देना चाहती। अकेली शादीशुदा औरत का चुनाव में खड़ा होना और गाँव के विकास के लिए काम करना उनके लिए लगभग असंभव है। उपन्यासकार सारंग के माध्यम से स्त्री-विमर्श की अहं पहलू को उजागर करता है। आधुनिक युग में नारी स्वलम्बन रूप में अपनी जिंदगी का निर्वाह करना चाहती है। उपन्यास में श्रीधर सारंग से कहता है "गरीब को धन के लिए, निर्बल को बल के लिए और अज्ञानी को ज्ञान के लिए संघर्ष करना पड़ता है, यह शास्त्रों में लिखी प्रामाणिक बात है। यदि ऐसा नहीं होता तो इनसान और पशु में कोई फर्क नहीं ।"[74] स्त्री को अपना अधिकार पाने के लिए संघर्ष करना बुरी बात नहीं है। परन्तु पुरुष वर्ग ने स्त्री को उसके अधिकार से वंचित किया है ।

यदि देखा जाए तो ऐसा लगता है कि कई हद तक स्त्री पुरुष से ज्यादा कुशल होती है तथा समझदार भी। जो चीज पुरुष न कर पाते वह स्त्री करके दिखाती है। साहसी, व्यावहारिक तथा ज्यादा दृढ़ होती है जिस प्रकार 'चाक' उपन्यास में सारंग है। 'हम 'पुरबिया' औरतें और 'हमारा' स्त्री- विमर्श' लेख में अनामिका कहती है "जन्म के समय लड़कियों का विशेष स्वागत भले ही न तब होता था और न अब होता है, पर विकास के क्रम में लड़कियाँ हमेशा से पिता-माता, भाई-पितामह, चाचा,मामा सबकी चहेती हो जाती रही है। पूरी परंपरा जिनकी खिलाफ खड़ी हो, उन्हें किसिका चहेता बनने के लिए पूरा आत्मिक तेज लगाना पड़ता है और विशिष्ट रूप से अच्छा भी होना पड़ता है ।"[75]

धार्मिक स्थिति : धर्म एक संस्था है जो प्रत्येक मनुष्य को आचरण सिखाने का कार्य करता है। विश्व के प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी धर्म को मानते है तथा अपने धर्म और संस्कृति के अनुसार मानव आचरण करता आ रहा है। धर्म समाज के लिए आवश्यक है, वह समाज को संगठित करने का कार्य करता है। डॉ. अमरनाथ कहते है, "बौद्ध धर्म–साहित्य में धर्म शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। कभी–कभी इसे भगवान बुद्ध की सम्पूर्ण शिक्षा का द्योतक माना गया है। इसे अस्तित्त्व का एक तत्व अर्थात जड़ तत्व, मन एवं शक्तियों का एक तत्व भी माना गया है।"[76]

भारतीय समाज में धार्मिक भावना अत्यंत भरी हुई है।कहते है धर्म और नारी एक दूसरे से जुड़ा है। धार्मिक कार्य में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है परंतु भारतीय समाज में धर्म के नाम पर भी नारियों का शोषण होता रहा है। प्रत्येक मनुष्य जब अपना जीवन सुखी बनाने की कोशिश करता है तब धर्म की शरण में जाकर ईश्वर से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता है। परंतु भ्रष्टाचारी लोग धर्म के नाम पर पाखण्ड का खेल खेलते हैं। यह पाखण्ड का खेल वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि सदियों से चलता रहा है। धर्म के नाम पर लोग एक दूसरे से झगड़ते आए हैं जिसके कारण सांप्रदायिकता की आग समाज में फैल जाती है। 'चाक' उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है "दोनों का धर्म एक। हो क्यों न? पाकिस्तान बनने पर जब मुसलमान खदेड़े जा रहे थे तो नम्बरदार उनके धर्मपिता बन सामने आकार खड़े हो गए। एक-एक को बचा लिया। छानबीन हो रही थी, वे मुसलमानों के नाम बादल रहे थे- शौकत अली-गोपाल, जफर अली-श्यामचरन, इसमाइल-बाबूला, शहाबुद्धीन-मंगलसेन। रशीदा –माया, शरीफा-सुनहरी, हफीजन-मंगली। चोटी कटवाने नहीं दी। हमारे गाँव में कोई मुसलमान नहीं। सब हिंदू हैं, हिंदू।"[77]

धर्म के नाम पर कई लोग मांस खाने तक भी छोड़ते है उनका मानना है कि मांस भक्षण वर्जित हैं। यह मान्यता कई धर्मों में पायी जाती हैं और जो इस मान्यता का पालन नहीं

करता उसे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग प्रताड़ित करते हैं। 'चाक' उपन्यास में रंजीत अतरपूर गाँव में आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए तालाब में मछली पालन करना चाहता है परंतु सारंग कहती है, ''रंजीत जिस गाँव में सक्का तक अंडा-प्याज छिपाकर खाते हैं, तू वहाँ मच्छी–गोस्त के देर लगाएगा? भइया, शिवजी की मढ़िया सौ कदम के फासला पर है। यह अधरम–महापाप इस गाँव में तो मत करे। खामख्वाह बड़े–बूढ़ो का परलोक बिगाड़ने पर तुला है।''[78] रंजीत खुद का व्यवसाय करना चाहता है परन्तु धर्म के नाम पर गाँव के लोग उसे मछली का व्यवसाय करने से मना कर देते है।

डॉ. व्यंकट किशनरव पाटील ने 'मैत्रीयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन' में कहते हैं ''जिस देश में अनेक धर्म होते हैं वहाँ धर्म के आधार पर राजनीति की जाती हैं। विश्व में धर्म के नाम पर राजनीति आज भी हैं। कुशल शासक जनता को अपने अधीन रखने के लिए या तो युद्ध अथवा धर्म का सहारा लेता है। भारत और पाकिस्तान का बटवारा कर धार्मिक □गों को और भी आश्रय दिया। किसी भी धर्म से श्रेष्ठ धर्म हैं मानवीयता।''[79] भारतीय समाज में विभिन्न धार्मिक मान्यताओं के कारण समाज में अंधविश्वास तथा रूढ़ि परम्पराएँ फैल रहा है। इसका फायदा धर्म के ठेकेदार अपनी स्वार्थ प्राप्ति के लिए उठाता है। कहते है धर्म और नारी में गहरा संबंध है। इसके विभिन्न कारण हो सकता है। प्रत्येक नारी के नसीब में पारिवारिक एवं सामाजिक दुख होता है तथा इसके बावजूद अनेक समस्याएँ पैदा होती है। कुछ समस्याएँ मानव निर्मित होती है। इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए नारी को अथक संघर्ष करना पड़ता है। नारी इसके लिए धर्म का भी सहारा लेती है। इस के कारण यह भी हो सकता है कि पुरुष से भी ज्यादा नारी धार्मिक या धर्मभीरु होती हैं।

डॉ. व्यंकट किशनरव पाटील कहते है, ''धार्मिक कार्यों में नारी को अग्रस्थान पर रखा जाता है। इतिहास पुराण से लेकर आज तक नारी के बगैर धार्मिक अनुष्ठान पूरा नहीं

होता है। इस भावना का उपयोग कर नारी पर अत्याचार कि जाता है।"[80] जिस समाज में स्त्री को देवी की तरह पूजा जाता है वही समाज धर्म के नाम पर स्त्री का शोषण करता है। धर्माचरण के कारण समाज में विकृतियां भी फैलती है और इसी के कारण समाज में अंधविश्वास भी बढ़ता जा रहा है। धर्म ने नारी पर विभिन्न प्रकार के बंधन लागू किए है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'अपनी बात' लेख में लिखती है "इस महान भावना के आधार पर स्त्री को अपने लिए कुछ करने से पहले, अपने लिए कुछ सोचने के अधिकार से काट दिया गया। ऊपर से हमारे धर्मों ने इस कोटे में आने वाले विचारों और क्रिया-कलापों की पवित्रता–अपवित्रता का नीर-क्षीर किया और ऐसे मंत्र-श्लोक,स्मृति और सूत्र दिए, जिनके अनुसार चलना ही मनुष्य-धर्म माना गया है। और यही चलन हमारे समाज का स्वरूप □लने लगा।"[81] आज भी इस प्रकार का स्वरूप भारतीय समाज में प्रभाव है।

पुरुष सत्ता ने स्त्रियों को धार्मिक कार्यों में भी बूरी तरह से जकड़ा है।'मुक्ति की दावेदारी' लेख में मैत्रेयी पुष्पा कहती है "ओह! पुरुष सत्ता का शिकंजा! हम औरतें उनका फैसला मानो या दर-बदर की हो जाओ, कैसा इंसाफ है! कि पुरुष एकता ही धार्मिकता और नैतिकता है?"[82] प्रत्येक कार्य में हमेशा स्त्री पुरुष से वंचित रहती है तथा उनका हर बात मानना अनिवर्या है।

भारतीय समाज में धर्म से संबन्धित विभिन्न परिणामों और अज्ञानता को दूर करके उसके बदले समाज में ज्ञान का दर्शन करने तथा उसे बढ़ाना आवश्यक है। इस संदर्भ में रवींद्रनाथ ने 'धर्ममोह' नामक कविता में कहते हैं। 'धर्म के वेश में मोह जिसे घेर लेता है। वह अंधा मारता है और स्वयं भी मरता है।' धर्म के विषय को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपना मत अनेक प्रकारों में व्यक्त किया है। धर्म वर्तमान समय में नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही धर्म की व्याखा अनेक प्रकार से की गयी है। वास्तव में सभी धर्मों के मूल में एक आंतरिक समानता मौजूद है जो मनुष्य के कर्तव्य की ओर संकेत करता है। इस विषय पर गांधी जी यह

मानते हैं कि शुद्ध धर्म- मार्ग पर चलने वाला कोई भी भारतवासी राजनीतिक कार्यों में भाग लिए बिना नहीं रह सकता। स्पष्ट है कि धर्म मनुष्य के शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि उनकी स्वभाव तक को परिवर्तन करने में सहायता करता है।

सांप्रदायिकता: भारतीय समाज में आज भी सांप्रदायिकता एक प्रमुख समस्या बनी है। सांप्रदायिकता की बढ़ती समस्या के करण प्रत्येक धर्म अपने ही धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और दूसरी मान्यता वाले धर्मों का नफरत करते है। अपने लिए ही श्रेष्ठता और दूसरों के प्रति निकृष्टा का भाव यही मूल कारण है। भारत पाकिस्तान के विभाजन के पश्चात सांप्रदायिक दंगे हुए भारत में संप्रदाय के नाम पर मुस्लिमों पर तो पाकिस्तान में हिंदुओं पर अत्याचार किए जाने लगे। "धार्मिक मतभेदों को सांप्रदायिक लोग अपनी राजनीति के लिए इस्तेमाल करते है और धर्म से राजनीतिक हित साधते हैं।"[83]

'चाक' उपन्यास में सांप्रदायिकता का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। अतरपुर गाँव में सांप्रदायिकता की समस्या बढ़ गयी है। थानसिंह मास्टर कहता है "जमींदार की निगाह पर वोट देते हो। यह नहीं देखते कि पीढ़ी-पर-पीढ़ी निकलती चली जा रही है, और तुम्हारी दर कुत्ते से भी बदतर होती जा रही है।नमाज पढ़ने की जगह तक नहीं जुटी। यहाँ मंदिर दो-दो हैं, मस्जिद एक भी नहीं। शिवजी और दुर्गा मइया रहेंगी, खुदा नहीं। मैं कहता हूँ क्यों नहीं? हम क्या हिन्दू और मुसलमानों के बालकों को पढ़ते समय भेदभाव मानते हैं? ठीक है तुम्हारे बाप-दादा सीधे-बेवकुफ थे, पर तुम तो नए जमाने की रफ्तार देख रहे हो। अपना हक माँगो। तीन साल कोई किसी के खेत में हल चला ले तो वह भी सरकार का द्वार खटखटाने को तैयार हो जाता है। तुम्हारी तो पीढ़ियाँ निकल गई इस गाँव में। बनियों ने तुम्हारा धर्म भ्रष्ट किया है"[84] उपन्यास में थानसिंह मास्टर ने सक्कों के लड़कों को अपना अधिकार माँगने को कहते है।

अतरपुर गाँव में सक्का मुसलमानों ने जी जान लगाकर तथा बड़ी मेहनत से मजदूरी की और कच्ची-पक्की चहारदीवारी खींचकर मस्जिद तो बनायी गयी है। परन्तु सक्का मुसलमानों को नमाज पढ़ना नहीं आता था। वह गाँव के हिन्दू लोगों के प्रभाव से मुसलमान लड़के प्रभावित थे। "लेकिन कायदे से नमाज भी पढ़ने नहीं आती थी। बहुत दिनों तक सक्कों के लड़के उसमें 'काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम' गाते रहे। पास के ही गाँव कजरौठ का मुल्ला आज तक भी नमाज पढ़वाने आता है ।"[85] सक्के लड़कों को नमाज पढ़ना सिखाने के लिए कजरौठ का मुल्ला आने लगा और धर्म की शिक्षा देने लगा और इससे गाँव में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिल जाता हैं।

भारतीय समाज में आजादी के कई साल बाद भी सांप्रदायिकता का जहर आज भी देखने को मिलता है। सरकार तथा विभिन्न समाज सेवा संगठन की सहायता से मिटाने की कोशिश क्यों न करे, उसे मिटाने के बदले समाज में पहले से ज्यादा बढ़ता हुआ नजर आया है। उसका असर समाज में विभिन्न दिशाओं में पड़ी है और यहाँ तक कि देश की एकता के लिए भी खतरा पैदा हो सकता है। "सांप्रदायिकता लगातार पूरे देश में बढ़ रही है और उस दक्षिण भारत में भी पहुँच गई है जहाँ कोई नयी सामाजिक विचारधारा मुश्किल से ही घर पर पाती है। दलितों, पिछड़ों जातियों, आदिवासियों वौर मजदूरों के बीच भी सांप्रदायिकता आज की तारीख में इतनी बड़ी विपत्ति बन गई ही कि अब देश कि एकता पर भी खतरा महसूस हो रहा है। सांप्रदायिकता के कारण भारत की सामाजिक और आर्थिक दशा पर प्रतिफूल असर पड़ा है। भारत की अर्थव्यवस्था को जिस रफ्तार से पनपना चाहिए था वह पनपी नहीं और इससे बेरोजगारी और असमानता बढ़ी। नतीजा सामाजिक हताशा और बेचैनी में निकला।"[86]

भारतीय समाज चाहे कितने भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो धर्म के विषय पर सांप्रदायिकता को मिटाना न के बराबर है।सभी अपने ही धर्म को महत्वपूर्ण समझकर दूसरे

धर्म को नकारते हैं तथा सर्वश्रेष्ठ मानके चलते है। सत्ता की चाह में सब लोग अंधे हो गए है तथा अपनी ही स्वार्थ की प्राप्ति के लिए सांप्रदायिकता की आग फैला रहे हैं। इसे मिटाना तथा उसके प्रति विरोध करना भी वर्तमान समय में लगभग असंभव है। डॉ. अमरनाथ कहते है, "1930 से आज तक सांप्रदायिकता के विरोध और उसे निर्मूल करने के मामले में सबसे बड़ी गड़बड़ी यह हुई है कि सांप्रदायिकता का सामना कभी विचारधारा और राजनीतिक के धरातल पर नहीं किया गया। विरोध किया भी गया तो चलते- फिरते या कामचलाऊ अंदाज में कर लिया गया।"[87]

रीति रिवाज एवं रूढ़िगत परंपरा: समाज परंपरा रीतिरिवाजों के प्रति आस्थावान है। जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के रीतिरिवाजों का पालन होता आया है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक रीतियाँ समाहित हैं। कुछ रीतिरिवाज और परम्पराएँ धर्म और नीति से जुड़ी है। समाज को इसमें अमिट विश्वास है। साथ ही साथ पुण्य और पवित्रता की चेतना भी। इसी कारण लोग देवी-देवता,पक्षु-पक्षी, नदी-पर्वत आदि के प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए उनकी पूजा करते है। केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु शिक्षित वर्ग में भी इस प्रकार का विश्वास और परम्पराएँ प्रचलित है। "मानव मन में जो शासवत भाव हैं, लोककथाओं, लोकगाथाओं द्वारा किसी युग विशेष की समस्त परंपराएँ, उत्सव और मंगलमय आचारों की हृदयग्राही भावनाओं और इनकी स्मृतियों से जीवन की अनुभूति को और भी सरस बना देती हैं। प्रत्येक मंगलमय उत्सव, संयोग या वियोग में,प्रेम का आश्रय पाकर भावनाओं के अत्यन्त समीप आ जाता है और तब हम अनुभव करते है कि हमारी परंपराएँ जीवन की कितनी गहराई से उठी हैं और उनके निर्माण में कितनी जातीयता या संगठन की भावना है।"[88]

भारतीय समाज में विवाह के समय रीति रिवाजों का पालन अधिक मिलता है। विवाह के पश्चात भी हर लड़की चाहती है कि उसके माता-पिता का घर-गाँव हमेशा

खुशहाल रहे।'चाक' उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है ''चंदना रोती-कलपती,पीछे को मुड़-मुड़कर देखती हुई माता-पिता और सकल को गाँव के सिवाने पर छोड़कर चल दी।नाइन ने लोटे में से पानी पिलाया था-चंदना ने चाँदी के सिक्के के संग अपनी कंगनियाँ लोटे में डाल दी-सकल को दे देना। मेरे माँ-बाप की देहरी हरी रहे, मेरा गाँव फले-फूले-नाइन ने चंदना से ये दो बोल कहलवाए ।''[89] इस प्रकार चंदन ने ससुराल जाते समय अपने माता-पिता और परिवारों की मंगल कामना करती है। यह भारतीय नारी की सरलता एवं मंगलभावनाओं का परिचायक हैं।

भारतीय समाज में विवाह के समय रीति-रिवाज का पालन मुख्य रूप से किया जाता हैं। लोग इसका पालन अवश्य करते है। रीति रिवाजों का पालन अगर कोई नहीं करता तो समाज उसे प्रताड़ित करता है। यह परंपरा वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि सदियों से चलती आ रही है। यह कार्य केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु शिक्षित लोग भी इसका पालन करते है।भारतीय समाज में विवाह के समय दुल्हनों को क्षेत्र विशेष के अनुसार कपड़ा और चुड़ियाँ पहनाई जाती है, यह रिवाज है। ''चुड़ियाँ का रंग प्रादेशिक रिवाज के अनुसार अलग-अलग होता है। महाराष्ट्र में हरे रंग की चुड़ियाँ पहनाई जाती है। बुंदेलखंड में काले रंग की चुड़ियाँ पहनई जाती है,ब्याह की इन चुड़ियाँ को कचारा कहते हैं ।''[90] इस प्रकार विवाह के समय अपनी-अपनी परम्पराओं के अनुसार अलग-अलग नियमों से रीति-रिवाजों का पालन करते है।

हमारे समाज में लोग केवल रीति-रिवाज का ही नहीं अपितु रूढ़ि परम्पराओं का शिकार बने है।यह परम्पराएँ ग्रामीण तथा शहरों में पाई जाती है जहाँ शिक्षित वर्ग भी इस सब का शिकार है। ग्रामीण समाज में जब व्यक्ति बीमार होता है तो लोग डॉक्टर के पास ले जाने से पहले उसे किसी तांत्रिक के पास ले जाते हैं, ताकि उनकी बीमारियों को दूर कर सके।तांत्रिक मनुष्य की बीमारियों को दूर करने का प्रयास करता है।'चाक' उपन्यास में भी

इसका वर्णन आया है, "बाबा कराह उठे-'सब कुछ किया पर कोई फायदा नहीं। खप्पर निकाला था। माता की भेंट चढ़ाई थी। पूरी रात बिताकर गाँव भर के पौहों-पशुओं को गुलूल-फिटकरी और जड़ी-बूटियों की धूमनी दी।गली-चौक "हुर्थ-हुर्थ" की आवाज से गुँजाकर रोग भगाने के हुंकार भरे। दाल-बाटी का भंडारा किया।फिर यह रोग कहाँ से निकाल पड़ा? हमारी अचूक दवा कामयाब न हुई!'"[91] 'चाक' उपन्यास के किसान के गाय का बछड़ा बीमार हो गया था और उसका इलाज करवाने के लिए एक तांत्रिक के पास ले गया। किसान गाय के बछड़े को बचाने के लिए जो भी तांत्रिक कहता है उन्होंने सब कुछ किया फिर भी कोई असर नहीं पड़ा तथा गाय का बछड़ा मर जाता है ।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में रूढ़ि परंपरा का चित्रण विभिन्न प्रकारों में किया है। उनके उपन्यास से यह आभास होता है कि भारतीय समाज में यह परंपरा अत्यन्त रूढ़ रूप में पाया जाता है तथा इसका पालन विभिन्न प्रकारों से किया जाता है। आज के वर्तमान समय में भी यह परंपरा समाज में पाई जाती है। नारी अशिक्षित एवं धर्मपरायण होने के कारण रूढ़ि परंपरा का पालन पूरे विश्वास के साथ करती है। अंधविश्वास के कारण ही लोग रूढ़ि-परंपरा का पालन करते है। भारतीय समाज में करवाचौथ का व्रत सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हो रहा है। 'चाक' उपन्यास में करवाचौथ का वर्णन आया है "एक जमाना था,जब जाटों में करवाचौथ नहीं मनाई जाती थी।लेकिन जब से लड़कियाँ-बहुएँ अलीगढ़-हाथरस में जाकर सिनेमा-ठेठर देखने लगी हैं,तब से 'मैं तो छोड़ चली बाबुल का देस,पिया का घर प्यारा लगे' के अंदाज नाचती-गाती हैं-सातों कौम की स्त्रियाँ।...सारंग ने करवाचौथ काढ़ी है,ज्यों कागज पर छपी तस्वीर हो-पूरे चंद्रमा का गोला,जिसके हाथ,पाँव,कमर,आँख,नाक,कान सबकुछ। आसपास सात भाभी-चुनरी औढ़े हुए। छ:भाई कुर्ता-धोती पहने हुए। एक भाई नसैनी पर चढ़ा चलनी में □कर दीपक दिखाता हुआ। बीजा बहन अर्ध्य देती हुई... बाकी चूड़ी-बिछिया के

संग सुहाग-पिटारी ।"[92] अतरपूर गाँव के रंजीत की पत्नी सारंग भी करवाचौथ के दिन दुल्हन की तरह सजी है ।

इस संदर्भ में डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील का मत सार्थक लगता हैं " मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण स्त्रियाँ अंधविश्वास रखती है। इसका मुख्य कारण उनका जीवन परिवेश है। आज भी भारत के ग्रामीण जीवन में रीति-रिवाजों का महत्व बरकरार है। इस में सबसे ज्यादा महिलाएँ अंधविश्वासी होती है ।"[93]

निष्कर्ष

'चाक' उपन्यास में स्त्री मुक्ति का स्वर, सामाजिक विषमता तथा राजनीतिक एवं धार्मिक विषमताओं का चित्रण हुआ है। उपन्यास में स्त्री की वास्तविक भावनाओं का वर्णन आया है। पुरुष वर्ग द्वारा किया गया विभिन्न शोषणों तथा अत्याचारों पर प्रकाश डाला है ।

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने सामाजिक विषमताओं का भी चित्रण प्रचुर मात्रा से किया है। समाज में व्याप्त विभिन्न रूढ़ियों पर प्रकाश डाला है। ग्रामीण समाज में बेरोजगारी बढ़ रही हैं। ग्रामीण विकास के प्रति सरकार की दृष्टि उदासीनता के कारण ही ग्रामीण बेरोजगारी निरंतर बढ़ रही हैं। गाँव में नए व्यवसाय स्वीकार न करने के कारण आर्थिक विपन्नता है। ग्रामीण समाज में अंधविश्वास प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।व्रत अशिक्षित समाज होने के कारण लोग धार्मिक रूढ़ियों का पालन बड़ी सिद्दत से करते है। 'चाक' उपन्यास में त्यौहार और उत्सव का भी जिक्र हुआ है। जिसे पता चलता है कि त्यौहार और उत्सव पर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप हैं ।

गाँव हो या शहर दोनों में जातिय राजनीति का वर्चस्व रहा हैं। चुनावों में जाति के आधार पर वोटों की बात की जाती है और जातीयता कम करने के बजाय उसे बढ़ावा दिया जा रहा है।राजनीतिक समस्या के कारण समाज में भ्रष्ट्राचार का बोल बाला है। सत्ता की चाह

तथा सरकारी फ़ंड हड़पने के लिए रिश्वत भी देते हैं। ग्रामीण समाज में पंचायत चुनाव की विसंगतियों का यथार्थ विवेचन 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने किया है।

'चाक' उपन्यास में धार्मिक स्थितियों पर भी मैत्रेयी पुष्पा ने प्रकाश डाला है। धर्म के नाम पर समाज में सांप्रदायिकता फैलती है। रीति रिवाज एवं रूढ़िग्रस्त परम्पराओं का भी चित्रण किया गया हैं। समाज शिक्षित हो या अशिक्षित, लोग इसका पालन बड़े विश्वास के साथ करते हैं।

संदर्भ

1. डॉ. दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, फ्लैप से
2. डॉ. दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, पृ- 76
3. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 7
4. डॉ. दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, पृ- 77
5. मैत्रेयी पुष्पा: ललमनियाँ: तुम किसकी हो बिन्नी?,पृ- 120
6. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 21
7. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 13
8. आशारानी व्होरा: औरत कल, आज और कल, पृ-96
9. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 14
10. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 64
11. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 26
12. सुभाष सेतिया: स्त्री अस्मिता के प्रश्न, पृ- 89
13. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 27
14. डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पृ-132
15. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 16
16. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 172
17. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 65
18. डॉ. कंचन गोयल: मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, पृ- 114
19. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 248
20. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 295

21. डॉ.कंचन गोयल: मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, पृ- 117

22. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 19

23. सुभाष सेतिया: स्त्री अस्मिता के प्रश्न, पृ- 24

24. सुभाष सेतिया: स्त्री अस्मिता के प्रश्न, पृ- 23

25. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 15

26. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 64

27. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 21

28. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 64

29. डॉ.दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, पृ- 79

30. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 26

31. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 407

32. आशारानी व्होरा: औरत कल,आज और कल, पृ- 97

33. सुभाष सेतिया: स्त्री अस्मिता के प्रश्न, पृ- 65

34. डॉ.दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, पृ- 80

35. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 54

36. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 54

37. आशारानी व्होरा: औरत कल,आज और कल, पृ- 99

38. डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पृ-212

39. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 25

40. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 126

41. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 131

42. डॉ.कंचन गोयल: मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, पृ- 95

43. डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ- 209

44. टॉम वॉटोमोर, लारेंस हैरिस, वी.जी.किशन और रॉल्फ मिलिबैंड: ए दिक्शानरी ऑफ माकिर्सस्ट यूथ, पृ- 85-86

45. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 355

46. Grierson: Bihar Peasant Life, पृ- 409

47. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 211

48. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 63

49. W. Crooke: Natives Of Northern India, पृ- 24

50. श्यामसुंदर दास: कबीर ग्रंथावली, पृ- 24

51. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 102

52. डॉ.नगेंद्र, मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य-खंड), पृ- 38

53. आशारानी व्होरा: औरत कल, आज और कल, पृ- 79

54. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 353

55. डॉ.जोगेन्द्र सिंह बिसेन: मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का कथ्य और शिल्प, पृ- 29

56. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 7

57. देवेन्द्र सत्यर्थी: बेला फूले आधी रात, पृ- 11

58. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 21

59. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 13-14

60. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 425

61. डॉ. दया दीक्षित: मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, पृ- 78

62. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 234-

63. कमल नयन चौबे: जातियों का राजनीतिकरण, बिहार में पिछड़ी जातियों के उभार की दास्तान, पृ- 41

64. डॉ. कंचन गोयल: मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, पृ- 137

65. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 243

66. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 238

67. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 240

68. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 400

69. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 63

70. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 400

71. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 403

72. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 65

73. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 401

74. मैत्रयी पुष्पा: चाक, पृ- 401

75. अनामिका: हम 'पुरबिया' औरतें और 'हमारा' स्त्री-विमर्श, पृ- 48

76. डॉ. अमरनाथ: हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ- 181

77. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 29

78. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 53

79. डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ- 85

80. डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ- 167

81. मैत्रेयी पुष्पा: अपनी बात: खुली खिड़कियाँ, पृ- 6

82. मैत्रेयी पुष्पा: मुक्ति की दावेदारी, पृ- 66

83. डॉ. अमरनाथ: हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ- 368

84. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 30

85. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 30

86. डॉ. अमरनाथ: हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ- 369

87. डॉ. अमरनाथ: हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ- 368

88. डॉ. अनुसूया अग्रवाल: हिन्दी लोकसाहित्य शास्त्र सिद्धान और विसार, पृ- 49

89. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 12-13

90. डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ- 145

91. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 59

92. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 186

93. डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन,पृ- 168

तृतीय अध्याय: 'चाक' अभिव्यक्ति पक्ष

(क)भाषा: भाषा वह महत्त्वपूर्ण साधन है जिसे मानव आपस में संपर्क कर सकते है। यह वह साधन है जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है। भाषा की परिभाषा देते हुए डॉ.अंबादास देशमुख कहते हैं," जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक रूढ़ ध्वनि- संकेतों की प्रणाली को भाषा कहते हैं।"[1]

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में विभिन्न प्रकार की भाषा मिलती है। उनके उपन्यास की भाषा से अनेक परिवेश का प्रभाव नजर आता है। 'चाक' उपन्यास की भाषा अधिकांश ब्रज और बुंदेलखंडी है।मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नगरीय एवं ग्रामीण भाषा का पुट दिखाई पड़ता है। "भावानुकूल,पात्रानुकूल एवं घटनानुकूल बुन्देली के ठेठ व जाति विशेष में प्रचलित शब्दों के बहुतायत प्रयोग से हिन्दी की साहित्यक भाषा को एक संस्कार भी दिया है। शब्द-भंडार को विपुलता प्रदान की है।इतना ही नहीं मैत्रेयी का उपन्यास बुन्देलखण्ड के प्रति सर्जनात्मक गहन लगाव, संवेदनात्मक अनुभूति, अपनापन व समर्पण ही उनके साहित्य को प्राणवान बनाता रहा है।"[2]

शब्द भण्डार: 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है जिसमें मुख्य: संस्कृत शब्द, उर्दू शब्द,अंग्रेजी शब्द और बुंदेलखंडी शब्द है।

अंग्रेजी शब्द: भारत में अंग्रेजों का शासन बहुत दिन तक रहा है जिसका प्रभाव भाषा पर दिखाई पड़ता है। अंग्रेजों के बहुलता एवं उसका प्रभाव हिन्दी भाषा पर अधिक है।अंग्रेजी के अधिकांश शब्दों का प्रयोग हिन्दी में किया जाता है। जो अनिवार्य हो गया है। 'चाक' उपन्यास में उपन्यासकार ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया हैं। जैसे-

"आखिर में उन्होनें हत्या की नहीं की,खुद गवाही दी,तोता की बहू को गवाह बनाया। अपने बड़े भाई दलवीर **हैडकांस्टबिल** की पदवी का भरपूर उपयोग किया। उन्हें लिवाकर लाए और डोरिया को गिरफ्तार कराया।"[3]

"पढ़ो-लिखो,**डिग्री** लो और अपने घर बैठो, यह तो आजकल आम बात हो गई है।... **इंटर कॉलेज** में मास्टर हो जाता या **वेयरहाउस** में **इंस्पेक्टर**,ईमानदारी की नौकरी तो कोई करने नहीं देता।नम्बरदार का सत्ते **सस्पेंड** पड़ा है,साले और कर ले **इंस्पेक्टरी**।बाप की इज्जत भी खाक में मिला दी।...**सब-इंस्पेक्टरी** की लिखित परीक्षा धड़ल्ला से पास कर गया।...मुझे वे लोग बड़े कायर और कामचोर लगते हैं जो अखबार में निकली **"वेकेंसीज"** के नीचे कलम रगड़-रगड़कर निब तोड़ते रहते हैं।"[4]

"जबरदस्ती **प्रिंसिपल** साहब ने मुझमें मास्टर की **पोस्ट** के लिए अर्जी लिखवा ली। उन्हीं का लिहाज करके **इंटरव्यू** देने चला गया।साली कक्षा छ: और सात को पढ़ाने के लिए मैं तैयार होता? पर सोच लिया था,**प्रिंसिपल** साहब आदरणीय है,इनकी अवज्ञा करना ठीक नहीं।"[5]

" चलो रे **प्लेग्राउंड** में; भँवर अंग्रेजी बोल रहा है।...**ट्रेक्टर** भटभट करता हुआ आगे निकल गया।"[6]

"वह कहता है मेरा शरीर थर्रा जाता है,हाथ-कांपने लगते हैं। तभी तो '**ह्वेयर इज योर विलेज**' का जबाब दिया-'**माई विलेज इन** तहसील इगलास इन जिला अलीगढ़।'"[7]

" रंजीत कहती हैं-मैं बीज-खाद के चक्कर में, **ट्रेक्टर** माँगने के फेर में दिन-रात भागा फिर्ता हूँ और तुम कहती हो कि **हाईकोर्ट- सुप्रीमकोर्ट** का दरवाजा खत खटाऊँ! नामुमकिन। फिर भी मैंने **कंडोनेसन ऑफ डिले** की अर्जी लगा दी है।"[8]

"जबकि हम हाड़तोड़ **ट्रेनिंग** करके खूंखार से खूंखार मुजरिम की पकड़-धकड़ में जान की बाजी लगाए रहते हैं।"[9]

"तुम अपना **रजिस्टर** चंदन के पिता के कहने पर ही खोलेगा?"[10]

"हरिप्यारी नाइन ने गुलकंदी की काढ़ी हुई रंगीन बोरा बिछा दी,जिस पर अल्ता,बिंदी,काजल,जुटीला,**किलफे, पौडर-क्रीम** सजे हैं।"[11]

"गाँवों के प्रधान,पंच,सरपंच सब। **ब्लॉक** के **एडिओ-बीडियो–सैनेटरी इंस्पेक्टर** तक।"[12]

"जो लोग पूरी तरह उन यंत्रो का इस्तेमाल करते हैं,उनके लिए खेती साल भर की नहीं,महज तीन दिन की है-**ट्रेक्टर,थ्रेशर,कल्टीवेटर,सीड्रिल।**"[13]

"डाक्टर कहता है सारी **'मस्कूलर इंजरीज'** हैं, **फ्रैक्चर** नहीं। लेकिन हाँ, सिर में जो चोट लगी है,खतरनाक है, जान भी जा सकती थी।"[14]

"बारह कक्षा तक पढ़ी-लिखी बहू अंग्रेजी बोलती है- **प्लीज,बोर,इंसाल्ट।"**[15]

"पिछली बार ही आई थी तो मच्छरों ने उसका यह हाल कर दिया था कि काटे की जगह घाव बन गए और उसे **एंटिवॉयटिक** खाना पड़ा।"[16]

"हमारे 'जे' तो कौपट्टी लगवाने दें न **लूप**।...मैंने बता दिया पीहर जाओ तो **ऑपरेशन** करा देना।"[17]

"में अपने **टेपरिकार्डर** में..."...कहता है **रिऐडमिशन** होगा।...लक्ष्मीनिवास भईया कहते हैं- शौकत अली बेटा, **इंग्लैंड,आमेरिका** में बालक इसी तरह काम करके अपनी **फीस** और जेब-खर्च जुटाते हैं।"[18]

"आगे बोला–'**पेटीकोट** पोलका! हा हा हा हा !...ये...ये हमारे रंजीतसिंह!"[19]

संस्कृत-शब्द – संस्कृत भाषा भारतीय भाषाओं के लिए नई भाषा नहीं है। यह भाषा भारतीय भाषाओं की जननी है। 'चाक' उपन्यास में संस्कृत का प्रयोग प्रचुरता से मैत्रेयी पुष्पा ने किया हैं। जैसे-

"आँसूओं के वे ही कतरे तापभरी **प्रचंडिनी** घटा बनकर घुमड़ रहे हैं।"[20]

"होता है ऐसा, ऐसी ही होता है-**स्न्हे पापशंकि**। किताबों में भी लिखा है ऐसा ही ...उसे '**अति विनयी चौरस्य लक्ष्मण**' बार-बार झटका देने लगा।"[21]

"अच्छी तरह रट लिया था – **शिरोरुहै: श्रोमितरा वलम्बिभी**:..."[22]

"और आँखों में आँखें डालकर बोले, '**याद करो-ज्ञात: स्वदौ विवृत जघनं,को विहतू समर्थ**: (जिसको एक बार स्वाद लग गया हो तो फिर फैली हुई अनावृत जाँघों को कौन अस्वीकार कर सकता है? ।"[23]

"दोपहर तक **मृतक वाहन** आ गया। पेशेवर तारीके से लोग उतरे, और शकुंतला की गोली हड्डियों को उठाकर ले गए।"[24]

"जाती की नाइन है। वे मुस्काए। बोले फलाने, गंगा **पापमोचिनि** धारा है।"[25]

मराठी शब्द – "उतरती **वय** वैसे ही उधारी पर रहती है।"[26]

"कुँवरपाल ठहाके लगा रहा है। आगे बोला- **पेटीकोट पोलका** ! हा हा हा हा।"[27]

उर्दू शब्द: हिन्दू- मुसलमानों के बीच सदियों से गहरा संबंध होने के बावजूद भारत में उर्दू शब्द का प्रचलन आज भी पाई जाती है। 'चाक" उपन्यास में भी इसका वर्णन आया है। जैसे-

“तुम्हें याद है,**सगाई** के दिन मैं कितनी रोई थी।... सारंग तुम्हारी ताकत की मोहताज है।... आगे क्यों नहीं बढ़ते? वही बात कि **मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त ।**”[28]

“गृहस्थीदार आदमी के लिए बलवान होने जरूरी नहीं, इंसान होना **लाजिमी** शर्त है।... **हजामत** का काम अपने बाप को नहीं करने देता ।”[29]

“अंदरूनी बात तो यह थी कि ऐसी अनुकूल जगहें केवल दो थीं – एक भावनीदास का बाग और दूसरी **कब्रिस्तान**।... **बेबतन** होने से बचा लिया। मियाँ भाई कैसे भूले अपने **मसीहा** को?”।[30]

“रंजीत को पिता कि ओर **तवज्जों** देनी पड़ी ।”[31]

“उसे तो हर समय यह **देहरात** बनी रहेगी कि रंजीत उसके भाई को **उमरकैद** कराके उसे नाकों चने चबवा देना ।”[32]

“तमाम **मनगढ़ंत** बनाती है। उसका तो किसब ही यह है। दूता- चुगली।... ‘तेरे छोरा की नार (गर्दन) और **मसकनी** है। फिर भूल जाएगी बिफरना ! साली **इकबंझिया**! पूरी जिंदगी निपूती होकर बिसूरती रहना ।’”[33]

“सादजी ही क्यों, स्कूल की ऊपरी बातों के भीतर से एक भेदी नजर आकर गजाधरसिंह के चहरे की एक-एक रेखा की छानबीन करने में जुटी है कि इस **शख्स को तौहीन** और अपमान ने कितना तोड़ा- मरोड़ा है?”।[34]

“तुम अपनी **शाना-शौकत**; इज्जत- **आबरू** की पताका मजे में फहराओ।... हम इसी गुलामी और **सजायाफ्ता** जिंदगी को □ोने के लिए पढ़ रहे हैं?”।[35]

“एलकार बनने चले थे, दमड़ी की **दिहाड़ी** नहीं मिली कहीं ।”[36]

"श्रीधर ने सोचा था आदमी **तरक्कीयाफ्ता** हो जाता है, तब लोग भूल जाते हैं पिछली बातें।"[37]

"देबिया साला जोरू का **जरखरीद**। इसकी खातिर मैंने **छल- फरेब** किए हैं, अपना परलोक बिगाड़ा।"[38]

"**शौकत अली** भी अब नानुआँवाला काम **मुश्तकिल** रूप से करने की कोशिश करेगा।"[39]

ध्वनात्मक शब्द – ध्वनात्मक शब्द का प्रयोग 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बड़ी सजकता से किया है।

"मजबूत कदकाठी के चलते कसी- ठुकी देह और गुलाबी दूध सा **जगमगाता** रंग..."।[40]

"- मैं **छटपटा- छटपटाकर** खत्म हो जाऊँगी रेशम ! तू अपनी बहन की व्यथा इतनी न बढ़ा।"[41]

"मेरी आँखों के आँसू धुएँ की तरह फैलने लगे- मेरी बहन की कटीफती दूधिया देह **चिथड़ों- चिथड़ों** में निकलेगी..."।[42]

"**गड़गड़ाकर** उस हत्यारे को दबोच लेना चाहते हैं, जिसने ... मैंने बहन के अंतिम दर्शन किए, उसके अजन्म बालक को छाती से लगाया कि खुद ही भस्म होने लगी उसके **संग- संग**...।"[43]

"चंदना रोती – कलपती, पीछे को **मुड़- मुड़कर** देखती हुई माता- पिता और सकाल को गाँव के सिवाने पर छोड़कर चल दी।"[44]

"वह समझता है **मुस्का – मुस्काकर** सबको भरम में डाले रहेगा ?"।[45]

"'अपनी बहन पर चंदन को निछावर मत करो।' वे **गिड़गिड़ाने** लगे।"[46]

"रंजीत **मिसमिसाए** – 'अरे हमारे बूढ़े बाप ने कराया है यह सब।"[47]

"पावों की बेड़ियाँ **झनझनाती** तुम्हारी ओर बढ़ रही हूँ।"[48]

"**तड़ातड़ थप्पड़ो** की बारिश में घिर गई सारंग।"[49]

"चिड़िया- तोता **फड़फड़ाकर** पत्तों में दुबक गए।"[50]

"और इनकी खोले कोई?**खिसिर – खिसिर** करेंगी फिर।"[51]

क्षेत्रिय/ बुंदेलखंड शब्द – 'चाक' उपन्यास का प्रवेश बुंदेलखंड है और वहाँ की भूमि ब्रज है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया है। उपन्यास में उर्दू, संस्कृत, मराठी तथा अंग्रेजी आदि के शब्दों का वर्णन आया है परंतु वह हिन्दी में घुल – मिल गए हैं।

"गज़ब ! **पक्खा पछीत** ... सबकुछ इतनी जल्दी !"[52]

"वहाँ जो कुछ देखा यकायक ठिठुर सी गई वह- डोरिया पूरी ताकत लगाकर उल्टे फावड़े से **बितौरा** □ा रहा है और रहा- सहा □ाँचा भी गिरा जा रहा है भीतर मुँदी रेशम के ऊपर।"[53]

"**बेसिंग – बिजार (साड़)**। ...आदमी तो द्वार पर ठोड़ और यह बेसहूर चौतरा पर बैठा – बैठा गाजर खाता रहा, वह भी **चेंदी (जड़)** की ओर से।"[54]

"ग्राम समाज की जमीन को उन दिनों लोग **बुर्जी – बिटौरों** से घेरकर अपनी मिल्कियत बनाए हुए थे।"[55]

" साली **इकबाँझिया** ! पूरी जिंदगी निपूती होकर बिसूरती रहना।"[56]

"'प्रथम आँखे **नटेर** गया अम्मा !'"[57]

"मैं पुलिस की **पैछर** मिलते ही लोंड़ा को फरार करा देता।"[58]

"अब देख लो कि पाई-पाई पटा दी न मैंने, **हम्बैती** !"[59]

"मेरे तो वैसे ही पीछे पड़े रहते हैं **धुआँकरे, हम्बैती** !"[60]

" मैं तो वाट देख रही थी कि इसकी सत्तों के ससुरे से **बायना** आए तो दारी डलिया को तीन दिन बासी करके बाँटूँ।"[61]

"मेरा जाएगा अब **सिंगट्टा** । ... एक ही तो **जीवक (बेटा),** वह भी नासियों ने **भगवा** दिया।"[62]

"नाइन चाची, तुम गुलकंदी को मत **ताँसना**। ... पर हाँ उस लुगाईमूँहा बिसुनदेवा की लम्बी-लम्बी **लटूरियाँ** उखाड़ूँगी। मुँह- माथा दमकता है, तो क्या **धिय- बेटी तिगेगा**? ... मूँड़ में ईंट मारकर सब धजा बिगाड़ दूँगी **मूँहपजारे** की।"[63]

"साला ! थानसिंह का टुकड़खोर। **लोखता**!"[64]

"हमारे पास इतनी ताकत हैं कि **बिलंदिया (बालिश्त भर का)** पन्ना भी जैसे दैत्यों को पछाड़ सकता है।"[65]

"कहती थी – **मूसता (चूहा)** सा चंदन एकलब्ब बन गया, और हमारे राकेसा को नाटिक में पाट नहीं दिया। **एकलब्ब !** ... हम तो गुलकंदी, उसकी सारंग नैनी के **भोरे (धोखे)** में रह गए। नहीं तो एक **छाक (वक्त)** दूध पहुँचाना कौन सी बड़ी बात थी? ... 'वो sss,सारंग का **मुतमुन्ना (हरामी**) चंदन!"[66]

"और कुछ नहीं तो साधजी की मूँछों पर **भूमर (आग)** डाल सकती थी।... इसके लिए हम बराबर चार दिन अलीगढ़ –इगलास भागते रहे **थांग लगाते हुए (जाँच करते हुए) ।**"[67]

"मुझे रार- कलह का **रिबित (आदत)** नहीं।... सास **मुसटिया** और सुसर मूँह में **मुछिका** देकर रहे तो भली भला।"[68]

"सुसर ही **परमाटे (पराँठे)** बना लेता है, मजे से सोंठ के संग खा लो। है न सुख?"[69]

"आठ दिनों में सूख जाएँगी **फुड़ियाँ- फाँसूगरी।**"[70]

"नहीं चाहिए **वारदाना (सामान)**,...आँखों में पावसेर **ि ड़ (कीचड़)**, गर्दन तानकर कहता है कि लल्लू, हमरी जिजमानी चल रही है तीन गाँवों में।"[71]

"निबटाओं इस **पमाड़े (झंझट)** को। अच्छा बनउआ (मुसीबत) बना भैंचो...।"[72]

"फिर तो तुम समझी कि **अरहर की लौदें (सूखी लकड़ी)**, कंडा,लकड़ियाँ,तमाम ईंधन भरा था दुवारी में।"[73]

"और प्रधानजी हैं कि अभी भी चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों को **धाई- मिचक्का (छुआ- छुअउअल)** खिला रहे हैं।"[74]

" 'बेटा, **ऐलाज – फैलाज**?... और इनकी खोले कोई? **खिसिर- खिसिर** करेंगी फिर।'"[75]

"बाबा हल्के से मुस्कुराए,' ज्यादा बखत को तो यह रहने दे कि मास्टरजी ने एक ही बोल में काट दिए हमारे **इरझे- सुरझे (उलझे- सुलझे)** टार।"[76]

काव्यात्मक भाषा – प्राचीन काल से लेकर आज तक मानव और काव्य का संबंध बहुत गहरा है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव और कविता का संबंध रहा है। प्रत्येक उत्सवों में मानव अपनी भावनाओं के माध्यम से कविता व्याक्त करता आया है। 'चाक' उपन्यास के खेरापतीन दादी गाँवों को चंदना की कथा गीतों के मध्याम से सुनती है। जैसे-

"तीजन चरचा चंदना की चाल रही जी,

ए जी कोई मच्यौ है सहर में सोर-

सिर बदनामी चंदना बेटी लै रहीं जी sss…

बोले रे बोलो जा गाम के पंडितै जी

ए जी कोई चंदना कौ गौनों सुधवाउ

सिर बदनामी चंदना बेटी लै रहीं जी sss...”[77]

चित्रात्मक भाषा – ‘चाक’ उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने भाषा को जिवंत बनाने के लिए चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास के कलावती चाची और सारंग का संवाद इसका प्रमाण हैं-

“ फिर धार काढ़ने (भैंस दुहने) चल दी।

गली में चली आ रही हैं कलावती चाची! हँसती सी चाची!

सारंग के मन में उत्सुकता फड़फड़ाई। आँखों में चमक उतारने लगी।

‘सारंग!’ चाची की चहकती आवाज!

अपना नाम सुनते ही दोहनी चबूतरे पर धर दी।

देह में पंख से खुल आए।

‘केलसीसिंह का क्या हाल है चाची? कुछ खाया- पिया? मालिश कराई? तुम्हें छू लेने दी देह?कहते थे,औरत से तो मैं दस गज दूर रहता हूँ। आदमी से ही मालिश कराई है अब तक।’”[78]

प्रसंगानुकूल भाषा – प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है। किसी व्यक्ति के साथ संबंध अच्छे होने पर उससे बात करने के दौरान मधुर भाषा का प्रयोग करते है। जबकि संबंध में खरास हो तो करकशता का। 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने सजीव रूप में ऐसे प्रसंगों का चित्रण किया हैं।'चाक' उपन्यास में रेशम के पति की मृत्यु के बाद सास दूसरी शादी करने को कहती है। परंतु रेशम उसका विरोध करके कहती है, " '**अम्माँ, तुम बूढ़ी होकर ऐसी बातें करती हो? पिता समान जेठ का हाथ पकड़ लूँ? फिर जो बच्चे का बाप है ही नहीं; उसको बाप का दर्जा क्यों दूँ? ऐसा ही करना होता तो तुम्हारे बड़े पूत का ही बालक करती। तुम मुझे तरह-तरह से घेरकर अपने बेटे की मौत का बदला मत लो; कहती हुई रेशम उठकर दालान में आ गई।**"[79]

पति के मृत्यु के बाद रेशम गर्भवती होने के बावजूद सास रेशम को दुबारा शादी करने के लिए मनाने की कोशिश करती है। परंतु रेशम नहीं मानती है। **"रेशम ने सास का गोड़ पकड़ लिया, 'हो जाने दो स्वाहा। मैं तो भसम होने को ही बैठी हूँ, पर मेरा बालक जी-जाग जाएगा। मैं जो पुन्न कर रही हूँ अम्माँ, उसे पाप न कहो। बिना बाप के बालक को भगवान पाप मानता तो कुंआरी- विधवा की कोख सूखा डालता।'"**[80]

(ख)शैली : शैली अंग्रेजी का स्टाइल (style) अनुवाद है। जब कोई साहित्यकार अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए अपनी भाषा को एक अलग □ से प्रयोग करता है, जिससे शैली का उदय होता है। "शैली-विज्ञान भाषा विज्ञान और आलोचना- शास्त्र की पृथक-पृथक उपलब्धियों का समवाय विज्ञान है। वैसे इसे भाषा विज्ञान के अंतर्गत परिणित किया गया है। इसका कारण यह है कि भाषा- विज्ञान की भाँति शैली- विज्ञान में भी एक विशेष दृष्टि से किया गया भाषा का अध्ययन ही होता है।"[81] साहित्य में भाषा का प्रयोग शैली के अंतर्गत किया जाता है।भाषा शैली के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की शैली 'चाक' उपन्यास में उपलब्ध है। जैसे-

पत्र शैली- पत्र एक आदान-प्रदान का साधन है जिससे हम दूसरे व्यक्ति का सुख- दु:ख, दर्द-पीड़ा तथा हृदय की बात जान सकते है। पत्र के द्वारा जो बात आमने-सामने न कह सकते हैं, वह जाना जा सकता है और उसी की सहायता से कई बार दो लोगों के बीच में प्रेम भी उत्पन्न होता है। 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बड़ी सार्थक पत्र शैली का चित्रण किया हैं। उपन्यास की सारंग मास्टर श्रीधर को मन ही मन चाहती है। एक दिन सारंग के हाथ में एक चिट्ठी आता है जो श्रीधर के लिए गुलकंदी ने लिखी थी। पत्र इस प्रकार है- "**प्यारे मास्टर जी, तुम्हें देखने को आँखे तरस गई। एक-एक दिन पहाड़...तुम्हारे संग हमारी जान गई होती तो...अब इस देह का क्या होगा? सुसार आए। पंचायत हुई।विदा नहीं हुई, फजीयत हुई।मेरा मालिक आया था, गाँव बाहर तक मुझे खिंचेड़ा। तमाशा हुआ। सबने देखा। कुछ ऐसा न होता। मेरे हाथ कुछ कंकड़- पत्थर आ गए, मैंने अपने मालिक में दे मारे। उसकी नाक से खून बह निकला। उस पत्थर ने मुझे आजाद कर दिया। मानस- मर औरत की विदा! नहीं, हरगिज नहीं।**

पिता एक गाय और एक बकरी के संग मुझे उसी मालिक को फिर थरप आए। दक्षिणा के साथ मैं अपना ली। मालिक नहीं था, सुसर था। आगे क्या कहूँ? मैं अपने गाँव के लड़के हरिपद के संग भाग आई। मास्टरजी, तुम मेरे मन में जहर का पौधा रोप गया हो। अब वह फलने – फूलने लगा तो मैं अच्छी किसे लगूँगी? मुझे अच्छा कौन लगेगा? कैसी अजब बात है मास्टरजी, जिसे मैं अच्छी नहीं लगती, बार- बार उसी की शरण में पटकी जाती हूँ। और जिसे मैं भाति थी, वह मुझे ले जा नहीं पाया!- तुम्हारी केका; बकलम हरिपद पाठक ।"[82]

सारंग चिट्ठी पढ़ने के बाद क्रोधित होकर चिट्ठी को मुट्ठी में भींच लेती है। सारंग श्रीधर को दगाबाज तथा बैरी कहती है। परंतु इस संदर्भ में सारंग का क्रोध नगण्य है ।

संवाद शैली – संवाद शैली ज्यादातर नाटकों में प्रयोग होता है। नाटकों में पात्रों का एक साथ रंगमंच पर आना असंभव है। इसलिए पात्र के संवादों के माध्याम से कथावस्तु को रखा जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ने संवाद शैली का उपयोग इस प्रकार 'चाक' उपन्यास में किया है।

सारंग और रेशम आपस में वर्तालाप करते है-

'सारंग बीबी, तैयार करने दे सूली, मैं हौसला नहीं हरूँगी, हाँ। 'वह आँखे फाड़े देखती रह गई- रे-श-म! 'रेशम, तू यहाँ चली आ बहन! मुझे दर लगता है। तुझे सूली चढ़ा देंगे तो मैं इस गाँव में कैसे जीऊँगी? बुआ- फूफा को कैसे मुँह दिखाऊँगी? मेरे रहते तेरे प्राणों के लाले...मेरे घर आ जा तू। मुझे सबर तो रहेगा।' सारंग की बात पर वह लापरवाहों की तरह हँस पड़ी। 'बीबी sss... तू भी! बड़ी पोच (कमजोर) है री! मैं तो समझती थी, तू पढ़ी-लिखी है, मेरी हिम्मत बढ़ाएगी, पर देख रही हूँ कि पीछे को खींच रही है मुझे! है sss!'"[83] इस प्रसंग में रेशम की साहसी तथा हिम्मतों का वर्णन आया है।

विश्लेषणात्मक शैली – विचार के अभाव में रचना शुद्ध मनोरंजन प्रधान बन जाएगी। एक प्रबुद्ध का उद्देश्य पाठक तक अपने विचार पहुँचाना भी होता है। विश्लेषणात्मक शैली में यथार्थपरक, मनोवैज्ञानिक तथा आदर्शवादी पद्धति का विश्लेषण होता है तथा उपन्यासकार मनुष्य के बाह्य जीवन की अपेक्षा अंतरग का विश्लेषण करता है। 'चाक' उपन्यास के पात्रों का आत्मविश्लेषण करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे-

"गाँव की सहज सरल दिनचर्या में अचानक धमाका हुआ, धरती हिल उठी। रात-दिन काँप गए। हाय-हाय, त्राहि-त्राहि के भयानक दर्दभरे कोलाहाल में डूब गई गँवाई धरती ...लेकिन कुछ घड़ियों के उफान के बाद ठंडी शांति की फरेबी परतें...धीरे-धीरे

उतारने लगी! सारंग का कलेजा फटकर चिथडों- चिथडों में बिखरने लगा।...इस गाँव के इतिहास में दर्ज दास्तानें बोलती हैं- रस्सी के फंदे पर झूलती रुक्मणी, कुएँ में कूदनेवाली रामदेई, कार्बन नदी में समाधिस्थ नारायणी... ये बेबस औरतें सीता मइया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर अपने शील-सतीत्व की खातिर क़ुरबान हो गई। ये ही नहीं, और न जाने कितनी..."[84] उपन्यासकार ने नारी को केंद्र में रखकर उसमें किया गया बिभिन्न प्रकार के अत्याचारों का वर्णन किया है। उपन्यास का आरंभ भी अतरपुर गाँव की औरतों के शोषणों तथा अत्याचारों से शुरू है।

उपन्यास के रेशम, पति की मृत्वु के बाद विधवा हो जाती है। वह किसी दूसरे मर्द के साथ संबंध रखकर गर्भवती हो जाती है। सास रेशम के ऊपर बिभिन्न प्रकार का आरोप लगाती है। परंतु रेशम सास की बातों को टालकर उसका विरोध करती है। "**सास छोटे बच्चे की तरह रें-रें करती हुई उसके पीछे-पीछे चली आई।यकायक झुँझला पड़ी रेशम, 'माइयो! तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो!... मेरे मारे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होतीं कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गई। पर मेरा फजीता करने पर तुली हो ।'"**[85] स्त्री होकर भी रेशम ने अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायी जिसके कारण रेशम का पूरा परिवार उसके विरोध में खड़ा हो गया।

काव्यात्मक शैली: काव्यात्मक या बिम्बात्मक शैली में किसी का रूप वर्णन या रोमांटिक दृश्य को शब्दचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। साहित्यकार शब्दों के प्रयोग से ऐसा लगता है कि कोई काव्य रचना की जा रही है। 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बड़ी प्रमुखता से काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे-

'चाक' उपन्यास में रेशम की मृत्यु के बाद, सारंग अपने आप को अकेला महसूस करती थी। उसे रेशम की हमेशा याद आती थी। उसके बिना गाँव में मन नहीं लगता तब

सारंग खेरापतिन दादी की गायी हुई गीत कथाओं को याद करने लगती है। सारंग कहती है, "- **खेरापतिन दादी,आज तुम्हारी गायी हुई गीत-कड़ियों की स्वरतरंग भयानक बवंडर की तरह चपेट रही है मुझे... धरती- आसमान हिल रहे हैं,रुख- पेड़ थर्रा रहे हैं।...आसाढ़ की उमसभरी काली रात! निस्तब्धता तोड़ता हुआ मोर फड़फड़ाता है चौक में खड़े पीपल पर।मोरनी पंथ फटफटाती हुई कोंकियाती है-करुण रोदन!सारंग बुरी तरह चौंकी।सिकुड़कर आधी हो गई। यह मोर नहीं,रेशम कि दर्दनाक पुकार-ओ बीबी sss…बीबी sss! सारंग विकल मन सोच की रस्सियों से बँधी हुई...**

-मैं छटपटा- छटपटाकर खत्म हो जाऊँगी रेशम!...मुझे अपनी तरह मजबूत समझ रही है! ना री, मैं निरी कमजोर औरत...जी पा रही,न मर ही सकी ।"[86] सारंग अपने बेटे चंदन को अक्सर याद करती है। वह उसके लिए पत्र लिखना चाहती है। वह रंजीत से कहती है चंदन को वापस बुलाने के लिए। उसके बिना सारंग को घर सूना-सूना लगता है। इस प्रसंग में माँ की गहरी ममताओं का वर्णन मैत्रेयी पुष्पा ने किया है । जैसे-

"अचानक उठी सारंग। सारंग। जैसे धूल झाड़कर उठ खड़ी हुई हो।

मैं किसी के गिराए नहीं गिरूँगी।मेरा अपना है- मेरा चंदन। मेरा बेटा। उसको बुलाना होगा।...नई अनुभूति ने घेर लिया उसे...चंदन,तू छिन गया,तेरी माँ लूट गई।तू चला गया,मैं सुनी-वीरान हो गई।तू पराये आँगन का बिरवा,मैं बाँझ धरती!...तू आ जा बेटा।लौट आ।...कोठे में कलाम-दवात लेकर बैठी है सारंग।कागज पर कलाम चलाती जा रही है, जैसे माँ-बेटे के रिश्ते का शिलालेख लिख रही हो।आँसू ममता, लाड़, दुलार और विश्वास के अक्षर काढ़ती चली गई-निर्भय और दुस्साहसी इंसान की तरह...।"[87]

मनोविश्लेषणात्मक शैली: इस शैली में उपन्यासकर कथानक का सूत्र असंबद्धता, प्रतीकात्मकता तथा सांकेतिकता का सहारा लेकर पात्रों की विविध मन:स्थितियों को दर्शाता है। 'चाक' उपन्यास में मनोविश्लेषणात्मक शैली का उपयोग हुआ है। जैसे-

सारंग एवं रंजीत की आपसी कलह के कारण उनका बेटा चंदन को कष्ट उठाना पड़ता है।सारंग को रह-रहकर इस अपराध का एहसास होता है कि वह इसके लिए जिम्मेदार है। पिता के डर से बेटा घर छोड़ने पर मजबूर होता है और सारंग सिवाय देखने के कुछ नहीं कर सकती। इस संदर्भ में यह व्यक्यांश सार्थक लगता है-

"चंदन ने डर के मारे कमीज पहन ली।पैंट चढ़ा रहा है और कमजोर सी टाँगें काँप रही हैं! जूतों की ओर बढ़ चला मेरा बेटा...फीते कस रहा है झुककर।...'सुनो, आज ही जाना...'सारंग की आवाज टूटने लगी।'हम भेज रहे हैं आज ही, 'बादल सा कड़का आँगन में। 'लड़का पराये चूल्हे झाँके,माँ आवारागर्दी करे! मुझे मंजूर नहीं।'...जवाब में मौन है वह। चंदन की आड़ में ये शब्द केवल उसके लिए हैं।वह पर्चा भरकर आई है,इसलिए यह मातम का माहौल पैदा किया गया है।जिस तरह कुंवरपाल इगलास से ही बताशे बाँटता आया है, रंजीत खड़े हुए होते तो बाँटते, मेल-मिलाप का सिलसिला चल रहा होता।एकता के नारे आरंभ हो गये होते।"[88]

आत्मकथात्मक शैली: आत्मकथात्मक शैली में लेखक पाठक को अपने विश्वास में लेकर मन की पर्ते खोलता है। आत्मकथा में मानव अपने जीवन की अभिव्यक्ति करता है। अतः वह जैसा है, वैसे ही कहेगा। आत्मकथात्मक शैली का वर्णन 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने किया है।

श्रीधर मास्टर साहब को जब गाँव के कुछ लोगों ने पीट दिया था सारंग ने उनकी बहुत मदद की थी। उनका तालू न चटके इसलिए सारंग अपनी छति से दूध की बुँदे उनके

हलक में डालती हैं। चाची के समान व्यभिचार का वर्णन न कर यहाँ नायिका का सम्मान रखने हेतु आत्मकथात्मक शैली द्वारा घटित-घटनाओं का यूँ वर्णन है-

"...मैंने लाज मानी न व्यभिचार! श्रीधर को आनंद सरोवर में खींच लिया। कोठे में रस बरस रहा था। छट पर फागुन से जैसे फूलों की डोली उतरी हो।...मैं क्या करती चाची? श्रीधर को देने के लिए मेरे पास था ही क्या? अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं...हरी-भरी देह-जो एक दिन सूख जाएगी,मुरझा जाएगी। पतझर और सूखा की रखवाली कौन करता है?...'अम्माँ! ओ अम्माँ !' चंदन पुकार रहा है।

'तुम सो रही हो बैठी-बैठी! चाचा आ गए। बाबा लिवा लाए चाचा को।' उसने यकायक ऊपर सिर उठाया। शायद झपकी लग गई थी। ज्यादा रोने से आँखे थककर अलसाने लगती हैं। सपना देखने लगी वह?"[89]

फ्लैश बैक शैली: पात्र के जीवन की बीते हुए कल की मानसिकता को दर्शाने के लिए यह शैली का प्रयोग करते है। विभिन्न उपन्यासकारों की तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में फ्लैश बैक शैली का प्रयोग किया है ।

'चाक' उपन्यास की सारंग अपने बचपन को याद करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने उसका अंकन फ्लैश बैक शैली द्वारा प्रकाश किया है। जैसे-

"आज बेइंतहा बचपन याद आ रहा है। सात बरस की दुबली- पतली सारंग।टुकरी (मोती खादी) का फ्रॉक पहने हुए, पीठ पर मोटे बालों की मुट्ठे सी चोटी लटकाकर,पाँवो में नीली बद्धियोंवाली हवाई चप्पलों से फटर-फटर चलती हुई एक बरसाती सुबह को पिता के पीछे-पीछे भागती सी चली जा रही थी।...साथ की सखी-सहेलियों ने टोका, 'ओ सारंग,तू कहाँ जा रही है री?'

'कन्या गोकुल; उसने ऊँची आवाज में कहा,पिता ने पीछे मुड़कर देखा तो वह हँसने लगी। साथियों की आवाज उसे पिछियाती रही- कहाँ sss! कहाँ sss। और वह उन्हें बुद्धू समझकर हँस पड़ी। माँ की डांट- फटकार और दुत्कार से बचे रहना बड़ा सुखद लग रहा था।"[90]

वर्णनात्मक शैली- वर्णनात्मक शैली को कथा साहित्य की सबसे प्रमुख शैली कह सकते हैं। इसमें वर्णन की सूत्रबद्धता में स्थानिक, कालिक, भावनात्मक, विचारात्मक या सांकेतिकता का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। किसी भी वर्णन को दोहराकर प्रभाव को अधिक तीव्र करना वर्णनात्मक शैली की विशेषता है। इस शैली में लंबे-लंबे संवाद भी रख सकते हैं।

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने वर्णनात्मक शैली का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसे- रेशम के पति की मृत्वु के बाद, रेशम जो विधवा थी, वह दूसरे मर्द के साथ संबंध रखकर वह गर्भवती हो जाती हैरेशम सारंग से कहती है कि गाँव के लोग उसके बारे में विभिन्न प्रकार के गलत-गलत कल्पनाये करते है और गाँव वाले कभी उसे देवी कहते है तो कभी राच्छसी साबित करते है-

"रेशम सारंग को सुनाती, 'बीबी, वे लोग कभी मुझे देबी बनाते हैं तो कभी राच्छसी। देबी तो पत्थर की होती है, मैंने कह दिया। उसका ठौर मंदिर में होता है और राच्छसी लोगों का सत्यानाश करती है। मैं दोनों की तरह की नहीं।...सारंग बीबी, बिरादरी भी अजब चीज है! मेरे बच्चे की हत्या करवाकर ही इन्हें अपने में शामिल रखेगी! हद है कि नहीं? हत्यारों को माफी है, जनम देनेवाली औरत को नहीं? मैंने कह जीटीओ दिया है, पंचायत जोड़ लो। मैं कह दूँगी, मुझे छेक दो। बच्चा मेरे पेट से पैदा होगा, घरवाले इसमें शामिल ही कहाँ हैं?'"[91]

मुहावरे/लोकोक्तियाँ: व्यंग्यार्थ मुहावरे की विशेषता है- वह भाषा को सौन्दर्य प्रदान करता है। इसमें अनुभव छिपा होता है। जिससे भाषा में सरलता, रोचकता तथा चमत्कारिकता पैदा होती है।

लोकोक्तियाँ लोकमानस की चिंता प्रक्रिया से प्राप्त अनुभव होता हैं। लोकोक्ति को लोक सुभाषित,कहावत भी कहा जाता है। लोकोक्तियाँ किसी भी भाषा की परंपरागत धरोहर होती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में लोकोक्तियाँ तथा मुहावरों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया हैं। जैसे-

"...यह हिम्मत! जिसके जीवन की डोर कुँवरजी के हाथों थमी है, वह '**पराये खेत में मुँह मारने**' की जुर्रत करे! खिंचवा लेंगे नाका डालकर।"[92]

प्रस्तुत मुहावरे-पराये खेत में मुँह मारना अर्थात दूसरों की संपत्ति पर लालच नहीं होना चाहिए।

"रंजीत ने उसका ध्यान तोड़ा–'तुम्हारे फूफा- बुआ तो रो रहे हैं। आगे क्यों नहीं बढ़ते? वही बात कि **मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त**।रोना तो अपनी लाचारी कबूल करना हुआ। हौसला तो पहले उन्हें ही दिखाना होगा।"[93]

अर्थात किसी भी कार्य को करनेवाला ही आलस करेगा तो कार्य अधूरा रह जाएगा।

"' माँ–बहन' शब्द ने सीधा चचिया सास पर प्रहार किया,...। एक दिन रेशम को सुना-सुनाकर बोली, '**रंडी-बेसाओं का कोठा** बन गया है हमारा घर-आँगन। लुगाई **हराम का हमल टाँगकर साबितरी बनी फिर रही** है।...नहीं तो खोले कि किसके संग...हम तो जानते हैं भड़ुआ रंजीत का करा करम है।'"[94]

मैत्रेयी पुष्पा यह बताना चाहती है कि समाज में पुरुष स्त्री को केवल भोग्या ही समझते है।स्त्री का शोषण कुछ हद तक स्त्री भी करती है।

"हजार-पाँच सौ गरीब लड़कियों के ब्याह में लगाते हैं,दूसरी ओर डोरिया जैसे खूनी को...सेठ का रुपया न लगा होता तो गवाहों की **हथेलियाँ पसीजतीं**?"[95]

उक्त प्रसंग का तात्पर्य है की किसी भी कार्य को सही ढ से न करने पर आगे चलकर परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

"आज मैं ही किसी ओहदे पर बैठा होता तो **कुत्ते की तरह** मेरी **टाँगें सूँघता फिरता।**"[96]

कामयाबी वह शक्ति हैं जिसका लोग आदर और सम्मान करते हैं।

"वे क्यों मुँह में लत्ता ठूँसे बैठे हैं? **पराये फटे में पाँव !**' कहकर सारंग को क्षण भर देखा...किसी ने कहा –वही कहावत सच हो रही है कि **आ बैल मुझे मार।**"[97]

उक्त पंक्तियों से मैत्रेयी पुष्पा यह बताना चाहती है कि दूसरों के कार्यों में सहायता तो करनी चाहिए मगर अपने आप को जानबूझ कर आफत में नहीं डालना चाहिए।

"तुम तो "**साँच को आँच नहीं**" का नारा लगा रहे हो और अगला किसी भी मक्कारी से गुरेज नहीं मान रहा।"[98]

सच्चे इंसान को कभी भी परेशानी नहीं होती परन्तु सामने वाला अगर बेवकूफ हो तो सही इंसान को कुछ हद तक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

"जब तुम्हें सबकुछ मालूम है तो मुझसे क्या उस पर **मोहर ठुकवाने आई** हो सेठानी।"[99]

किसी भी बात को पुष्ट करने के लिए राय विमर्श करना।

"सारंग मन ही मन पछताई, मैं दहशत की मारी पागल हो गई हूँ। **रस्सी का साँप बनाने** लगी हूँ।"[100]

बहुत सारे लोग किसी भी बात को लेकर ज्यादा घुमाते रहते है।

"साधजी मुझे समझाना चाहता है कि **शेरों के मुकाबले अब गीदड़ इतने खतरनाक हो गए** हैं कि उनकी वजह से तुम बेघर हो जाओगे।"[101]

हमारे समाज में ईमानदार भी प्रतिष्ठित व्यक्तियों की अपेक्षा दोहरी मानसिकता वाले ज्यादा हो गये है। जो लोगों को गीदड़ भभकी देते रहते है।

"कौल धरा है, शपथ ली है कि डोरिया मैं तुझे **छठी का दूध याद करा दूँगी**, चाहे मुझे इसके लिए कुछ भी करना पड़े।"[102]

अपने बात को मनवाने के लिए किसी भी हद तक कदम उठाना या अपने जीद पर अडिग रहना, जिससे सामने वाले को परेशानी होती है।

"सारंग का **दिल बाग-बाग** है।...लेकिन इस खुशी से जुड़ी आशंका भी काँटे की तरह रह-रहकर कोंचने लगी-साधजी के पूत बल्लम-लठियाँ लेकर केलासीसिंह को मारने की योजना बनाएँगे।"[103]

किसी कारण वश खुश और दु:ख की दुविधा में रहने के चलते व्यक्ति के मन में कई तरह बाते चलती रहती है।

"**साँप के मुँह में हाथ दे दूँ** कि देखो मैं कितना बहादुर हूँ।"[104]

अफवाहों के चक्कर में अपने-आप को बर्बाद नहीं करना चाहिए। यह मूर्खता की पहचान हैं।

"तड़ाक से बोलों, **'लेउ सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोली, जिसमें बहत्तर छेद**। तू ही बता दे, तेरी सत्तो रही है बरती?"[105]

अनुभवी व्यक्ति अगर किसी की मूर्खता पर हंसें या उसे किसी तरह की सलाह दें तो वह कुछ हद तक सही है मगर मूर्ख ही सलाह देना शुरू करे तो यह ठीक नहीं।

निष्कर्ष :

मैत्रेयी पुष्पा के अधिकांश उपन्यास में ग्रामीण परिवेश आया है।'चाक' उपन्यास में बुंदेलखन तथा ब्रज के अंचल की ग्रामीण हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है। उपन्यास की भाषा सहज, सरल तथा रोचक है। 'चाक' उपन्यास का परिवेश ग्रामीण होने के कारण उसमें लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मैत्रेयी पुष्पा ने किया है।

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने देशी तथा विदेशी शब्दों का भी प्रयोग किया है। उपन्यास में अंग्रेजी शब्द बुंदेलखंडी शब्द, संस्कृत शब्द, मराठी शब्द तथा उर्दू शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है। साथ ही उन्होंने देशकाल तथा संस्कृति के अनुसार काव्यात्मक भाषा, चित्रात्मक भाषा तथा प्रसंगानुकूल भाषा का भी प्रयोग किया है।

विविध उपन्यासकारों की तरह मैत्रेयी पुष्पा ने भी 'चाक' उपन्यास में विभिन्न प्रकार के भाषा शैलियों का वर्णन किया है। जिसमें मुख्यतः वर्णनात्मक शैली, पत्र शैली, संवाद शैली, विश्लेषणात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, मनोविश्लेषनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली तथा फ्लैश बैक शैली का प्रयोग किया है।

संदर्भ

1. डॉ. अंबादास देशमुख: भाषा विज्ञान के आधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा, पृ- 33
2. प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह: बुंदेलखंड संस्कृति एवं साहित्य, पृ- 346
3. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-17
4. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 43
5. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 43
6. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 105
7. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 117
8. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 120
9. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 163
10. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 185
11. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 186
12. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 192
13. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 194
14. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 307
15. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 370
16. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 371
17. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 372
18. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 375
19. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ- 433
20. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-10
21. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-24

22. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-89

23. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-91

24. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-92

25. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-344

26. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-371

27. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-433

28. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-16

29. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-27

30. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-29

31. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-32

32. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-38

33. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-46

34. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-76

35. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-88

36. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-127

37. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-170

38. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-245

39. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-375

40. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-7

41. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-8

42. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-9

43. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-10

44. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-12-13

45. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-38

46. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-55

47. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-111

48. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-154

49. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-166

50. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-375

51. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-382

52. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-14

53. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-15

54. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-27

55. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-29

56. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-46

57. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-58

58. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-78

59. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-86

60. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-103

61. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-113

62. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-114

63. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-115

64. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-137

65. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-146

66. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-231

67. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-237

68. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-243

69. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-253

70. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-286

71. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-335

72. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-363

73. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-365

74. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-378

75. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-382

76. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-397

77. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-11

78. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-103

79. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-19

80. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-19-20

81. डॉ.बालराम शर्मा: अज्ञेय के गद्य-साहित्य का शैलीविज्ञानिक अध्ययन, पृ-25

82. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-258

83. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-21-22

84. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-7

85. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-19

86. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-8

87. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-157

88. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-411

89. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-329

90. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-63-64

91. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-21

92. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-12

93. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-16

94. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-24

95. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-34

96. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-38

97. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-39

98. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-40

99. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-68

100. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-71

101. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-79

102. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-95

103. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-110

104. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-127

105. मैत्रेयी पुष्पा: चाक, पृ-187

उपसंहार :

मैत्रेयी पुष्पा के अधिकांश साहित्य ग्रामीण परिवेश से जुड़ा हुआ है, जिसमें समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं का चित्रण है। उनके अधिकांश कहानी और उपन्यासों में नारी को केंद्र में रखकर उस पर पुरुष द्वारा किया गया विभिन्न प्रकार के अत्याचारों और शोषणों का वर्णन हुआ है। उन्होंने मध्य वर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्वों को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसमें नयी दिशा भी दी है, जो समाज में अप्रिय हैं। समाज उसे न तो स्थान देता हैं और न ही सम्मान।

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री मुक्ति के स्वर, सामाजिक विषमता तथा राजनीतिक एवं धार्मिक विषमताओं का चित्रण किया हैं। समाज में पुरुष व्यवस्था द्वारा बनाया गया नियमों का पालन करना स्त्री के लिए अनिवार्य है। मैत्रेयी पुष्पा ने अनेक प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विषमताओं का चित्रण अपने उपन्यास 'चाक' में किया है, जिसमें गाँव के लोग समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के रूढ़ियों का पालन करते है। बेरोजगारी ग्रामीण समाज के लिए सबसे बड़ी प्रमुख समस्या है। अशिक्षित होने के कारण गाँव के लोग अंधविश्वास का पालन बड़ी सिद्दत से करते है। गावों में जातीय राजनीति की जा रही है। उपन्यास में चुनाव का वर्णन भी आया है, जिसमें जाति के आधार पर वोटों की बात की जाती है। समाज में राजनीतिक समस्यों के कारण भ्रष्टाचार का बोलबाला है, जिसका चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में प्रचुर मात्रा में किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीतिक एवं धार्मिक विषमताओं पर प्रकाश डालते हुए यह वर्णन भी किया है कि, गावों में धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता की आग फैलने लगती है। अशिक्षा तथा अज्ञानता के कारण लोग रीति रिवाज एवं रूढ़िगत परंपराओं का भी पालन बड़ी विश्वास के साथ करते हैं।

'चाक' उपन्यास का परिवेश ग्रामीण होने के कारण इसमें मैत्रेयी पुष्पा ने क्षेत्रीय भाषा एवं शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। आवश्यकता के अनुसार उपन्यास में अंग्रेजी, मराठी, संस्कृत एवं उर्दू शब्दों तथा बुंदेलखंडी शब्दों का प्रयोग भी किया है। ग्रामीण परिवेश होने के कारण उसमें मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ का वर्णन भी मिलता है। शैली एक प्रकार की साहित्य समीक्षा होने के कारण मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में शैलीगत विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है, जिसमें मुख्यतः वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्र शैली, काव्यात्मक शैली, फ्लैश बैक शैली तथा मनोविश्लेषणात्मक शैलियों का प्रयोग किया है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास की भाषा सहज, सरल,स्पष्ट तथा रोचक है।

ग्रंथानुक्रमणिका

आधार ग्रंथ :

मैत्रेयी पुष्पा, चाक,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

सहायक ग्रंथ:

अनामिका, मन मांझने की जरूरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

अभय कुमार दुबे, राजनीति की किताब: रजनी कोठारी का कृतित्व, वाणी प्रकाशन, सी एस डी एस, नई दिल्ली,2003

आशारानी व्होरा, औरत कल, आज और कल,कल्याणीशिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2011

एम.कुमार; दीप्ति शर्मा, भारतीय राजनीतिक विचारक विश्वकोश, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990

कमल नयन चौबे, जतियों का राजनीतिकरण, बिहार में पिछड़ी जतियों के उभार की दास्तान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-1102

टॉम वॉटोमोर, लारेंस हैरिस, वी. जी. किरनन और रॉल्फ मिलिबैंड, ए डिक्शनरी ऑफ मार्क्सिस्ट थॉट (भारतीय संस्करण), माया ब्लैकवेल, दिल्ली,2000

डॉ. अंबादास देशमुख, भाषा विज्ञान के आधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2007

डॉ.अनसूया अग्रवाल, हिन्दी लोकसाहित्यशस्त्र सिद्धान और विसार, नीरज बूक सेन्टर, दिल्ली, 2009

डॉ.अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2009

डॉ.कंचन गोयल, मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, आंगन प्रकाशन, दिल्ली, 2013

डॉ.जोगेन्द्र सिंह बिसेन, मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का कथ्य और शिल्प,दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स।,कानपुर,2015

डॉ.दया दीक्षित, मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2013

डॉ.नगेन्द्र, मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य- खंड) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं-1935

डॉ.नगेन्द्र, हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1991

डॉ.बालकराम शर्मा, अज्ञेय के गद्य-साहित्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र) प्र.सं 2003

डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील, मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर 2011

डॉ.सुलोचना न. अंतरेड्डी, मैत्रेयी पुष्पा और शांता गोखले की नरी दृष्टि, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2012

देवेन्द्र सत्यर्थी, बेला फूले आधी रात, प्रस्तावना, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं, 1948

मनीषा, हम सभ्य औरतें, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

मृदुला सिन्हा, मात्र देह नहीं है औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुण्डल बसै, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

मैत्रेयी पुष्पा, ललमनियाँ: तुम किसकी हो बिन्नी?, राजकमल प्रकाशन, 2002

मैत्रेयी मैत्रेयी पुष्पा,अपनी बात: खुली खिड़कियाँ (स्त्री विमर्श), सामयिक प्रकाशन दिल्ली, 2009

रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन: स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

लता शर्मा, औरत अपने लिए, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

शान्ति जैन, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविध्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1999

श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रंथावली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010

सुभाष सेतिया, स्त्री अस्मिता के प्रश्न, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली,2009

अंग्रेजी की पुस्तकें :

Dr.Kunj Bihari Das:A study of Orission Folklore, Shanti Niketan, 1953

G.A Grierson: Bihar Peasant Life, Patna, 1926

W.Crook: Natives Of Northern India, London, 1907

कोश:

धीरेन्द्र वर्मा,हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1,2),ज्ञान मंडल प्रकाशन,वाराणसी,2000

मुकुंदीलाल श्री वास्तव, ज्ञान शब्दकोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी,1986

रामचंद्र वर्मा,मानक हिन्दी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग,1978

वामनशिवराजआप्टे,संस्कृत-हिन्दीकोश,मोतीलालबनारसीदासपब्लिशर्स,दिल्ली,1989

पत्र-पत्रिकाए:

बुन्देलखण्ड संस्कृति एवं साहित्य, योगेन्द्र प्रताप सिंह, जनवरी-दिसम्बर, 2014

मड़ई, (सं) कालीचरण यादव; अंक-1,2013

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, अक्टूबर 2014-मार्च 2015

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, जुलाई-सितंबर, 2014

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; जनवरी-फरवरी, 2000

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; नवंबर,2005

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	:	सी.ललनुनमोई
शिक्षा	:	एम.ए
विभाग	:	हिन्दी
शोध प्रबंध का शीर्षक	:	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रवेश शुक्ल भूकतान तिथि	:	18/7/2016
शोध-प्रस्ताव की संस्तुति	:	
(1) बी. ओ.एस. की तिथि	:	11/05/15
(2) स्कूल बोर्ड	:	21/05/2015
पंजीयन संख्या	:	MZU/M.Phil./ 260 of 21.05.2015

अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

MAITREYI PUSHPA KE UPANYAS 'CHAK' KA VISHLESHNATMAK ADHYAY

एम.फिल हेतु लघु शोध प्रबंध-सार

ABSTRACT

शोधनिर्देशक
डॉ.प्रीति राय
सहायक आचार्य

अनुसंधित्सु
सी.लालनुनमोई

हिन्दी विभाग
मिजोरम विश्वविद्यालय
आइजॉल-796004

2016

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध-सारांश:

साहित्य सदैव समाज से संपृक्त रहता है। उसकी सत्ता युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर विभिन्न रूपों में प्रतिभासित होती है। साहित्यकार का दायित्व अपने समय की स्थितियों एवं परिस्थितियों का अवलोकन करना और सामाजिक अपेक्षाओं पर सार्वभौमिक अवस्था का आकलन करना है। साहित्यकार युग-सापेक्ष स्वानुभूतियों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार अपनी विचार धारा को अभिव्यक्त करने के लिए विविध विधाओं को माध्यम बनाता है, जिसमें उपन्यास विधा सर्वाधिक प्रचलित है। जबसे इस विधा का प्रारंभ हुआ तब से लेकर आज तक यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधा के रूप में अपनी भूमिका निभाई है। प्रेमचंद युग से पूर्व उपन्यास रचना के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका लगभग ना के बराबर थी धीरे धीरे इस क्षेत्र में महिलाओं ने प्रवेश करना शुरू कर दिया। यों तो प्रेमचंद-युग में ही हिन्दी- कथा- रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था, किन्तु स्वतन्त्रता- प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्री शिक्षा के व्यापक प्रचार- प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारों की सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ। शिवानी, कृष्ण सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंबदा, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा आदि प्रमुख महिला उपन्याकारों ने समकालीन उपन्यास लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इन प्रमुख महिला उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में 30 नवम्बर 1944 ई. को हुआ। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म ग्रामीण परिवेश में हुआ था। उनके माता का नाम कस्तुरी तथा पिता का नाम हीरालाल था।

मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास,कहानी तथा आत्मकथा लिखी है। 'स्मृति दंश'(1990), 'बेतवा बहती रही'(1993), 'इदन्नमम' (1994), 'चाक' (1997), 'झूलानट' (1999), 'अल्मा कबुतरी' (2000), 'गुनाह-बेगुनाह' (2012) आदि उनके प्रमुख उपन्यास है। 'कस्तुरी कुंडली बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' उनकी दो आत्मकथाएँ हैं। मैत्रेयी पुष्पा की अब तक कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें 'चिन्हार' (1997), 'ललमनियाँ' (1996), 'गोमा हँसती हैं' (1998), 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' (2006) आदि उल्लेखनीय है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक समस्याओं को नवीन दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने मध्य वर्गीय परिवार में जुझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु नयी दिशा भी दी है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यासों में विवाह के साथ सामंतीय संस्कारों, आर्थिक, पारिवारिक संबंधों में नवीन वैचारिक दृष्टि को अपनाया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोक संस्कृति, संस्कार आदि का अंकन भी किया गया है। इस उपन्यास का कथा केंद्र अतरपुर गाँव जहाँ अनेक जनजातियाँ निवास करती है परन्तु वहाँ पर वर्चस्व जाटों का है। इस उपन्यास में जाट समाज में नैतिक संहिताओं और रूढ़ियों में जकड़ी पुरानी पीढ़ी के क्रूरता एवं नारी विमर्श को बहुत ही बारीकी से उठाया गया है। इस समाज में स्त्री की हत्या करना आम बात है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस क्रूर मनोवृत्ति एवं नियति रूपी नारी समाज का विरोध दिखाया है। उपन्यास की नायिका सारंग जो पढ़ी-लिखी एवं आधुनिक परिवेश में पली-बढ़ी है उन तमाम बुराइयों का मुक़ाबला करती हैं। पति से लेकर गाँव का सारा पुरुष समाज उसका विरोध करते है। सारंग नारी समाज की मान्यताओं को चुनौती देते हुए पर-पुरुष से देह संबंध भी स्थापित करती है। उसका मानना है कि सत्ता जब तक नारी के हाथों में नहीं आ जाती तब तक समाज का, मुख्य रूप से नारी समाज का, सुधार नहीं होगा। प्रस्तुत उपन्यास में पारंपरिक मूल्यों, विश्वासों, भ्रष्टाचार एवं लोक जागरण आदि का चित्रण किया गया है।

'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में विभिन्न बिन्दुओं को देखने की कोशिश की गई है और यह परीक्षण करने का प्रयास किया गया है कि इनका उपन्यास साहित्य समाज के किन-किन स्तरों को छूता है। अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय 'मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय एवं रचना संसार' है, जिसमें मैत्रेयी पुष्पा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। जीवन में जो किया उसे स्पष्ट शब्दों में बयान करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा विख्यात है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी आत्मकथा में जो सच्चाई प्रस्तुत की है उससे अनेक पाठकों के मन में उनके वैवाहिक जीवन पर प्रश्न उठता है। मैत्रेयी पुष्पा नारी को स्वतंत्र विचार रखने के लिए प्रेरित करती हैं एवं पुरुष की शोषण मूलक मानसिकता से मुक्त होने का उपदेश देती हैं। ग्रामीण एवं शहरी संस्कृति को एक साथ अपने साहित्य में उतारने वाली लेखिका है।

द्वितीय अध्ययन 'चाक: अनुभूति पक्ष' है। प्रस्तुत अध्याय को तीन उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय 'चाक में चित्रित स्त्री मुक्ति के स्वर' में स्त्री शोषण, शिक्षा, वैवाहिक संबंध, दहेज प्रथा, स्त्री-पुरुष संबंध एवं स्त्री-स्त्री संबंधों को दिखाने का प्रयास किया गया है। समाज की सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन आने पर कुछ पारंपरिक मूल्य टूट जाते है। मूल्यों से चिपके लोग इस परिवर्तन को रोकना चाहते हैं। परन्तु 'चाक' की सारंग रुकती नहीं है बल्कि वह नैतिक मान्यताओं को ठोकर मारकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती है। द्वितीय उप अध्याय 'चाक में चित्रित सामाजिक विषमता' में ग्रामीण जीवन, बेरोजगारी, जाति व्यवस्था, वर्ग संगर्ष, अंधविश्वास, त्यौहार एवं उत्सव तथा लोक कथाओं का अवलोकन करने का प्रयास किया गया है। शहर की संकीर्णताएँ गाँव में आने लगी है। मैत्रेयी पुष्पा इस स्थिति के लिए समाज को जिम्मेदार ठहराती है। संस्कृति में परिवर्तन आने लगा है। व्यवसाय में परिवर्तन आने लगा है। इस परिवर्तन के लिए वह साहित्यकारों से

अपेक्षा रखती है कि वे ऐसे साहित्य का निर्माण करे जिससे परिवर्तित परिस्थिति की जानकारी समाज को हो। तृतीय उप अध्याय 'चाक में चित्रित राजनीतिक एवं धार्मिक विषमता' है। इसमें जातिगत राजनीति, भ्रष्टाचार, पंचायत चुनाव, धार्मिक स्थिति, सांप्रदायिकता, रीति रिवाज एवं रूढ़िगत परंपराओं को परखने का प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा चलायी गयी ग्रामीण विकास योजनाएँ, महिला आरक्षण, पंचायत राज का खोखलापन आदि को प्रस्तुत किया गया है। नेता और अधिकारी मिलकर ग्रामीण जनता का शोषण करते है, राजनीति गाँव में भी अपना असर दिखाने लगी है। भ्रष्टाचार समाज में कितना उग्र रूप धारण कर चुका है, इसका स्पष्ट स्वरूप मैत्रेयी पुष्पा के यहाँ दिखाई पड़ता है। उनके उपन्यास 'चाक' में धार्मिक प्रवृत्ति के भी यथार्थ दर्शन होते है। मंदिर-मस्जिद के झगड़े का सबसे ज्यादा असर शहर में देखा गया है। धार्मिक आस्था के कारण समाज में अंधविश्वास पैदा होता है। ग्रामीण जीवन में आज भी अशिक्षा, अज्ञानता, स्त्री-पुरुष भेद-भाव, रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वास, शकुन-अपशकुन दिखाई देता है, जो आज के वैज्ञानिक युग में भी फैला हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा इस व्यवस्था का विरोध करती हैं जो उचित भी है। 'चाक' में जाट समाज में नैतिक संहिताओं की रूढ़ियों में जकड़ी पुरानी पीढ़ी के क्रूरता भरे हठ का, जिसके तहत नारी संहिता का उलंघन करने वाली स्त्री से जीने का अधिकार छीन लेना एक बहुत मामूली बात है, चित्रण किया गया है। इस समाज में किसी स्त्री की हत्या कर दिये जाने पर भी एक हल्की सी सुगबुगाहट के अतिरिक्त कोई विशेष हलचल नहीं होती; इसके प्रतिरोध में कोई खड़ा नहीं होता। इस क्रूर परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी नियति का जो चित्रा प्रस्तुत किया है, उसमें एक चौकाने वाली बात है। इस समाज में न केवल पिछड़ी जाति की स्त्री, वरन दलित समाज की स्त्री भी प्रेम करने के अधिकार से वंचित है। 'चाक' उपन्यास में प्रेम करने के कारण यदि रेशाम की हत्या की जाती है, तो गुलकंदी को भी जिंदा जला दी जाती है। कोई पुरुष इस अमानवीय कृत्य के विरोध में खड़ा होने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। इसके

विरोध में खड़ी होती है सारंग, जो बहुत पढ़ी-लिखी तो नहीं पर जिसमें संकल्प की गज़ब की दृढ़ता है और इसके संकल्प को और अधिक दृढ़ करने में भूमिका निभाता है श्रीधर प्रजापति। सारंग में अन्याय से लड़ने, आततायियों का मुक़ाबला करने, नारी अधिकारों के लिए जान दे देने तक की हिम्मत और दृढता है। इसके साथ ही उसमें गहरी संवेदनशीलता, विवेक और संगठन क्षमता भी है । सारंग, नारी – संहिता की समस्त सत्ता को चुनौती देने के लिए ग्राम पंचायत के चुनाव में प्रधान पद के लिए खड़ी भी हो जाती है । पति से लेकर गाँव का सारा पुरुष समाज उसका विरोध करता है, पर वह अपने खुद के निर्मित नारी संगठन के बल पर पुरुष सत्ता को चुनौती देने का साहस भरा कदम उठाती है। इससे यह विचार लेखिका प्रेषित करना चाहती है कि जब तक सत्ता स्त्री के हठ में नहीं आती, पुरुष समाज द्वारा उसका शोषण और उसपर होने वाला अत्याचार समाप्त नहीं हो सकता। लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से यह भी बताना चाहती है कि अगर पुरुष पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री से संबंध रख सकता है तो यह अधिकार स्त्री को भी है।

तृतीय अध्याय 'चाक: अभिव्यक्ति पक्ष' में भाषा एवं शैली का विवेचन किया गया है। आज हिन्दी संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति का अहसास कराती हुई प्रकट होती है मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में जीवन और उसके विविध पहलुओं के बीच तारतम्य स्थापित है। यही तारतम्यता मैत्रेयी पुष्पा की रचना शीलता में है। इनकी भाषा सरल, सहज तथा रोचक है। इन्होंने मुहावरे और लोकोक्तियों तथा गीतों का प्रयोग किया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में शिल्प पर जब बात होती है तो हमारे सामने बुंदेलखंडी एवं उसके सीमा वर्ती प्रदेश के अंचल आते हैं। 'चाक' उपन्यास में गालियों का प्रयोग भी हुआ है जो कि कहीं भी खटकता नहीं है। उनका मानना है कि शिल्प खोजकर फिर रचना नहीं की जाती बल्कि रचना का प्राण उसकी सहज अभिव्यक्ति में बसता है। पात्र, परिवेश, भाषा का संयोजन एक दूसरे के साथ होता है। मैत्रेयी

पुष्पा के शिल्प की एक और विशेषता है उनके लोक गीत। इन गीतों के माध्यम से उन्होंने नारी वेदना की तलाश की है। चंदना की कथा को उन्होंने इसी संदर्भ में प्रस्तुत किया है। इनके यहाँ प्रायः सभी शैलियों का प्रयोग किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखण्डी शब्द का प्रयोग और अंग्रेजी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। कथानक की माँग के अनुसार शब्दों का प्रयोग साहित्य लेखन की विशेषता है।

निष्कर्ष:

मैत्रेयी पुष्पा ने समकालीन महिला कथाकारों में अपनी सशक्त पहचान बनायी है। आज महिलाएँ अबला नहीं बल्कि सबला बनकर सामने आती है। चारों ओर स्त्रियों के विविध रूप देखने को मिलते है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में नयी सदी की दहलीज पर कहीं सन्नाटा है तो कहीं सोर भी। स्त्री को मुक्ति के साधन आत्मसजग एवं सचेष्ट रहकर मिलता है। मैत्रेयी पुष्पा नारी सशक्तीकरण के विविध रूपों को अपने उपन्यासों में निर्मित करती है। आजादी के बाद भारतीय समाज के सांस्कृतिक क्षेत्र में जो परिवर्तन हो रहे है, उनका असर भी मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में लक्षित होता है। मैत्रेयी पुष्पा सामाजिक घटनाओं को लेखनी का विषय बनाकर मानवीय संवेगों को संवेदनशीलता के उच्च शिखर पर स्थापित करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास का समग्रता में अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष निकल कर सामने आता है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि जब तक सत्ता स्त्री के हाथ में नहीं आ जाती तब तक स्त्री का शोषण चलता रहेंगा, अतः स्त्री स्वातंत्र्य के लिए जरूरी है कि सत्ता की बागडोर स्त्री के हाथ में हो तब जाकर स्त्री अपना जीवन अपने तरीके से जी सकेगी। मैत्रेयी के अनुसार स्त्री संबंधी सारी समस्याओं का कारण पितृसत्तात्मक समाज एवं सोच है जिस कारण से स्त्री शोषित होने के लिए अभिशप्त है।

ग्रंथानुक्रमणिका

आधार ग्रंथ :मैत्रेयी पुष्पा, चाक,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

सहायक ग्रंथ:

अनामिका, मन मांझने की जरूरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

अभय कुमार दुबे, राजनीति की किताब: रजनी कोठारी का कृतित्व, वाणी प्रकाशन, सी एस डी एस, नई दिल्ली,2003

आशारानी व्होरा, औरत कल, आज और कल,कल्याणीशिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2011

एम.कुमार; दीप्ति शर्मा, भारतीय राजनीतिक विचारक विश्वकोश, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990

कमल नयन चौबे, जतियों का राजनीतिकरण, बिहार में पिछड़ी जतियों के उभार की दास्तान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-1102

टॉम वॉटोमोर, लारेंस हैरिस, वी. जी. किरनन और रॉल्फ मिलिबैंड, ए डिक्शनरी ऑफ मार्क्सिस्ट थॉट (भारतीय संस्करण), माया ब्लैकवेल, दिल्ली,2000

डॉ. अंबादास देशमुख, भाषा विज्ञान के आधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2007

डॉ.अनसूया अग्रवाल, हिन्दी लोकसाहित्यशस्त्र सिद्धान और विसार, नीरज बूक सेन्टर, दिल्ली, 2009

डॉ.अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2009

डॉ.कंचन गोयल, मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तिकरण, आंगन प्रकाशन, दिल्ली, 2013

डॉ.जोगेन्द्र सिंह बिसेन, मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का कथ्य और शिल्प,दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स।,कानपुर,2015

डॉ.दया दीक्षित, मैत्रेयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2013

डॉ.नगेन्द्र, मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य- खंड) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं-1935

डॉ.नगेन्द्र, हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1991

डॉ.बालकराम शर्मा, अज्ञेय के गद्य-साहित्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र) प्र.सं 2003

डॉ.व्यंकट किशनराव पाटील, मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर 2011

डॉ.सुलोचना न. अंतरेड्डी, मैत्रेयी पुष्पा और शांता गोखले की नरी दृष्टि, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2012

देवेन्द्र सत्यर्थी, बेला फूले आधी रात, प्रस्तावना, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं, 1948

मनीषा, हम सभ्य औरतें, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

मृदुला सिन्हा, मात्र देह नहीं है औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुण्डल बसै, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

मैत्रेयी पुष्पा, ललमनियाँ: तुम किसकी हो बिन्नी?, राजकमल प्रकाशन, 2002

मैत्रेयी मैत्रेयी पुष्पा,अपनी बात: खुली खिड़कियाँ (स्त्री विमर्श), सामयिक प्रकाशन दिल्ली, 2009

रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन: स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

लता शर्मा, औरत अपने लिए, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

शान्ति जैन, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविध्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1999

श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रंथावली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010

सुभाष सेतिया, स्त्री अस्मिता के प्रश्न, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली,2009

अंग्रेजी की पुस्तकें :

Dr.Kunj Bihari Das:A study of Orission Folklore, Shanti Niketan, 1953

G.A Grierson: Bihar Peasant Life, Patna, 1926

W.Crook: Natives Of Northern India, London, 1907

कोश:

धीरेन्द्र वर्मा,हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1,2),ज्ञान मंडल प्रकाशन,वाराणसी,2000

मुकुंदीलाल श्री वास्तव, ज्ञान शब्दकोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी,1986

वामनशिवराजआप्टे,संस्कृत-हिन्दीकोश,मोतीलालबनारसीदासपब्लिशर्स,दिल्ली,1989

पत्र-पत्रिकाए:

बुन्देलखण्ड संस्कृति एवं साहित्य, योगेन्द्र प्रताप सिंह, जनवरी-दिसम्बर, 2014

मड़ई, (सं) कालीचरण यादव; अंक-1,2013

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, अक्टूबर 2014-मार्च 2015

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, जुलाई-सितंबर, 2014

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; जनवरी-फरवरी, 2000

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; नवंबर,2005

पत्र-पत्रिकाए:

बुन्देलखण्ड संस्कृति एवं साहित्य, योगेन्द्र प्रताप सिंह, जनवरी-दिसम्बर, 2014

मड़ई, (सं) कालीचरण यादव; अंक-1,2013

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, अक्टूबर 2014-मार्च 2015

समीक्षा, (सं) सत्यकाम, जुलाई-सितंबर, 2014

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; जनवरी-फरवरी, 2000

हंस,(सं) राजेन्द्र यादव; नवंबर,2005

2016

ललनुनमोई.सी

एम.फिल